

3 इन वन

दादी निर्मलशान्ता जी
के
अलौकिक
अनुभव



सम्पादन एवं प्रकाशन:

साहित्य विभाग,

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय

पाण्डव भवन, आबू पर्वत - 307 501

चतुर्थ संस्करण

जनवरी, 2005

प्रतियाँ : 10,000

मुद्रक:

ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस,

शान्तिवन, आबू रोड - 307 510

☎ - 228125, 228126

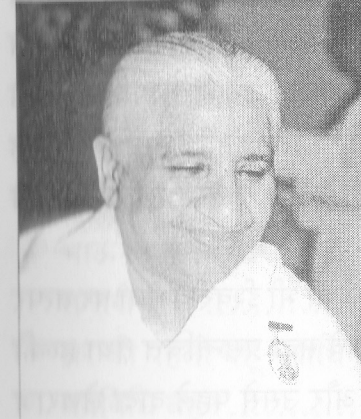
कापी राइट:

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय,

पाण्डव भवन, आबू पर्वत - 307 501

राजस्थान, भारत ।

दो शब्द



ज्ञानेश्वर, योगेश्वर भगवान शिव, साकार प्रजापिता ब्रह्मा के द्वारा नयी सतयुगी सृष्टि की स्थापना का कार्य जब प्रारम्भ करते हैं तो उस सर्वोच्च रूहानी शमा के आकर्षण में खिंच कर चले आने वाले और उन पर सम्पूर्ण फिदा होने वाले आदिरत्न कोटों में कोऊ और कोऊ में भी कोऊ हैं। उन्हीं देदिप्यमान नक्षत्रों में से हैं राजयोगिनी दादी निर्मलशान्ता जी जिन्हें तीन भाग्य एक-साथ प्राप्त हैं। वे दादा लेखराज जी की दैहिक पुत्री हैं और निराकार परमात्मा शिव के साकार माध्यम प्रजापिता ब्रह्मा के मुख कमल से रची गयी आदिरत्न हैं। साकार ब्रह्मा बाबा के आधार से ही उन्हें लौकिक, अलौकिक और पारलौकिक तीनों पिताओं का वर्सा एक-साथ प्राप्त है। विश्व-ड्रामा में इस अनूठे पार्ट के पदमापदम भाग्य से सुशोभित दादी जी की जीवन-कहानी सर्व ब्रह्मावत्सों के लिए दिव्य आकर्षण का, प्रेरणा का, मार्गदर्शन का और अलौकिक प्राप्ति का आधार है। प्रस्तुत पुस्तिका उनके लौकिक, अलौकिक अनुभवों का संग्रह है। उनकी इस सारगर्भित जीवन-कहानी में यज्ञ-स्थापना के पूर्व की भूमिका की झलक तथा दादा लेखराज जी के लौकिक जीवन की झलक के साथ-साथ अन्य अनेक ईश्वरीय रत्नों की गाथा इस प्रकार गुंथी है जैसे माला में मोती गुंथे होते हैं।

लौकिक, अलौकिक कुल का नाम बाला करने वाली दादी निर्मलशान्ता जी चेहरे और चलन से, आदि पिता की साकार प्रतिमूर्ति नज़र आती हैं। उनके इस मन को मोहने वाले साकार रूप को देखने पर ब्रह्मावत्सों के अन्तर्चक्षु के समक्ष बापदादा ही आ विराजते हैं। इस प्रकार, दादी जी को

सूरत और सीरत दोनों से सेवा करने का डबल ईश्वरीय भाग्य प्राप्त है। मौन अवस्था में भी उनका चेहरा, यज्ञ के आदि से लेकर अब तक के इतिहास का दर्पण सरीखा प्रतीत होता है। अपनी शीतल दृष्टि से शीतलता तथा अपनत्व बरसाती हुई वे सबके तन-मन को पुलकित कर देती हैं। साक्षीद्रष्टा स्थिति ने उनको सहज ही साक्षात्कारमूर्त बना दिया है। उनकी रूहानियत भरी झलक देखकर हरेक का मन-मयूर नर्तन तो करता ही है, साथ-साथ यह भाव भी उत्पन्न होता है कि जिसकी रचना इतनी सुन्दर वो रचयिता भी कितना गुण-भण्डार है।

सतासी वर्षीया दादी निर्मलशान्ता जी अभी भी ईश्वरीय सेवा पर तत्पर हैं। शरीर का पुराना हिसाब चुक्तु करते भी वे सदा प्रसन्नचित्त तथा हल्की रहती हैं। उनके 68 वर्ष के यज्ञ-जीवन के और उससे पहले दादा लेखराज जी के पितृत्व की छत्रछाया में पलने के समस्त अनुभवों को ज्यों-का-त्यों लिखा जाये तो कई पुस्तकें लिखनी पड़ें। परन्तु स्नेहमूर्त, गुणमूर्त, वरदानीमूर्त, त्याग और तपमूर्त दादी जी के जीवन की कुछ झलकियाँ ही, जो उन्हें स्मरण रह पायी हैं, प्रस्तुत पुस्तक में लेखबद्ध की गयी हैं। ब्रह्मा बाबा के नयनदुलारे ब्रह्मावत्सों के लिए दादी जी के जीवन के ये अनमोल अनुभव अत्यन्त प्रेरणादायी, सुखदायी और आध्यात्मिक मार्ग पर आगे ले जाने वाले सिद्ध होंगे। इन अनुभवों को पढ़ते-पढ़ते आप बापदादा की प्यार भरी याद में खो जायें, देह की सुध-बुध भूल कर अतीन्द्रिय आनन्द से भरपूर हो जायें, मन-बुद्धि के पंखों से उड़कर बापदादा की प्यारी पालना भरी गोद का रसास्वादन करें और अपने सामने साकार बापदादा को देखते हुए पुरुषार्थ को तीव्र उड़ान दें। इन्हीं शुभकामनाओं के साथ -

— ब्रह्माकुमारी प्रकाशमणि,
मुख्य प्रशासिका,
प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय

★ दो शब्द	3
★ लौकिक परिचय	9
लखीराज-सेवकराम एण्ड सन्स	10
राम-लक्ष्मण एण्ड कंपनी	12
भाऊ विश्व किशोर	13
सन्तरी दादी	14
घर की पहली बहू- राधिका	17
नवनिधि बहन	20
नारायण भाई और सूर्या बहन	22
यशोदा मैय्या	23
कलावती बहन	25
दोनों हाथों में लड्डू	26
भक्ति-पूजा	28
स्कूल और पढ़ाई	29
प्रातःकालीन सैर	30
चंचलता करना	31
बाबा कहते थे - बच्चियाँ देवियाँ हैं	34
वह मेरा हाथ पकड़ कर कहने लगी - तुमको खाना खिलाने के बगैर मैं नहीं छोड़ूंगी	37
★ लौकिक से अलौकिक की ओर	39
बचपन तथा दान-पुण्य	39
कल की बात कल देखी जायेगी	42

पहलगाँव का रास्ता चाहिए या परमधाम का ?	43
बैलगाड़ी में चल पड़ी बाबुल के घर	44
सब तरह की सेवा सीखी	47
चली है विश्व की महारानी बनने	48
पुलिस वाले को भी खुदा-दोस्त का परिचय दिया	49
होम मिनिस्टर भी हँस पड़ा	50
हमारी सिलाई टीचर थी - बड़ी दीदी	53
सेवा भी एक मनोरंजन	54
निश्चय की कड़ी परीक्षा	55
आप तो खुदा के बन्दे हो, आपसे क्या लेना ?	56
गाड़ी खोली भी और जोड़ी भी	58
बहू को शिक्षा देनी है तो पहले बेटी को शिक्षा दी जाती है	59
आप भी हमारे भाई ही हो	60
मेरा एक नाम और भी था - 'प्रलय'	60
मेरा बाबा ही सबका बाबा है	61
हम तो चले अपने देश, सबको कहें खुदा हाफ़िज़	62
बैगरी पार्ट	64
बैगरी पार्ट में भी बेफ़िकर बादशाह	65
बिना सेवा किये खाना भी चोरी है	67
तन गंगा के तट पर हो, मन मुरलीधर के पास हो	68
पूर्व दिशा में ज्ञान सूर्य के उदय का सन्देश	69
निर्भय बनाया	72
कम खर्च बाला नशीन	72
माँगने से मरना भला	73
कर्मयोगी जीवन	74

नष्टोमोहा स्मृति स्वरूपा	74
यह यज्ञ ईश्वर का है, ईश्वर अमर है	76
कहीं भी रहो लेकिन सम्बन्ध बनाये रखो, सेवा में व्यस्त रहो, अपने पुरुषार्थ में मगन रहो	76
मेरा लक्ष्य यही रहता है	77
ब्राह्मण परिवार के लिए मेरा सन्देश	77
★ बादी निर्मलशान्ता जी के प्रति अव्यक्त बापदादा के महावाक्य	78
आप अथक बाबा के अथक और अविनाशी बच्चे हो	78
जैसे सर्विस के साधनों की स्थापना की है वैसे पालना का रूप अभी विस्तार को पाना चाहिए	79
लौकिक, अलौकिक बाप के कुल का नाम बाला करने वाली निमित्त आत्मा हो	80
आप महान् आत्मा अर्थात् सफलता मूर्त हो	81
आप बुलावें बाप न आवें - यह हो नहीं सकता	81
जैसे बाप द्वारा बच्चों का साक्षात्कार होता है, वैसे बच्चों द्वारा बाप का होता है	82
सदा साथ रहने वाली, साथ का वायदा निभाने वाली परदादी हो	83
आप स्थापना के कार्य के आधारमूर्त हो	84
आप सम्पत्ति की देवी बन, सम्पत्ति देती ही रहती हो	85
यह बीमारी भी आप लोगों की सेवा करती है	86
आपको क्या वरदान दें ? वरदानों से ही सजे हुए चल रहे हो	87
अभी जितना नज़दीक से आप मिलते हो, उतना कौन मिलता है !	88
आप सिर्फ़ बैठ जाना कुर्सी पर, सब आपे ही तैयारी कर लेंगे	88

ब्रह्मा बाप का सैम्पल है	89
आपको देखकर सब खुश होते हैं	89
★ दीदी जी (दादी निर्मलशान्ता) में मैंने क्या देखा?	90
टूटा बर्तन भी काम में आता है	90
दीदी के चेहरे पर कितना तेज है!	90
दीदी जी का जीवन त्याग, तपस्या और सेवा का प्रतिरूप है	91
दीदी जी जितनी गंभीर उतनी ही रमणीक भी हैं	92
दीदी नाउम्मीद आत्मा में भी बल भर देती है	93
दीदी ने एक-एक दाने को सफल करना सिखाया	93
दीदी तो साक्षात् देवी हैं	94
दीदी बाबा का साक्षात् स्वरूप है	95
दीदी सभी दैवी गुणों की प्रतिमूर्ति हैं	96

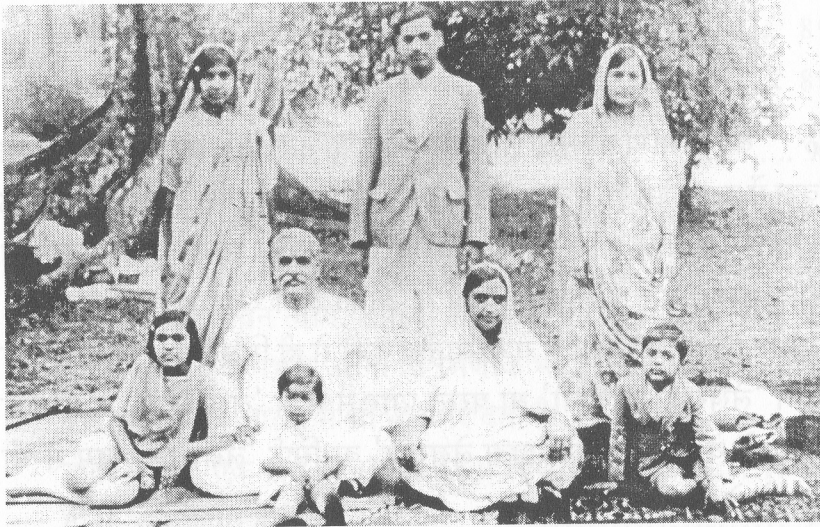


लौकिक परिचय

बड़े सौभाग्य की बात है कि मेरा लौकिक जन्म ऐसे असाधारण कृपलानी कुल में हुआ जिसे हैदराबाद (सिन्ध) में सभी ऊँची नज़र से देखते हैं। लौकिक पिताजी से शहर और समाज (बिरादरी) के सभी लोग बहुत सम्मान से राय-सलाह लेते थे और हर कार्य में उनको आगे रखते थे। प्रतिष्ठित हों, अधिकारी हों, सभी बाबा से सम्मानीय नज़र से ही मिलते थे। उनका असली नाम 'लेखराज कृपलानी' था परन्तु प्यार से सभी 'लखी बाबू' के नाम से पुकारते थे। कई उनको 'दादा लेखराज' वा सिर्फ 'लखीराज' नाम से भी जानते थे।

ऐसे प्यारे पिता के घर में मेरा जन्म धन तेरस अर्थात् दीपावली के दो दिन पहले, अक्टूबर 1917 में हैदराबाद (सिन्ध) में हुआ। लौकिक में चार बहनों तथा दो भाइयों में मेरा स्थान तीसरा है। सबसे बड़ा भाई किशन, उसके बाद बहन कलावती, फिर मैं। मेरे कई नाम हैं। जन्मपत्री में पार्वती था लेकिन पिताजी यानि बाबा मुझे प्यार से 'पालू' नाम से पुकारते थे। इस नाम की भी बड़ी मीठी कहानी है, जो आगे वर्णित है। मेरे ही इस नाम से जोड़कर लौकिक माताजी जिनका नाम यशोदा था, उन्हें सभी परिवार वाले 'पालामाँ' अर्थात् 'पालू की माँ' के नाम से बुलाते थे। यह भी जैसे मेरे नाम से ही माँ का अति नजदीक का सम्बन्ध जोड़कर, प्यार देते थे।

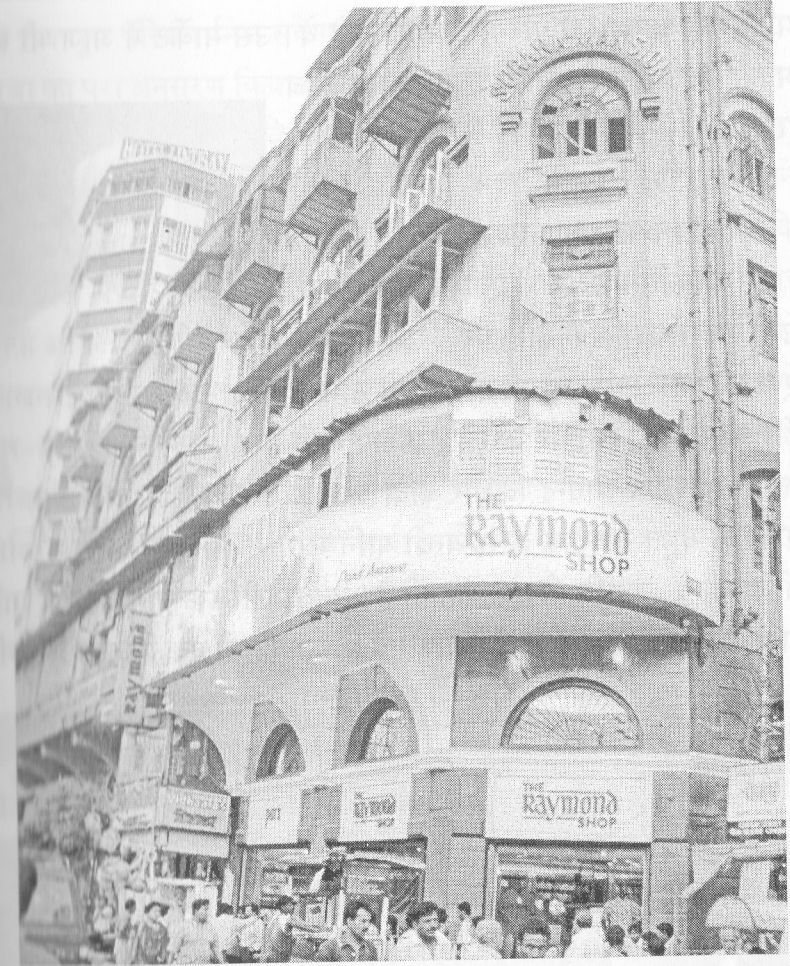
चौथे स्थान पर मेरी छोटी बहन नवनिधि है परन्तु उन्हें कभी भी कोई इस नाम से नहीं पुकारता था। प्यार से 'पुट्टू' के नाम से ही आज तक सब जानते हैं। वह वर्तमान समय मुंबई कोलाबा में अपने घर पर रहती है। पाँचवें स्थान पर मेरा भाई नारायण है तथा छठे स्थान पर सूर्या बहन है। इन दोनों का यही नाम आज तक सभी जानते हैं तथा ये भी दोनों मुंबई में ही रहते हैं।



बाबा और मैया, पीछे खड़े हैं मैं (दादी निर्मलशान्ता), बड़ा भाई किशनचन्द, भाभी राधिका (दादी वृजेन्द्रा), नीचे बैठे हैं बहन पुट्टु, बहन सूर्या तथा छोटा भाई नारायण।

लखीराज-सेवकराम एण्ड सन्स

भावी अनुसार, बिजनेस (व्यापार) करने के लिए बाबा का कलकत्ता जाना हुआ। उस समय भारत में अंग्रेजों का राज्य था और भारत की राजधानी भी कलकत्ता ही थी। अंग्रेज भारत में बिजनेस करने के लिए सबसे पहले यहाँ (कलकत्ता) ही आये थे। अतः यह शहर मुख्य आकर्षण का केन्द्र था। कलकत्ते में ही बाबा के कुछ और परिचय वाले दोस्त और सम्बन्धी भी थे। उनमें एक खास विश्वसनीय व्यक्ति सेवकराम भी थे जिनके साथ बाबा ने साझेदारी (पार्टनरशिप) में “लखीराज-सेवकराम एण्ड सन्स” नाम से व्यापार शुरू किया। कलकत्ता में सबसे नामी-गिरामी स्थान और प्रसिद्ध बिजनेस सेन्टर उस समय न्यू मार्केट (New Market) ही था जिसे चार्ल्स हॉग मार्केट (Charles Hogg Market) के नाम से जाना जाता है। लेकिन सभी के मुख से ‘न्यू



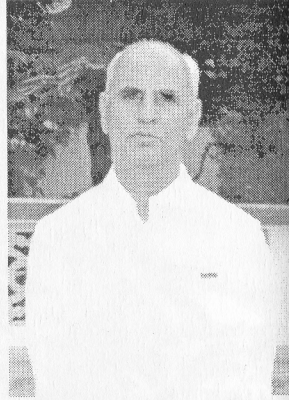
चार मंजिल वाली इमारत जहाँ बाबा की दुकान और मकान थे।

मार्केट’ नाम ही निकलता है। अतः उस मार्केट के ठीक सामने एक सात मंजिल की इमारत थी जिसमें लिफ्ट लगी हुई थी। उसका ठिकाना (पता) “7ए, लिण्डसे स्ट्रीट, सुराना मेन्सन, न्यू मार्केट” है। पहली मंजिल पर बाबा ने दुकान यानि जिसे हम गद्दी कहते थे उसे हीरे-जवाहरातों के बिजनेस का स्थान बनाया। दूसरी मंजिल में हम सभी रहते थे तथा तीसरी मंजिल में

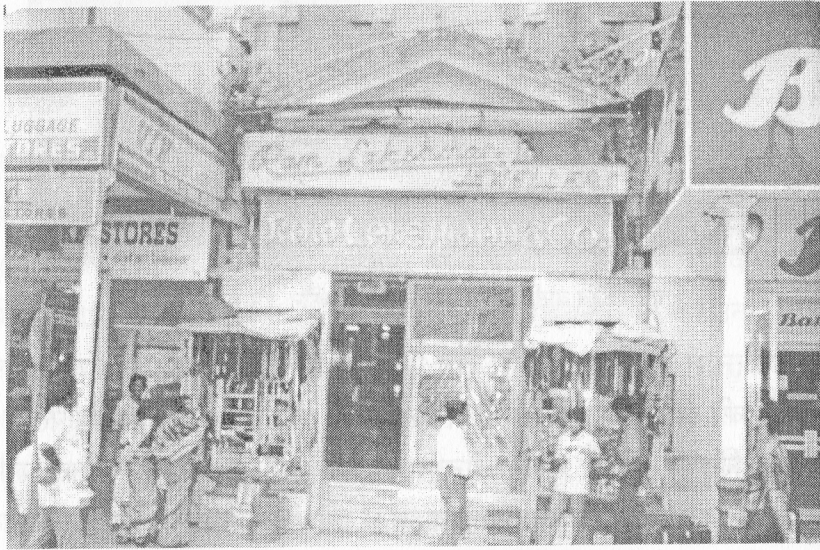
पार्टनर सेवकराम जी परिवार सहित रहते थे। उस मार्केट में आज भी वह मकान बहुत ऊँचा है तथा ठीक उसके पास ग्लोब (Globe) सिनेमा हॉल है।

राम-लक्ष्मण एण्ड कंपनी

ग्लोब सिनेमा हॉल से एक मकान छोड़कर, उसी फुट पाथ (Foot path) पर “राम-लक्ष्मण एण्ड कम्पनी” थी, जो आज भी उसी नाम से हीरे व सोने का व्यापार करती है। आप सभी जानते होंगे कि आनन्द किशोर दादा जो कि बाबा के बहुत नज़दीक के सम्बन्धी यानि मेरे जीजा जी थे, उनकी भी एक कहानी है। उनका लौकिक नाम लक्ष्मण था। दादा आनन्द किशोर की कई विशेषतायें हैं, उनकी भी एक किताब लिखनी



दादा आनन्द किशोर जी



दादा आनन्द किशोर जी की दुकान – राम-लक्ष्मण एण्ड कं।

पढ़े तब पूरा परिचय मिल सकेगा। संक्षेप में यही कहूँगी कि उन्होंने ब्रह्मा बाबा का पूरा अनुसरण किया। जैसे बाबा सारा बिजनेस समेट कर कलकत्ता से हैवराबाद (सिन्ध) आये, उन्होंने भी ऐसे ही किया। बाबा ने अपना बिजनेस, पार्टनर सेवकराम को दिया तथा दादा आनन्द किशोर ने अपने पार्टनर राम को सारा बिजनेस दिया और अपने हिस्से का धन लेकर बाबा के पास चले आये। यज्ञ में समर्पित भाइयों में, उस समय सबसे ज्यादा पढ़ाई सिर्फ आनन्द किशोर दादा की ही थी। अंग्रेज़ी में ज्ञान की सभी बातों को लिखना, अनुवाद करना, मुरली अंग्रेज़ी में लिखना, अंग्रेज़ी में देश-विदेश में पत्र-व्यवहार करना – दादा आनन्द किशोर का ही काम था। इसके अलावा, बाबा के ऑफिस का कार्य कराची से लेकर मधुबन (माउण्ट आबू) में अपने अन्तिम समय तक सम्भाला जिसे अभी निर्वैर भाई निमित्त बन सम्भाल रहे हैं।

भाऊ विश्व किशोर

इसके साथ-साथ मुख्य न्यू मार्केट के ठीक बीचों बीच हीरे-जवाहरातों के शो रूम (Show room) जैसी एक बहुत बड़ी दुकान थी जिसमें सभी प्रकार के गहने थे, वह जवाहरात का जैसे कि म्युजियम था। बहुत विदेशी भी वहाँ आकर सेम्पल (नमूना) देखकर ऑर्डर दे जाते थे। लेकिन आपको आश्चर्य होगा कि यह दुकान भी जैसे खुदरा (रिटेल) माल बेचने का बाबा का ही केन्द्र (रिटेल शो रूम) था। विश्व किशोर दादा जिसका लौकिक नाम भेरू दादा था और जिसे आप सभी यज्ञ में ‘भाऊ’ के नाम से जानते हैं, यह उनकी दुकान थी। उन्हें तो आदि से अन्त तक बाबा का राइट हैण्ड समझकर, सभी यज्ञ निवासी सम्मान देते थे। अतः ऐसे मीठे भाऊ के पास जो भी ग्राहक होलसेल (थोक) में माल लेने आते थे, वे उन्हें बाबा के पास पहली मंज़िल वाली गद्दी में ले आते थे। कोई भी नया डिज़ाइन, फैशन वा मन पसन्द की



भाऊ विश्व किशोर जी

ज्वैलरी चाहिए तो उसे बाबा ही बनाकर देते थे। भाऊ, बाबा के लौकिक भाई का बेटा था, अतः बाबा पर शुरू से प्रेम और विश्वास होने के कारण वह जैसे कि परिवार का ही सदस्य था। उन्हें आप बाबा का भाई समझो या बेटा समझो, वे दोनों पार्ट एक-साथ बजाते थे। शुरू से जो बाबा ने कहा, वे हाँ जी, जी हाँ कहकर करते थे। इनका भी श्रेष्ठ चरित्र व दिव्य जीवन-कहानी है तथा वे भी बाबा को काँपी (अनुसरण) करके सारा बिजनेस समेटकर कराची चले आये। अन्त तक बाबा के अंग-संग रहकर, बाबा के हर आदेश का पालन कर, यज्ञ की हर प्लानिंग (योजना) को कैसे विधि पूर्वक किया जाये, 'उसे बाबा के आदेश वा श्रीमत प्रमाण एक्यूरेट करते रहे। उन्हें सभी कार्यों में सफलता जैसे कि वरदान के रूप में मिली हुई थी। सन् 1967 में वे पार्थिव शरीर छोड़ एडवान्स पार्टी में आज भी सेवारत हैं।

सन्तरी दादी

लौकिक परिवार में जैसे हम सभी भाई-बहनें अंग-संग थे वैसे ही एक और विशेष आत्मा थी जो भाऊ यानि दादा विश्व किशोर की युगल थी, जिसे सभी संतरी दादी के नाम से जानते हैं। वैसे तो यह हमारे घर में बहू के रूप में आयी थी लेकिन उनका पूरा ही पार्ट बेटे के समान था। बाबा मुझे 'पालू' के नाम से पुकारते थे। कारण, उस समय कलकत्ता में एक आम



सन्तरी दादी

आता था जिसका नाम 'पाली' था। बाबा सिन्धी भाषा में कहते थे— 'पाली आम मिठो' यानी पाली आम मीठा है, ऐसे ही तुम पालू बेटे हो। उसी उक्ति अनुसार एक दूसरा फल जो बाबा को बहुत प्रिय था, वह था संतरा। आप जानते हैं आज भी भारत में सबसे मीठा संतरा (Orange) दार्जिलिंग का है। उसका रंग-रूप बहुत सुन्दर होता है। संतरी दादी का चेहरा, मीठी-प्यारी बातें व सेवा के कारण बाबा हमेशा उसे 'सन्तरा बेटा' कहते थे। मुझे याद है कि बहू के रूप में तो उसे बाबा के सामने कम बोलना वा एकदम नहीं बोलना पड़ता था। वह सिर झुकाकर चलती थी। उस समय के समाज के अनुसार लौकिक ड्रेस में साड़ी वा सलवार-कुर्ता और चुन्नी आदि पहनना होता था। सिर ढककर चलना— यह घर का रिवाज था लेकिन बाबा ने क्या किया, शुरूआत में जब उसका एक-दो बार सिर पर चुन्नी ढककर तथा गर्दन झुकाकर चलना वा शर्म करना देखा तो झट से सभी के सामने चुन्नी को हाथ से उतारकर यशोदा मैय्या यानि मम्मी को दे दिया तथा कहा कि आज से कभी भी यह बहू के रूप में इस प्रकार का कोई भी चाल-चलन नहीं अपनायेगी और न ही ऐसे कपड़े पहनेगी। जैसे पालू पहनती है, रहती है ऐसे ही पहने, चले और बोले। तब से वह बाबा की बहुत प्यारी 'सन्तरा बच्ची' बन गयी।

बाबा ने खास सन्तरे के कारण ही दादी का नाम 'सन्तरा' रखा। जब बीजन में रोज़ टोकरा भरकर सन्तरे आते थे तो उनका रस निकालने की सेवा सन्तरी दादी ही करती थी। घर में तो सभी को मिलता ही था, साथ-साथ

गद्दी में जो भी ग्राहक वा काम करने वाले होते थे उनको भी उस समय चाँदी की ट्रे (थाली, तश्तरी) में सजाकर गिलास भरकर देने का कार्य भी सन्तरी दादी का ही होता था। खाना बनाना, पकाना यह तो हमने लौकिक घर में कभी सीखा ही नहीं। सीखना तो छोड़ो, बाबा करने ही नहीं देता था, कारण कि उस समय भी घर में दो मेड सर्वेन्ट यानि काम करने वाली थीं। एक अंग्रेजी और दूसरी मारवाड़ी। उनकी भी अलग-अलग ड्यूटी थी। नौकर तो थे ही। अतः घर की सफ़ाई, खाना बनाना, नहलाना, कपड़े की धुलाई आदि सभी काम नौकर ही करते थे। मीठी सन्तरी दादी भी प्यार से सेवा करते हुए भाऊ के साथ हमारे घर में ही थी। भाऊ को एक अलग कमरा गद्दी के पास बाबा ने दिया हुआ था लेकिन सन्तरी दादी तो हमारे पास ही सोती वा रहती थी। उन्होंने अन्त तक बाबा के यज्ञ में रहकर कई प्रकार की सेवायें की। जैसे अपनी कहानी मैं आपको बता रही हूँ उससे भी अधिक सेवा की कहानी दादी सन्तरी की है। हैदराबाद (सिन्ध) से मधुबन तक उनका तो सन्देशी का भी पार्ट यज्ञ में चला।

साकार बाबा के शरीर छोड़ने के बाद अव्यक्त बापदादा की पहली-पहली पधरामनी सन्तरी दादी के तन में ही हुई थी और अव्यक्त पार्ट की पहली मुरली भी 21-01-1969 को सन्तरी दादी के तन द्वारा ही चलायी थी। उसके बाद गुलजार दादी के माध्यम से अव्यक्त पार्ट चल रहा है। लेकिन प्रथम अर्थात् आदि अव्यक्त पार्ट बाबा ने सन्तरी दादी के रथ से बजाया। तो मैं समझती हूँ कि कितनी भाग्यशाली, पवित्र, निर्मल आत्मा होगी जिसमें बाबा ने प्रवेश किया! इसके बाद मीठी दादी ने मधुबन में स्टॉक (Stock) संभालने की सेवा की। अव्यक्त बापदादा ने स्टॉक संभालने की सेवा सन् 1970 में मुन्नी बहन को दे दी। कारण, बाबा ने सन्तरी दादी को सेवा अर्थ मेरे साथ सहयोगी साथी के रूप में कलकत्ता भेज दिया। मैं तो सन् 1964 से ही कलकत्ता में थी। सन् 1990 में कलकत्ता में एक बहुत बड़ा राजयोग

भवन बांगूर एवेन्यू में बना। उसका हिसाब-किताब, धन का लेन-देन यह सब सन्तरी दादी ही करती थी। ग्यारह नवम्बर, 1990 को भवन निर्माण का कार्य पूरा करने के बाद मैं बाबा से मिलने मधुबन आ रही थी। हम दोनों कभी एक-साथ मधुबन नहीं आते थे। हम दोनों में से किसी एक को सेवाकेन्द्र पर रहना होता था। उस दिन मैं एयरपोर्ट पर जा रही थी, तो दादी सन्तरी ने कहा, “दीदी, मैं भी बाबा से मिलने चलूँगी।” मैंने कहा, “भला अभी अचानक यह संकल्प कैसे आया?” फिर उसने कहा, “नहीं, बाबा से मिलने का दिल हो रहा है, मैं वापिस दो दिन में आ जाऊँगी।”

ड्रामा की भावी, उसे मधुबन ले आयी। तेरह दिसम्बर 1990, सत्गुरुवार अव्यक्त बापदादा के आने का दिन था। मधुबन घर में 4000 भाई-बहनें आये हुए थे तथा मीठी सन्तरी दादी ठीक अमृतवेले 3 से 4 बजे के बीच में बतनवासी बाबा के पास सोये-सोये ही पहुँच गयी। फिर शाम को बाबा की पधरामनी हुई तो बाबा का सन्देश का सार यही था कि सन्तरी बच्ची की दिल थी कि बाबा की गोदी में शरीर छोड़ूँ। बच्ची का सारा कर्मबन्धन पुरा था। बच्ची ने संकल्प किया, बाबा मैं आऊँ, बाबा ने बुला लिया। तो आप सभी भी ऐसे ही शरीर छोड़ना चाहते हो ना! ऐसे बाबा का सन्देश सुनकर, मैं समझती हूँ कि मेरे लौकिक वा अलौकिक परिवार की महान आत्मा कितनी यज्ञ की वफ़ादार, फ़रमानवरदार और विशेष थी, जिसे आज भी याद करते स्नेह से दिल गद्गद हो जाता है!

घर की पहली बहू – राधिका

मेरे सबसे बड़े भाई किशन की शादी करने का संकल्प बाबा को जब आया तो बाबा ने घर में प्रथम बहू लाने के लिए ऊँचे से ऊँचा श्रेष्ठ संकल्प किया हुआ था कि बहू ऐसी हो जो सुशील, सुन्दर, सरल वा सात्विक विचारों वाली शाही यानि श्रेष्ठ नामी-गिरामी परिवार की हो। बाबा ने पहले से ही

एक लड़की को देखा था। आर्थिक और सामाजिक दृष्टि से बाबा उस समय ऊँची स्थिति में थे। खूब मान, सम्मान था। राजा-महाराजाओं से सम्बन्ध थे। इन सबके कारण, कलकत्ता में जवाहरात के व्यापारी बाबा को “खिदरपुर का नवाब” कहते थे। अतः ‘नवाब’ के घर में प्रथम बहू कैसी आनी चाहिए! वह भी शहजादी, राजकुमारी जैसी हो।



दादी ब्रजेन्द्रा (राधिका)

बात पुरानी है। राधिका नाम की एक बच्ची थी जिसका अलौकिक नाम दादी ब्रजेन्द्रा पड़ा। वह बहू के रूप में हमारे घर में कैसे आयी, उसकी भी एक कहानी है। बाबा सम्पन्न, धनी परिवारों में से होने के कारण ब्रजेन्द्रा दादी के परिवार को जानते थे तथा उनका भी व्यापार ऐसा ही था। बचपन में ब्रजेन्द्रा दादी (राधिका) एक मिठाई की दुकान से मिठाई खरीद रही थी। उसके सिर पर एक बहुत सुन्दर टोपी थी। बाबा ने राधिका को परिवार के साथ देखा तो कुछ बोला नहीं लेकिन संकल्प किया था कि यह बच्ची किशन के लिए बहू के रूप में लायेंगे। समय गुजरता रहा, राधिका बड़ी हो गयी। राधिका के बड़े भाई को बाबा ने कहा कि मुझे अपने घर में किशन के लिए राधिका बहू के रूप में चाहिए। यह सुनकर राधिका के भाई ने तीन शर्तें बाबा के सामने रखीं और कहा इन्हें पूरा करने पर ही हम अपनी बहन को आपके घर दे सकेंगे। वो तीन शर्तें थीं— (1) उसके पाँव गलीचों पर ही पड़ेंगे (2) वह कभी भी खाना नहीं बनायेगी और (3) उसके आने-

जाने के लिए गाड़ी का प्रबन्ध होगा। बाबा ने इन तीनों शर्तों को ऐसे स्वीकार किया मानो कि ये कोई बड़ी बातें नहीं हैं और ये सभी सुविधायें उस समय घर में मौजूद थीं ही।

उस समय हम कलकत्ता में रहते थे, राधिका हैदराबाद में थी। उसके लौकिक भाई देखने वा जानने के लिए कलकत्ता हमारे घर पर आये। घर में उस समय भी गाड़ी, नौकर, नौकरानियाँ थीं। कारपेट (गलीचों) पर ही हम चलते थे। अचानक आने पर सब कुछ स्वयं ही देखा तथा फिर बाबा ने उसे घर का सारा खज़ाना खोलकर भी दिखा दिया। एक अलमारी में अनेक प्रकार के एक से एक कीमती हीरे, रत्न, माणिक्य, मोती आदि थे। फिर बाबा ने कई अलमारियाँ खोलकर दिखायी जिनमें एक से एक सुन्दर डिज़ाइन के सोने के जेवर थे जिनमें हीरों आदि के भी हार थे। उनको देखकर उसका भाई तो आश्चर्य चकित हो गया। फिर भी बाबा ने चाँदी के अनेक प्रकार के बर्तन और शृंगार के सामानों से भरी कई अलमारियाँ उन्हें दिखायी। कहा जाता है, समाजदार को इशारा ही काफी होता है। राधिका का भाई यह तो सोच भी नहीं सकता था कि बाबा के पास इतनी धन-सम्पत्ति है! घर में बहू को जाना था तो उनकी शर्तों को पूरा कर, बाबा ने युक्ति से बाज़ी जीत ली। राधिका का भाई खुशी से आँखों देखा हाल और सारा समाचार परिवार वालों को बताकर सन्तुष्ट हुआ तथा एक दिन राधिका, जिसे बचपन में बाबा ने देखा था, बहू के रूप में घर में आ गयी। यह बाबा की दृढ़-संकल्प शक्ति का कमाल था।

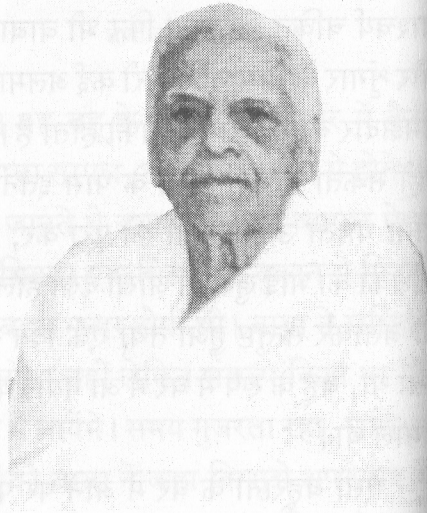
ऐसी बहूरानी के घर में आने पर परिवार की खुशी में चार चाँद लग गये। वह बहू के साथ-साथ बेटे का भी पार्ट निभाती थी, जैसे दादी सन्तरु। वह भी बाबा के लौकिक-अलौकिक परिवार के साथ अन्त तक रही। इनकी भी विचित्र कहानी है। जब राजदरबार में भी बाबा के साथ सजी-सजाई जाती थी तो रानियाँ-महारानियाँ सिर्फ़ उनका शृंगार देखकर ही शर्मिन्दा हो

जाती थीं। रानियों से भी ज़्यादा गहने, हीरे-मोती बृजेन्द्रा दादी पर शोभा देते थे। बाबा में शिव बाबा की प्रथम प्रवेशता का साक्षात्कार जब से हुआ तो उन्होंने सब गहनों का संन्यास कर लिया और बाबा के साथ-साथ कलकत्ता, हैदराबाद (सिन्ध), कराची, आबू की यात्रा करते-करते अन्त में महाराष्ट्र ज़ोन की इंचार्ज का पार्ट बजाते हुए, मुंबई सायन सेन्टर पर जनवरी, 1990 में पार्थिव शरीर छोड़ा। महाराजकुमारी और महारानी जैसी रहकर फिर बृजकोठी में बैगरी पार्ट बजाते हुए दादी बृजेन्द्रा ब्रज समान दृढ़ रहकर, 'इन्द्र' समान फ़रिश्ता बनकर अब एडवान्स पार्टी में सेवारत हैं।

नवनिधि बहन

अब आती है मेरी दूसरी बहन नवनिधि की बात, जिसको प्यार से बाबा और हम सभी 'पुट्टु' कहकर बुलाते थे। आज भी सब उसी नाम से पुकारते वा जानते हैं। इसकी कहानी बिल्कुल ही अलग इस बेटे की बाबा ने साधारण घर में, सात्विक, साधु-प्रवृत्ति वाले व्यक्ति के साथ शादी करायी।

बाबा ने उस समय लखपति होते हुए तथा लौकिक दृष्टि से एक प्रसिद्ध कृपलानी कुल के होते हुए भी अपनी बेटे का विवाह बोधराज नामक एक ऐसे व्यक्ति से किया जो स्कूल में मुख्य अध्यापक थे और एक साधारण परिवार के थे। मेरी बहन तो ठीक मेरे समान सुशील, शोभनीय



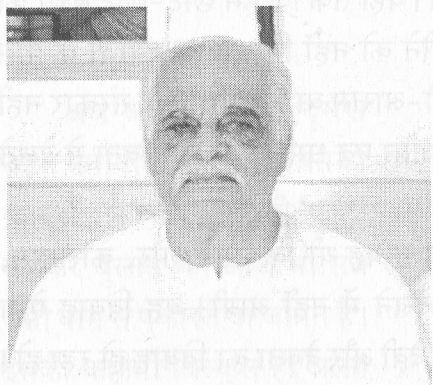
नवनिधि बहन (पुट्टु बहन)

थी और सर्व सुखों में पली थी। लेकिन बाबा ने उसका विवाह किसी धनी कुल के युवक से न कराके, बोधराज से इस कारण कराया कि बोधराज धर्म-प्रिय थे। वे चिदाकाशी मठ में अपनी लगन के लिए विशेष रूप से योगीराज नाम से प्रसिद्ध थे। हालांकि, उनके इस कार्य से हमारे कुल में बहुत हलचल पैदा हुई और बहुत-से लोगों में यह एक चर्चा का विषय बन गया कि बाबा ने अपने उच्च कुल को छोड़कर बाहर के एक साधु तुल्य व्यक्ति के साथ पुट्टु की शादी क्यों की? मेरी मैय्या शिव की अनन्य भक्तिन थी। दोनों बहुर्ये-संतरु और राधिका (दादी बृजेन्द्रा) भी पक्की भक्तिन थी, पूजा-पाठ बगैर भोजन भी नहीं करती थीं। यहाँ तक कि हम छोटे-छोटे बच्चों को भी बिना पूजा-पाठ के दूध तक पीने को नहीं मिलता था। बाबा के पास विपुल धन-दौलत होते हुए भी ऐशो-आराम वा विलासिता के संस्कार नहीं थे। बाबा को सभी अत्यन्त भद्र, सुशील एवं धर्म-प्रिय की भावना से देखते और सम्मान देते थे।

पुट्टु की इस शादी की विशेषता यह थी कि उसमें शोर, कोलाहल, स्थूलता या सांसारिकता बिल्कुल देखने में नहीं आयी। वह विवाह ऐसा लगता था जैसेकि कलियुग में किसी देवी और देवता का विवाह हो रहा हो। यह सब कलकत्ता, मुंबई वा हैदराबाद (सिन्ध) में फैल गयी और चर्चा का विषय बन गयी। क्योंकि मेरी शादी तो बाबा ने सिन्ध के बहुत बड़े धनी, प्रसिद्ध 'मुखी' परिवार में की थी। पुट्टु मेरे से सिर्फ दो साल छोटी है। उस समय यज्ञ की स्थापना तो हुई नहीं थी, शिव बाबा का भी परिचय नहीं था लेकिन बाबा के दिल में भक्तिभाव, प्रभुनिष्ठा, दानवीरता, एकान्त प्रियता अपनी उन्नत चोटी पर थीं और इस शादी के बाद बाबा धीरे-धीरे उपराम होने लगा था। मेरी शादी और पुट्टु की शादी में रात-दिन का फ़रक था। पुट्टु की शादी के बाद तो बाबा ने किसी भी भाई-बहन यानि नारायण भाई वा सूर्या बहन की शादी नहीं करायी क्योंकि शिव बाबा की प्रवेशता के बाद

‘शादी तो बरबादी है’ – यही बाबा का महामंत्र रहा। घर-परिवार व समाज में बाबा के चिन्तन की धारा को लोग ग़लत नहीं कह सकते थे क्योंकि उनका जीवन सत्यता और श्रेष्ठ चरित्र से ओतप्रोत था। एक तरफ़ बड़े-बड़े राजा-महाराजाओं से व्यापार, उनके पास आना-जाना, उनसे मिलना तथा दूसरी तरफ़ भक्ति-भावना, पूजा-पाठ, दान-पुण्य आदि, ये दोनों ही बातें समाज में उनकी प्रतिष्ठा का सुदृढ़ आधार थीं।

नारायण भाई और सूर्या बहन



नारायण भाई

मेरे छोटे भाई नारायण को आज भी सभी उसी नाम से जानते हैं। शिव बाबा की प्रवेशता के बाद सारा परिवार हैदराबाद (सिन्ध) से कराची ट्रान्सफर (स्थानान्तरित) हो गया। चौदह वर्ष तक वहाँ यज्ञ में सेवा करते, ज्ञान-योग की धारणा करते चलते रहे। सूर्या बहन (सबसे छोटी) भी सेवा में सहयोगी थी। लौकिक परिवार तो पूरा ही

साथ था लेकिन मानसिक रूप से बाबा का व्यवहार लौकिक रीति से पूर्णतया समाप्त हो गया था। अचानक बात करते-करते बाबा पूछते थे, “बच्ची, किसके सामने खड़ी हो? किससे बात कर रही हो?” आप सोच सकते हैं कि यह सुनकर कितना आश्चर्य लगता होगा! हम बच्चों को जिस लौकिक बाप ने पैदा किया, पाला, पोसा, वह आज कैसे बात कर रहा है! लेकिन महान परिवर्तन का आभास बाबा हमें सदा कराता था। अतः मैं आपको नारायण भाई और सूर्या बहन की जीवन-कहानी का साक्षात्कार कराती हूँ।

सन् 1951 में बृजकोठी में जब हम आये थे, उस समय बैगरी पार्ट शुरू हो चुका था। यानि 14 साल तक तो बाबा ने सबकी बादाम-पिस्ता खिलाकर पालना की थी लेकिन आबू में तो सूखी रोटी, छाछ-डोडा आदि खाकर या बिना खाये भी गुजारा करना पड़ता था। ऐसे हालात देखकर, नारायण भाई बाबा से छुट्टी लेकर पैसे कमाने के लिए मुंबई चले गये। उसके साथ छोटी बहन सूर्या भी गयी। मुंबई को तो आप जानते हैं – मायावी नगरी है। बाबा ने उसे एक पैसा भी नहीं दिया, ना लौकिक रीति से कि मेरा बेटा है, ना ही अलौकिक रीति से कि यज्ञ का बच्चा है। वे सेवा के निमित्त तो गये नहीं थे, अतः बाबा ने पैसा देने से साफ़ इनकार कर दिया था। फिर नारायण भाई ने सन् 1954 में मुंबई में ही ज्योति नाम की लड़की से शादी की। सूर्या ने सन् 1962 में, परिचित परिवार के एक ओम् प्रकाश नाम के व्यक्ति से शादी की। यह दोनों वर्तमान समय मुंबई में ही रहते हैं। नारायण भाई के घर ‘पारिजात’ बिल्डिंग, मेरिन ड्राइव में बाबा एक बार मुरली सुनाने गये थे लेकिन लौकिक नाते का नाम-निशान नहीं था। ऐसा था बाबा के जीवन का महान परिवर्तन! कितना विचित्र है मेरा बाबा और त्यागी-तपस्वी परिवार!



सूर्या बहन

यशोदा मैय्या

यशोदा मैय्या जिसे सभी पालामाँ कहते थे, वह तो पूरी ही पतिव्रता नारी थी। एक लाइन में ही उनका परिचय हो जायेगा। बाबा जब स्नान करके बाथरूम से बाहर आता था तो मैय्या उनके चरणों को धोकर, चन्दन

राज तक के इस परिवर्तन के कालचक्र को देखती हूँ तो समझती हूँ कि सारे विश्व में ऐसा लौकिक पिता किसी भी आत्मा को नहीं मिला है जिसमें लौकिक (दादा लेखराज), अलौकिक (प्रजापिता ब्रह्मा) और पारलौकिक (शिव बाबा) पिता एक-साथ समाया हुआ हो। मैं तो सभी को कभी-कभी सपना में सुनाती हूँ कि मेरे श्री-इन-वन (Three-in-one) यानि एक बाप में तीन बाप समाये हुए हैं। तो कितना नशा, खुशी, खुमारी एक साथ मिल जाती है! मुझे तो यह भी निश्चय है कि मैं सतयुग में भी बाबा यानि श्री नारायण के पास ही जन्म लूंगी या परिवार में रहूँगी। तो अब फोर-इन-वन (Four-in-one) यानि एक में चार हो गये ना!

कलावती बहन

आपको मालूम हुआ कि मेरा स्थान भाई-बहनों में तीसरा था। मेरे से एक बड़ा भाई किशन और दूसरी कलावती बहन थी। लेकिन कलावती बहन ज्यादा समय तक जीवित नहीं रही, बहुत कम उम्र में ही उसने शरीर छोड़ दिया था। इसलिए उसे कोई भी जानते नहीं हैं। जैसे आत्मा घर में आधी, पार्ट बजाया, फिर कहीं चली गयी। लेकिन कलावती बहन के कारण ही मेरे जीवन की कला में परिवर्तन हुआ। आप कहेंगे, वह कैसे?

वह इस प्रकार कि बाबा को एक बेटा और एक बेटी पहले से थे, जब मेरा जन्म हुआ तो मैं दूसरी बेटी हो गयी। मेरी बुआ यानि बाबा की लौकिक बहन जिसका नाम हक्की हाथीरमानी था, मेरे फुआ, जिनका नाम किरमताराम हाथीरमानी था, उनका भी पूरा बिजनेस जापान से था, वहाँ से माल आता था और भारत में मुंबई, हैदराबाद (सिन्ध), कराची आदि मुख्य शहरों में जाता था। परन्तु उनको कोई सन्तान नहीं थी।



यशोदा मैया

का टीका करके, चरण धुलाई किया हुआ पानी चरणामृत समझकर पीती थी यानि 'पति देवो भव' का गायन-पूजन मेरी मैय्या सम्पूर्ण रूप से करती थी। बाबा के खाने के बाद ही खाना खाती थी। बाबा का हुकम माना हाँ जी। बाबा वा मैय्या दोनों ही एकमत, एकरस स्थिति में थे। मैंने डाँटना, आवाज़ से बोलना, गुस्सा करना आदि दोनों से कभी भी अनुभव नहीं किया। और ही हम बच्चों द्वारा ग़लती होने पर चाकलेट, बिस्कुट, मिठाई खिलाकर खुश कर देते थे। फिर कहते थे, "बच्ची, आगे से ऐसे नहीं करना"। मतलब पहले प्यार, फिर शिक्षा। ऐसी थी यशोदा मैय्या। भक्ति, पूजा, दान, पुण्य, तीर्थयात्रा, सत्संग, गुरुओं की खातरी वा हम सभी बच्चों की पालना-पढ़ाई तथा बहुओं के साथ प्यार, स्नेह-सहयोग, घर में अचानक बिजनेस के नाते मेहमान आ जाने पर उनका सत्कार तथा अन्य व्यवस्था, राज-परिवार में भी बाबा के साथ-साथ हम बच्चों को ले जाते समय बड़े ठाठ के कपड़े पहनाना, श्रृंगार करना वा गिफ़्ट (सौगात) आदि निश्चित करना, घर की यह सारी आन्तरिक व्यवस्था मैय्या ही देखती थी परन्तु सब बाबा की राय से।

बाबा की कहानी तो आप सबको मालूम ही है, उसे बताने की दरकार ही नहीं है। बाबा तो बाबा ही था। बचपन में तो इतना महत्त्व मालूम नहीं पड़ता था। जैसे घर में लौकिक मात-पिता सभी के होते हैं, सभी माँ-बाप अपने बच्चों को प्यार करते हैं वैसे ही समझती थी। लेकिन 8 वर्ष की आयु से

दोनों हाथों में लड्डू

एक बार की बात है कि बुआ जी अचानक घर में आयी तथा हम दोनों बहनें ऐसे ही बिना नहाये-धोये बैठी थीं। घर में मैय्या कुछ काम करने में व्यस्त थी। हम बाहर मार्केट में खेल-कूद करके आये थे अतः कपड़े भी गंदे हो गये थे। बाबा हमें रोज़ नयी ड्रेस पहनाता था, पुरानी ड्रेस को तो मैय्या गरीबों को दान-पुण्य कर देती थी। उस दिन जब दोनों बहनों को गंदा और समय पर ठीक-ठाक तैयार नहीं देखा तो बुआ ने बाबा को कहा, “सिर्फ बच्चे पैदा करना जानते हो, संभालने की तो फुर्सत ही नहीं है। तुम्हारे पास दो बेटियाँ हैं, एक मुझे दे दो। पालु मुझे पसन्द है, आज से मैं उसे अपने घर ले जाती हूँ।” महादानी बाबा ने तुरन्त हाँ कह दी और कहा, “भले ले जाओ, भाई की अमानत पर बहन का अधिकार होता है।” बाबा का प्यार तो बुआ से बहुत-बहुत था। मैं तो पहले भी बुआ के घर बीच-बीच में खेलने जाती थी। क्योंकि बुआ का घर बहुत सुन्दर और जापानी खिलौनों से सजा रहता था। मुझे खेलने में मज़ा आता था लेकिन यह कहानी मुझे उस समय बिल्कुल भी नहीं मालूम थी, मैं तो केवल तीन साल की थी।

अब मेरे दो घर हो गये। एक तरह से दो बाप, दो माँ भी। मतलब “दोनों हाथों में लड्डू” यानि सब चीज़ों से भरपूर। न्यू मार्केट में बाबा की गद्दी और निवास स्थान एक मकान में, भाऊ की दुकान के ठीक सामने न्यू मार्केट में, जीजा जी यानि दादा आनन्द किशोर की दुकान दो मकान छोड़कर तथा नीचे की सभी दुकानें जैसे मेरी ही दुकानें थीं। सबको यह तो मालूम था कि यह लखी बाबू की बेटा है। बाबा तो बहुत नामी-गिरामी थे। धन, मान, सम्मान में सबसे आगे थे। अतः छोटी बच्ची होने कारण मैं भी ऐसी हरकतें करती थी जैसे सभी बच्चे करते हैं। मैं फ्राक पहनती थी लेकिन उसमें दो-चार जेबें ज़रूर होती थीं, नहीं तो मार्केट में जब जाऊँगी तो चाकलेट, बिस्कुट आदि किसमें रखूँगी? मुझे कोई भी चीज़ चाहिए होती थी तो दुकान

पर चली जाती थी और जो पसन्द होता था वह ले आती थी। फिर दुकानदार कहता था, बेटा, पैसा? तो मैं कहती थी, ‘बाबूजी’ से ले लेना। इतना कहकर मैं तो खाने, खेलने में लग जाती थी और फिर घर आ जाती थी। बाबा मुझे रोज़ जेबखर्ची देते थे कि बच्चों को मांगने की आदत न पड़े। रोज़ सुबह सभी बच्चों को रुपया देते थे। उस समय ये कागज़ के नोट तो थे नहीं, सोने और चाँदी के सिक्के थे। अतः समझो, बाबा ने दो रुपया दिया, फिर कहेगा बच्ची इसमें पूरा ही चाकलेट, बिस्कुट नहीं खाना, कुछ दान भी करना क्योंकि दान करने से तुम अगले जन्म में महारानी बनोगी। मैं उस समय से यही समझती थी कि जब दान करने से महारानी बनूँगी तो पूरा एक रुपया ही क्यों न दान करूँ। इसलिए जो जेबखर्च मिलता था, उसे किसी गरीब, भिखारी को दे देती थी। मन में यह तो रहता ही था कि सामान तो मुझे बिना पैसे के भी मिल जायेगा, बाबूजी अपने आप पैसे दे देंगे। मुझे अगले जन्म में महारानी बनना है, तो दान करना ठीक है। बस, यह बात बचपन से ही बुद्धि में नेचुरल रूप से बैठ गयी थी। यह सब करके जब मैं घर में पहुँचती थी तो बाबा प्यार से बुलाते थे और पूछते थे कि आज पालु ने क्या-क्या मार्केट से खरीदा? मैं कहती थी, बाबा, यह-यह सामान लिया। अच्छा बच्ची, पैसा उसको दिया? मैं कहती थी, बाबा, वो तो नहीं दिया। फिर बाबा के पास उस दुकानदार के बिल (Bill) दूसरे दिन आ जाते थे कि बच्ची ने यह-यह सामान लिया है। वे गद्दी से ही पैसा ले जाते थे। परन्तु बाबा जानना चाहता था कि यह जेबखर्च का क्या करती है। तब मैं कहती थी कि बाबा आप जो कहते हो ना कि दान करने से तुम अगले जन्म में महारानी बनोगी, इसलिए मैं पूरा ही दान कर देती हूँ। यह सुन बाबा और ही प्यार करते थे और कहते थे, कोई बात नहीं बच्ची, तुम्हारे दान के संस्कार बहुत अच्छे हैं। इस प्रकार मुझे चिन्ता नहीं रहती थी कि बाबा क्या कहेगा। तो दान भी करती थी और चाकलेट, बिस्कुट, खिलौने फ्री में ले आती थी। यह

तो थी मेरी बचपन की नटखट बुद्धि।

भक्ति-पूजा

हरेक का जीवन एक कहानी ही है। 84 जन्मों में भिन्न-भिन्न रूप से सभी आत्मायें भाग्य अनुसार अपना-अपना पार्ट बजाती हैं। मुझ में पूजा-पाठ वा भक्ति भावना के संस्कार बचपन से ही भरे थे। बाबा ने युक्ति से हम सभी बच्चों के अन्दर ये संस्कार एक विशेष नियम के आधार पर नेचुरल डाल दिये थे। घर की मर्यादा अनुसार नहाना, स्कूल जाना, पढ़ाई करना आदि तो सभी को करना ही था लेकिन जब तक विधिपूर्वक नहला-धुलाकर, साफ़ कपड़े पहनाकर अंग्रेज़ आया (mad servant) तैयार नहीं कर लेती थी और मैं पूजा नहीं करती थी तब तक खाना तो छोड़ो दूध भी पीने को नहीं मिलता था। पूजा का समय भी फिक्स (निर्धारित) होता था।

मेरा जन्मपत्री का नाम तो पार्वती था लेकिन प्यार से बाबा और बाक्री सब 'पालु' ही कहते थे। गणेश मेरा बचपन का प्यारा इष्ट था। जब मैं पूरा तैयार हो जाती थी तो पूजा में आधा घण्टा समय देना ही होता था पर सोचती थी आधे घण्टे की पूजा को कैसे बिताऊँ ताकि फिर कुछ खाने को भी मिले। लौकिक लोगों में अधिकतर का कहना है—पहले पेट पूजा, फिर काम दूजा। उसी कलियुगी काल में भी बाबा के घर का नियम था—पहले भगवान की पूजा, फिर पेट पूजा। इस विधि के अनुसार अपने प्रिय गणेश चाचा को तिलक-बिन्दी लगाकर मैं बहुत प्यार से सजाती थी जिसमें आराम से आधा घण्टा बीत जाता था। बाक्री भाई-बहनें आरती, चन्दन, फूल आदि चढ़ाते थे। पूजा पूरी हो जाती थी फिर इन्तज़ार करते रहते थे। मैं चन्दन की लकड़ी वा केशर को घिस-घिस कर कटोरी भरकर तैयार करती थी। फिर माचिस की तीली से गणेश की पूरी सूंड, जो बहुत लम्बी होती थी, उसके ऊपर छोटी-छोटी बिन्दी लगाकर, सुन्दर कला से पूरा ही सजा देती थी। इसमें



मेरा बहुत समय प्यार से निकल जाता था। माथे पर तिलक लगाती थी तथा लम्बे-चौड़े कानों को भी रोज़ नये-नये प्रकार से सजाती थी। मुझे यह सब करते देख बाबा और मैय्या भी खुश होते थे कि देखो पालु को पूजा में कितनी लगन है! लेकिन दिल की बात बताऊँ? आपको तो हंसी आयेगी, यह सच है कि सुबह-सुबह उठते ही भूख लग जाती थी, चाकलेट, बिस्कुट आदि याद आते

थे लेकिन खा नहीं सकती थी। चारों तरफ़ पहरा रहता था। इसलिए समय पास करने के लिए गणेश चाचा को मैं बहुत सजाती थी। इसमें कभी चन्दन की बिन्दी छोटी होती तो बड़ी करना, कभी बड़ी होती तो छोटी करना, पोंछना, फिर लगाना यही बहुत समय लेता था। पूरा सजाने पर बाबा वा मैय्या भी हाथ जोड़कर गणेश जी को प्रणाम करते थे। इस प्रकार, भगवान के प्रति श्रद्धा वा विश्वास के साथ-साथ पूजा-पाठ वा घर की मर्यादा का पालन करने का संस्कार बाबा ने बहुत अच्छी तरह से हमारे में भर दिया।

स्कूल और पढ़ाई

आपको यह भी जानकर हंसी आयेगी कि बचपन में पढ़ाई में भी मेरा मन बिल्कुल नहीं लगता था। बस यही रहता था कि स्कूल जाना है, आना है और किसी भी तरह पास होना है। बाबा की बेटी होने के कारण मुझे स्कूल में भी सभी जानते थे लेकिन खास टीचर तो बहुत प्यार करती थी। साधारण प्रश्नों का तो मैं ठीक-ठीक जवाब दे देती थी लेकिन कई बातों में दिमाग

लगाना पड़ता था, उनमें कमज़ोर थी। मैं क्या युक्ति करती थी कि परीक्षा से पहले ही टीचर को एक सोने की अंगूठी गिफ्ट (सौगात) में दे देती थी। बाबा वैरायटी (तरह-तरह के) गहनें पहनाता था, उनमें से कुछ-न-कुछ देने से मैं हमेशा ही पास होकर आती थी। इससे मैं भी खुश और परिवार वाले भी खुश। इस प्रकार, 3-4 क्लास पास की हैं, यही मेरी पढ़ाई है। वास्तव में पढ़ाई में तो कमज़ोर थी लेकिन ज्ञान के बाद बाबा ने ही बुद्धिमान बनाकर, टीचर बना दिया जो सारा देश-विदेश आज मुझे बहुत ऊँची और सम्मान की नज़रों से देखता है।

प्रातःकालीन सैर

यह भी प्रतिदिन की दिनचर्या में शामिल था। सुबह-सुबह उठकर बाबा के साथ हम सभी बच्चे मार्निंग वाक (प्रातःकाल में घूमने) जाया करते थे। कलकत्ता शहर के बीचों बीच दर्शनीय स्थान (Tourist place) विक्टोरिया मेमोरियल वा इडेन गार्डेन घर से बहुत नज़दीक थे। इडेन गार्डेन आधा किलो मीटर और विक्टोरिया मेमोरियल एक किलो मीटर की दूरी पर ही थे। फिर भी बाबा हमें गाड़ी में ले जाया करते थे। ये दोनों ही स्थान अंग्रेज़ों के ज़माने में यादगार के रूप में बनाये गये थे। जैसे आगरा का ताजमहल मार्बल का बना हुआ है, वैसे ही कलकत्ते का विक्टोरिया मेमोरियल भी सफ़ेद मार्बल का बना हुआ है। यह अंग्रेज़ों की विजय का प्रतीक है। इसके अन्दर उस समय की यादगारों का म्युजियम है। उसके चारों तरफ़ रिंग रोड की तरह घूमने के लिए सड़क है। पानी के छोटे-छोटे सुन्दर तालाब हैं। फूलों वा फलों के पेड़ों से आज भी यह एक दर्शनीय, रमणीक स्थान बना हुआ है। उसके ठीक सामने ब्रिगेड परेड ग्राउण्ड के नाम से कलकत्ता का सबसे बड़ा, खुला, हरा-भरा पार्क है जहाँ सभी खेलने, खाने, पिकनिक मनाने और घूमने के लिए आते हैं। जैसे मुंबई का चौपाटी है वैसे ही इसका रात में अलग रूप और



विक्टोरिया मेमोरियल हॉल

दिन में अलग रूप होता है।

इडेन गार्डेन तो ठीक गंगा (हुगली) नदी के किनारे बसा हुआ है जिसके एक भाग पर अभी क्रिकेट ग्राउण्ड बना दिया गया है तथा उसके ही दूसरे भाग में 'नेताजी इन्डोर स्टेडियम' है जिसमें 25000 लोग बैठ सकते हैं। यह खेल-कूद वा अन्य कार्यक्रमों के लिए विशाल हॉल बनाया हुआ है। उस समय यहाँ नौका विहार, खेलकूद के कई स्थान, फव्वारे आदि थे। अतः रोज़ सुबह हम इन दोनों स्थानों पर जाया करते थे। कभी गंगा के किनारे बड़े-बड़े जहाज़ों को देखने वा घूमने तो कभी इडेन गार्डेन, तो कभी विक्टोरिया मेमोरियल जाते थे। पैदल जाने में 8-10 मिनट का समय लगता है।

चंचलता करना

एक दिन मैं और मेरा छोटा भाई नारायण दोनों बाबा के पास गद्दी पर ऐसे ही खेलते-खेलते चले गये। बाबा बहुत बिजी था लेकिन अकेला था,

दुकान के ही एक-दो आदमी थे। बाबा, छोटे-छोटे हीरों को आँख में लगाकर देख रहा था। इसलिए बाबा का बुद्धियोग हीरों की जाँच करने में ही लगा हुआ था। मुझे घर की तरह अकेला बाबा दिखायी दिया तो मैं पीछे से कंधों के पास से होकर, गले में दोनों हाथ डालकर झूले की तरह झूलने लगी। झूलते-झूलते चंचलता से एक हाथ से बाबा की पुड़िया, जो हीरों से भरी थी, उसे ऐसा धक्का दिया जो सारे हीरे इधर-उधर बिखर गये। कागज़ की पुड़िया एक तरफ़, तो सभी हीरे गद्दी के ऊपर-नीचे उछल गये। अब बाबा का ध्यान मेरे पर आया और कहा, “अरे बच्ची, यह क्या कर दिया? सारे हीरे गिरा दिये। बाबा तो उनको परख कर, छंटाई कर अलग-अलग कर रहा था, तुमने सब मिला दिया। जाओ, घर जाओ, ऐसे समय पर नहीं आना।” फिर बाबा ने झट से पान खिलाकर हम दोनों को घर भेज दिया। हम दोनों भाई-बहन घर आ गये। जैसे रोज़ खेलते, खाते, पीते थे वैसे ही नेचुरल दिनचर्या थी।

दूसरे दिन जब हम घूमने गये तो हमने बाबा को कहा कि आज हम इडेन गार्डन जायेंगे। बाबा, जहाँ हम कहते थे वहीं ले जाया करते थे। लेकिन मन में राज़ की बात कुछ और थी। 10-15 मिनट खेलने के बाद हम दोनों ने बहाना बनाया और बाबा से कहा, “बाबा आज पेट में बहुत दर्द है, मैं घर जाऊँगी।” बाबा ने तो सच मानकर ड्राइवर को कहा कि बच्चों को घर छोड़कर वापिस गाड़ी ले आना। हम दोनों तुरन्त घर चले आये। अब घर में प्रथम मंज़िल (तल्ले) में गद्दी (दुकान) थी। रोज़ सुबह-सुबह दरबान या नौकर आदि गद्दी की सफ़ाई करते थे, कुछ सामान गिरा हुआ हो अथवा इधर-उधर हुआ हो तो बाबा को दिन में दे देते थे।

मुझे तो मालूम था कि हमने कल जो हीरे बाबा के हाथों से गिराये थे वे तो गद्दी के नीचे भी गिरे थे तथा इधर-उधर, ऊपर-नीचे ज़रूर मिलेंगे। नारायण और मैं दोनों गद्दी में ही घुस गये। मुनीमजी ने पूछा, आज सुबह-

सुबह क्यों आये हो? तो हमने कहा, कुछ काम है। वह रोक तो नहीं सकता था, हम तो रोज़ दिन में आते थे। फिर हमने जो भी हीरे दिखायी दिये उन्हें खोज-खोज कर उठा लिया। जितनी जल्दी-जल्दी उठा सके पूरी गद्दी की छानबीन करके, गद्दी की चादर, तकिये, सामान आदि इधर-उधर करके हमने हीरे निकाले, पुड़िया बनाकर जेब में डाल लिये, फिर घर चले आये।

थोड़ी देर बाद बाबा के आने का समय हो गया। बाबा घर में आने के पहले गद्दी होकर आते थे। जैसे ही बाबा ने गद्दी में प्रवेश किया तो गद्दी में तो तूफ़ान मचा हुआ था। सारा सामान इधर-उधर पड़ा हुआ देखा तो आश्चर्य से मुनीमजी को पूछा कि यह किसने किया? मुनीमजी ने कहा कि आज सुबह-सुबह पालु और नारायण आप से पहले ही आ गये थे तथा सारे हीरे जो कल उन्होंने आपके हाथ से इधर-उधर गिराये थे, चुन-चुनकर पॉकेट में भरकर ले गये हैं। अच्छा, यह बात है क्या? बाबा तो बहुत चतुर सुजान और बहुत ही विशाल दिलवाला था। एक सेकेण्ड में सब समझ गया कि यह तो बच्चों की रमणीक चंचलता है। कोई बात नहीं, गद्दी से हीरे घर ले गये हैं, वो तो मिल जायेंगे। अतः बाबा बेफ़िकर हुआ और जैसे रोज़ आता था वैसे ही घर में आया। हमें डर था कि बाबा आने पर कुछ कहेगा तो क्या करेंगे। चोर के मन तो डर रहता है ना? परन्तु मज़े की बात यह थी कि बाबा को तो सब कुछ पता था कि कितने हीरे थे, कितने गिर गये थे, कितनी पुड़ियाँ थीं। सारा समाचार जानने पर भी बाबा ने एक शब्द भी नहीं कहा कि आज गद्दी पर यह-यह क्यों किया?

घर में आने के बाद, नहाना, पूजा-पाठ तथा भोजन आदि करने के बाद दिन में 10 बजे के करीब बाबा तैयार होकर गद्दी में जाने वाले थे तो अचानक और जानबूझ कर बाबा ने मुझसे पूछा, “पालु बेटा, आज मालूम है, गद्दी पर सुनार (कारीगर) खाली है, कोई काम नहीं है, तुम्हें क्या चाहिए बोलो, आज फ्री टाइम में सुनार बना देगा।” बस मैंने कहा, “हाँ बाबा,

मुझे एक हीरे का 'बक्कल' (जो सिर पर बालों की सजावट के काम आता है) चाहिए।" बाबा ने फिर पूछा, "अच्छा और क्या चाहिए?" मैंने कहा, "हाँ बाबा, उसमें कुछ म्युजिक वाला बनाना चाहिए। नारायण ने भी अपनी अंगूठी बनाने की बात कही।" बाबा ने सब ऑर्डर लेकर कहा, "अच्छा बच्ची, इसमें तो बहुत हीरे लगेंगे, शायद कुछ कम पड़ेंगे, आज ही सुनार फ्री है लेकिन कुछ हीरे और चाहिए। क्या तुम्हारे पास भी कुछ हीरे हैं, तो सब मिलाकर बाबा सुनार को अभी ही दे देगा तो रात तक बन जायेगा।" हम भोले, बुद्ध बच्चों को इतनी तो अक्ल थी ही नहीं कि कुछ छिपायें इसलिए झट कहा, "हाँ बाबा, मेरे पास इतने हैं, नारायण ने भी कहा है कि उसके पास इतने हैं।" बाबा ने कहा, "ले आओ, तुरन्त अभी सुनारे को दे देता हूँ, कल सुबह बक्कल और अंगूठी मिल जायेंगे।"

बाबा कहते थे – बच्चियाँ देवियाँ हैं

ज्वैलर बाबा को बच्चों को गहने पहनाने का, अच्छे-अच्छे रंगीन कपड़े पहनाने का बहुत शौक था। बाबा का स्वभाव बहुत विचित्र और दुनिया वालों से अलग था। उस समय हम कलकत्ते में रहते थे, तब कलकत्ता ही अंग्रेजों की राजधानी थी। विदेशी वहाँ बहुत आते थे। बाबा हम बच्चियों को शक्ति के रूप में देखता था। कहते थे, ये बच्चियाँ देवियाँ हैं। बाबा जो भी नयी ज्वैलरी बनाता था उसको पहले मुझे पहनाता था। जब ग्राहक गद्दी पर आते थे तो उनको बाबा सैम्पल दिखाता था, कैटलॉग (catalogue; सूची-पुस्तिका) दिखाता था। सब देखने के बाद वे लोग कहते थे, लखीराज बाबू, आपकी बेटी ने जो पहनी है ना वैसी ही डिटो ज्वैलरी हमें बनाके देना। मैं भी वहीं बैठी रहती थी अथवा वहाँ आया-जाया करती थी, तो वे मुझे देखते थे।

एक बार कलकत्ते में रानी एलिज़ाबैथ आयी थी। उस समय बाबा ने हीरों का एक बक्कल बनाया था जिसका सूर्य की किरणों जैसा डिज़ाइन था, पहनने पर ट्यून बजती थी। थी हीरों की चीज़ लेकिन उसमें ट्यून बजती



नीचे बाबा के साथ बैठे हैं दादी निर्मलशान्ता जी, सन्देशी दादी। पीछे खड़े हैं दादी प्रकाशमणि जी, आलराउण्डर दादी आदि।

थी। उसको पहनाकर बाबा हमें रानी के पास ले गये। बाबा ने तो रानी को बहुत ज्वैलरी दिखायी। वह उनमें से भी कुछ ले रही थी और मेरी तरफ भी देख रही थी। उसने मुझे उठाकर अपनी गोद में बिठाया तो उस बक्कल में ट्यून बजने लगी। उसने कहा, लखीराज बाबू, आपकी बेबी के पास यह जो ज्वैलरी है ना वैसे ही मुझे एक चाहिए। उसको तो वह मांग नहीं सकती थी और बाबा भी उसको दे नहीं सकता क्योंकि मैंने पहना था, उनके सामने

वही तो उतारकर नहीं दे सकेंगे ना ! बाबा ने कहा, ठीक है वह बन जायेगा। बाबा हमारा वण्डरफुल तो था ही। रात को हम सोते थे तो सारी ज्वैलरी उतारकर सोते थे। सवेरे उठकर घूमने जाते समय मैंने कहा, बाबा मुझे वो बाजे वाला बक्कल चाहिए। बाबा ने कहा, बच्ची तुम बासी रोटी खाओगी ? मैंने कहा, नहीं, मैं तो गरम-गरम, ताजी रोटी खाऊँगी। फिर बाबा ने कहा, अच्छा, फिर वह पुराना, बासी बक्कल कैसे पहनोगी, तुमको फस्ट क्लास नया बक्कल दूँगा। वह तो पुराना मॉडल हो गया। यह सुनकर मैं बहुत खुश हो जाती थी कि मैं नये मॉडल वाली नयी ज्वैलरी पहनूँगी। इस प्रकार, बाबा बच्चों को सदा खुश रखता था, कभी हमारा चेहरा छोटा होने नहीं देता था। जो हमने कल पहना था उसकी आज बिक्री कर देते थे। उसी प्रकार, वह बाजे वाला बक्कल रानी के पास चला गया। बाबा हमें रोज़ नयी-नयी ज्वैलरी पहनाते थे। इसको देखकर बाबा का पार्टनर बाबा से कहता था, तुम रोज़ नयी-नयी चीज़ बच्चों को पहनाते हो और उसी को बेचते हो, ऐसे क्यों करते हो ? तब बाबा कहता था, देखो सेवकराम, ये बच्चियाँ शक्तियाँ हैं, एक कन्या सौ ब्राह्मणों से उत्तम होती है। इनको पहनाकर बेचने से अच्छा दाम मिलता है। सेवकराम जी पार्टनर था ज़रूर, लेकिन बिजनेस में उतना ध्यान नहीं था। बिजनेस सारा बाबा के द्वारा ही चलता था।

उपरोक्त बक्कल के सम्बन्ध में मुझे एक घटना याद आ रही है। सन् 1980 में मैं विदेश यात्रा पर गयी थी। उस समय करीब 40 देशों में चक्कर लगाया था। यात्रा के दौरान मैं लंदन भी गयी थी तो रानी एलिज़ाबैथ का महल देखने भी गयी थी। वैसे तो वहाँ पब्लिक को जाने देते नहीं हैं लेकिन लंदन के अपने भाई-बहनों ने रानी के मैनेजर को बताया था कि यह हमारी संस्था के संस्थापक की बेटी है तो मैनेजर हमें राजमहल दिखाने के लिए ले गया।

वह मेरा हाथ पकड़ कर कहने लगी—

तुमको खाना खिलाने के बग़ैर मैं नहीं छोड़ूँगी

राजमहल देखते-देखते हम उस शो-केस के पास आये जिसमें तरह-तरह की ज्वैलरी रखी हुई थीं। उस ज्वैलरी में वो बाजे वाला बक्कल भी था। उसको देखते ही मैंने उस मैनेजर से पूछा, इस बक्कल में ट्यून बजता है ना ? मुझे यह नहीं पता था कि वहाँ की किसी चीज़ के बारे में कुछ बोलना नहीं चाहिए। उसको देखते ही मुझे तो बचपन का वो दृश्य याद आ गया था इसलिए उससे पूछ लिया। वह एकदम फंक हो गया। ये तो ब्रह्माकुमारियाँ हैं, इनको रानी की प्राइवेट चीज़ों के बारे में कैसे पता लगा ? इस शो-केस को ताला लगाया हुआ है, फिर इस बक्कल में ट्यून बजता है, यह इन्हीं को कैसे पता लगा ? शायद ये कोई जासूस हैं ! उस मैनेजर ने जाकर रानी को बता दिया। रानी ने कहा, अच्छा, ले आओ, उससे मैं पूछती हूँ कि वह कौन है। जैसे ही हम उसके सामने गये तो उसने मुझे पहचान लिया। मुझे देखते ही उसने गले लगाया और पूछा, बाबा कहाँ है। मैंने बाबा के बारे में सारी बात बताई तो उसे बहुत दुःख हुआ। फिर उसने अपने सेक्रेटरी से कहा, उस बक्कल को तो इसके बाप ने ही बनाया है। इसके पहने हुए बक्कल को देखकर ही हमने यह बक्कल खरीदा था, इसलिए इसको मालूम है कि इसमें ट्यून बजता है। वह सेक्रेटरी को बताने लगी कि इसके बाप का स्वभाव बहुत स्वीट था। फिर उसने मुझसे पूछा कि तुम बचपन में तो गले, हाथ, बालों आदि में बहुत ज्वैलरी पहनती थी, रंगीन कपड़े पहनती थी, अब क्या हो गया ? सफ़ेद साड़ी पहनी है, कोई ज्वैलरी भी नहीं पहनी है ? ये ट्यून वाला बक्कल पहनोगी ? मैंने कहा, नहीं। अब तो मैं संन्यासी बन गयी हूँ, जेवर आदि नहीं पहनती। उसने बहुत प्यार और इज़्जत दी। वह कहने लगी— यह खाओ, वह खाओ। हमारे भाइयों ने उसको समझाया कि ये इस प्रकार की कोई चीज़ नहीं खाती हैं। वह मेरा हाथ पकड़ कर कहने लगी, तुमको

खिलाये बगैर मैं छोड़ूंगी नहीं। यह कैसे हो सकता है कि हमारे पास आयी हो और बिना कुछ खाये जाओ! वह बताने लगी कि इसके बाप के पास हम जाते थे तो वह हमें खिलाये बगैर नहीं भेजता था। हम ग्राहक थे, वह व्यापारी था फिर भी वह हमें खिलाकर ही भेजता था। हम तो इसको ऐसे जाने नहीं देंगी। मैं मुस्कुरायी। किसी ने कहा, ठीक है आप जूस पिला दीजिये। फिर उसी समय जूस निकलवाया। हमने उसको बाबा का सन्देश भी दिया कि सतयुग में राजाओं का राज्य होगा, आप हैं ही राज घराने की, तो आप को भी उस सतयुग, स्वर्ग में चलना होगा। वह मुस्कराती रही और कहा, ज़रूर चलेंगी। ऐसे थोड़ा समय बातचीत चली। वह बहुत खुश हो गयी। ✪



सन् 1980 में दादी निर्मलशान्ता जी विदेश यात्रा पर गयी थी, उस समय एक शहर के मेयर को ईश्वरीय सन्देश देते हुए।

लौकिक से अलौकिक की ओर

बचपन तथा दान-पुण्य

भक्तिकाल में बाबा खर्ची के लिए मुझे इतने पैसे देता था कि सारे दिन मैं कभी मम्मी या बाबा से दुबारा माँगना नहीं पड़ता था। एक बार हमारे घर पर दोपहर में एक गरीब ब्राह्मण औरत आयी और मम्मी से कहने लगी— हमारी लड़की की शादी है, इसलिए हमें कुछ पैसे चाहिए। मम्मी ने कहा, ठीक है, मैं बाबू जी से पूछूंगी, कल आकर ले जाना। मैं रसोई घर में सब बातें सुन रही थी। वह औरत जा रही थी लेकिन मम्मी ने उसको कुछ दिया नहीं था। मैं रसोई घर के पीछे के दरवाजे से बाहर गेट पर गयी और एक दिन पहले बाबा ने मुझे जो सैम्पल वाली सोने की चूड़ियाँ पहनायी थी, वे उतारकर उस औरत के हाथों में रख दी। वह बेचारी घबराकर कांपने लगी कि इस छोटी बच्ची ने मुझे ये सोने की चूड़ियाँ दी हैं लेकिन लोग मुझे चोर समझेंगे। मैंने उसको कहा, डरो नहीं, जाओ, कल शादी के समय तुम इनको अपनी बच्ची को पहना देना। उसको भेजकर मैं पीछे के दरवाजे से अन्दर आ गयी। दोपहर में जब बाबा भोजन पर आये तो मैं भी बाबा के पास बैठी थी। बाबा ने मेरे हाथों को देखा तो मुझसे पूछा, बेटा, चूड़ियाँ कहाँ हैं? मैं चुप रही। बाबा ने दुबारा पूछा, बच्ची, कल तुमको चूड़ियाँ पहनायी थीं, वो कहाँ गयीं? चूड़ियों बगैर खाली हाथ अच्छे नहीं लगते। फिर भी मैं चुप रही। यह बात बाबा को मालूम थी कि मैंने चूड़ियाँ उस गरीब औरत को दी हैं क्योंकि उसने सीधा नीचे गद्दी पर जाकर मैनेजर को बता दिया था की उस बच्ची ने मुझे दान में दी हैं और कहा है कि शादी पर लड़की को पहना देना। दान की हुई वस्तु को वापिस कैसे लेंगे? मैनेजर ने उनसे लिया नहीं और बाबा को जाकर बता दिया। बाबा मुस्कराये और उस औरत को उन्हें ले जाने के लिए कह दिया। इसके बाद भोजन पर बाबा मेरे से पूछ भी रहे थे कि चूड़ियाँ कहाँ

रखी हैं और मुस्करा भी रहे थे। मैंने बोला, बाबा, एक गरीब ब्राह्मण औरत आयी थी और मैय्या से कह रही थी कि उसकी लड़की की शादी है, कुछ पैसा चाहिए। मम्मी ने दिया नहीं, कहा, बाबूजी से पूछेंगे, कल आओ। मुझे लगा कि बेचारी के घर में शादी है तो मैंने जाकर उसको चूड़ियाँ दे दी और कहा कि शादी में अपनी लड़की को पहना देना। बाबा चुप हो गया। बाबा भोजन करके गद्दी पर जाने लगा तो मैं पीछे जाकर कहने लगी, बाबा, उनको वापिस ले आऊँ। तब बाबा ने कहा, कोई बात नहीं बेटा। अच्छा किया दान करके। कोई बात नहीं। तुमको दूसरी बनवा देंगे। ऐसे कार्यों से बाबा को बुरा नहीं लगता था कि बच्ची ने सोने की चीज़ को दान कर दिया, हमें नुकसान हो गया। नहीं, बाबा अन्दर खुश होते थे कि बच्चों में बचपन से ही दान-पुण्य के अच्छे संस्कार भरते जा रहे हैं। कई बार हम जब खेलने-घूमने जाते थे और किसी बच्ची ने मेरे पहने हुए गहनों को मांगा तो मैं उतार कर तुरन्त दे देती थी। उसके माँ-बाप कितना भी मना करें पर मैं उनको वापिस नहीं लेती थी। फिर वो लोग बाबा के पास उनको वापिस करने जाते थे लेकिन बाबा उनको नहीं लेते थे। सामान वापिस नहीं लेते थे और बदले में पैसे भी नहीं लेते थे। क्योंकि बाबा की मान्यता थी कि बच्ची ने दान किया तो उसको न वापिस लेना चाहिए और न उसका मूल्य लेना चाहिए।

यह सब करते-करते बचपन पूरा होने लगा और जब मैं 15 साल की हो गयी तब बाबा ने मेरी शादी सिन्ध के मुखिया के यहाँ बड़ी धूमधाम से करा दी। पति का नाम मोतीराम मुखी था।

मैंने पियर घर में खाना बनाना, कपड़े धुलाई करना, सफ़ाई करना आदि काम तो किये ही नहीं थे। फिर भी ससुराल में कुछ तो काम करना चाहिए, तो मेरी सास मुझे हल्का आरामदायक काम खुद बैठकर सिखाती थी। एक बार की बात है, मुझे चावल साफ़ करने की सेवा दी। चावल से कंकड़ निकालने व धुलाई करके साफ़ कर, यही मेरा काम था। एक दिन क्या

हुआ कि चावल की पानी से धुलाई करते-करते मैं इतनी मग्न हो गयी कि हीरे की अंगुठी चावलों का गन्दा पानी निकालते समय नाली में बह गयी। मुझे पता नहीं चला। चावल साफ़ करके मैंने सास को कहा कि अब चावल तैयार हैं। बाकी काम सास खुद करती थी। सास की नज़र उँगली पर गयी और पूछा, बेटो, यह उँगली खाली कैसे है? इसमें तो हीरे की अंगुठी थी। यह सुनते मेरा भी ध्यान हाथ की तरफ़ गया और सोचा कि बात तो सही है। तुरन्त बुद्धि में आया कि चावल सफ़ाई करते पानी के साथ नाली में बह गयी होगी। इस बात पर मेरी सास तो परेशान व चिन्तायुक्त थी और मैं इसे बहुत साधारण, जैसेकि नहीं के बराबर समझ रही थी। क्योंकि मैं तो बचपन से ही दान-पुण्य करते हुए बाबा व बुआ के घर पली थी। हीरे की एक छोटी-सी अंगुठी चली गयी तो क्या बात है।

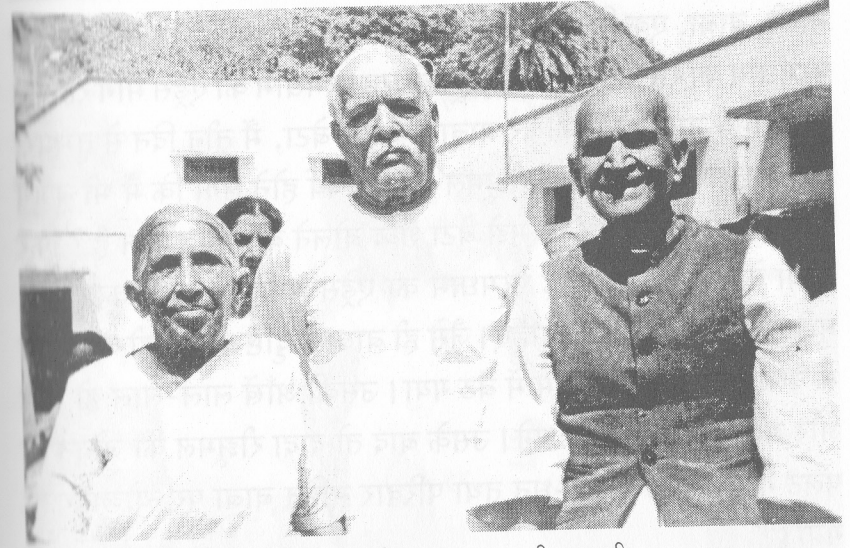
मैंने तुरन्त सास को कहा, माँ जी कोई चिन्ता की बात नहीं है, मेरे बाबूजी मुझे दूसरी अंगुठी पहना देंगे। मेरे घर में तो इनका भण्डार है, एक गयी तो क्या हुआ? बस मेरी यह बात सुनकर मेरी समझ, त्याग, लोभमुक्त स्थिति, बेफ़िकर स्थिति व अपने बाबा की शान को प्रत्यक्ष करने वाली समझ, सास का भी संकल्प बन्द हो गया। मुझे सावधानी मिली लेकिन मेरा सम्मान फिर भी ज़्यादा ही हुआ।

दोनों भाभियों – बृजेन्द्रा और सन्तरी की शादी मेरे से कुछ समय पहले हुई थी। शादी के बाद भी बाबा के घर पर मेरा आना-जाना रहता था और मैं रोज़ बाबा के साथ रात का भोजन करने आया करती थी। ससुराल से आने के लिए बाबा रोज़ मेरे लिए गाड़ी भेजता था, फिर भोजन के बाद खुद ससुराल छोड़कर जाता था। यह बाबा के साथ हमारी दिनचर्या थी। ऐसे करते-करते समय बीतता गया।

कल की बात कल देखी जायेगी

फिर अचानक बाबा में परिवर्तन आया। साक्षात्कार सबसे पहले दादी बृजेन्द्रा ने किया। हमें तो कुछ भी पता नहीं था। बाबा में शिव बाबा की प्रवेशता हुई, बाबा के घर में सत्संग चलता था, ॐ की ध्वनि बाबा लगाता था तो घर के कई सदस्यों को साक्षात्कार होने लगते थे। यशोदा मैय्या और बृजेन्द्रा दादी को भी साक्षात्कार हुए। रोज़ में तो मैय्या और बाबा को मिलने के ख्याल से जाती थी। तो एक दिन बाबा ने मुझे से कहा, बच्ची, तुम सत्संग करो, बैठो, ज्ञान सुनो। मैंने कहा, बाबा, अभी ज्ञान आदि नहीं सुनूंगी। ऐसे टाल-मटोल करती रही। एक बार क्या हुआ कि रोज़ की तरह बाबा से मिलकर रात को वापिस जाते समय मैंने बाबा से कहा, बाबा, कल मुझे लेने के लिए गाड़ी भेजना। तो बाबा ने कहा, कल का कल देखा जायेगा। बाबा की यह बात सुनकर मुझे थोड़ा दुःख हुआ। वापस ससुराल चली गयी और रात भर सोचती रही कि बाबा ने ऐसा क्यों कहा! सोचते-सोचते मैं सो गयी। फिर रात में मुझे साक्षात्कार हुआ। कभी बाबा को देखती हूँ, कभी श्री कृष्ण को। जैसेकि कोई मोनो एक्टिंग (mono acting; एकल अभिनय) होती हो। फिर आवाज़ आयी, उठो, जागो, जाओ, तुम्हें विश्व का कल्याण करना है। यह सुनते ही मेरी आँखें खुल गयीं। देखा तो कोई नहीं है। न बाबा है, न ही श्री कृष्ण। यह आवाज़ सुनते ही मुझे लगा कि मेरा बाबा ही श्री कृष्ण है और मैंने मन-ही-मन में प्रतिज्ञा की कि बाबा आप जो बोलेंगे वही करूँगी। यह देखते-सोचते सवेरा हुआ और लौकिक बेटी को जन्म दिया। फिर शाम को बाबा मुझे मिलने के लिए आया। बाबा ने कहा, बच्ची, बाबा ने ठीक कहा था कि कल देखा जायेगा। तो देखा बच्ची, तुम जा नहीं सकती। फिर तो मैंने बाबा से लिपट कर कहा कि बाबा, आप सचमुच में भगवान हैं क्योंकि उस समय बाबा में मुझे श्री कृष्ण दिखायी पड़ रहा था।

ऐसे करते-करते समय बीतता गया। कुछ समय के बाद परिवार सहित



बाबा के साथ सती माता तथा दादा रिझूमल जी
(दादी शान्तामणि जी और दादी सन्देशी जी के माता-पिता)

बाबा काश्मीर चले गये। मैं भी साथ में थी। वहाँ बाबा के साथ रहते-रहते ज्ञान की चटक बढ़ती गयी। फिर वहाँ पर भी परिवार के साथ सत्संग करना, ॐ की ध्वनि लगाना आदि करती थी।

पहलगाँव का रास्ता चाहिए या परमधाम का ?

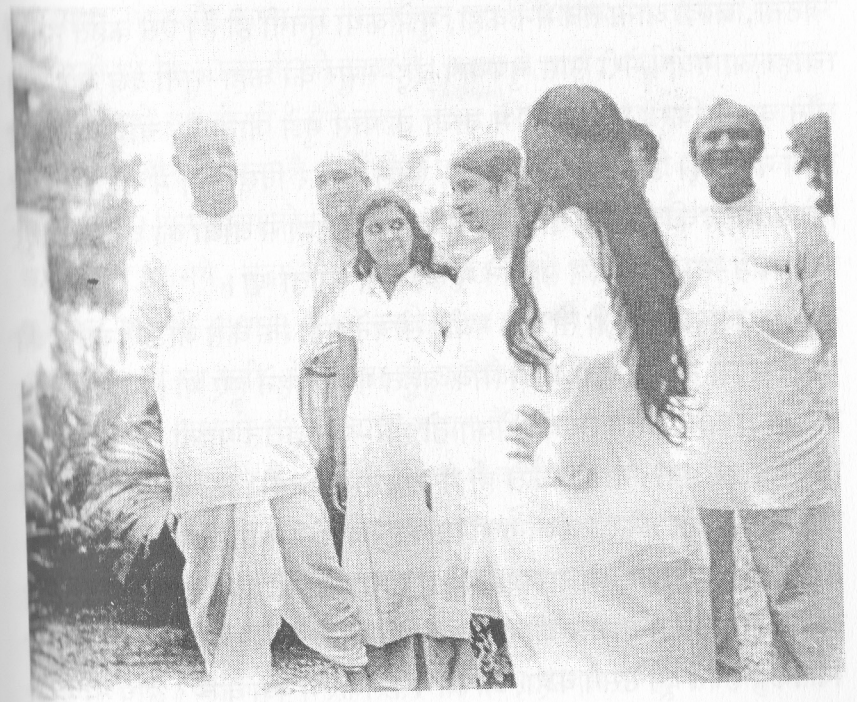
एक दिन की बात है, मैं काश्मीर में अपने कॉटेज (cottage; कुटीर) के पास घूम रही थी। उस समय शान्तामणि दादी के लौकिक पिता रिझूमल जी घूमते-घूमते वहाँ पर आये और मुझ से पूछा, पहलगाँव का रास्ता किधर है? मैंने कहा, पहलगाँव का रास्ता तो मैं नहीं जानती लेकिन परमधाम का रास्ता मालूम है, वो बता सकती हूँ। उन्होंने कहा, अच्छा परमधाम का रास्ता बता दो। मैंने कहा, चलिये मेरे साथ। उन्हें साथ लेकर अपने निवास स्थान पर गयी। उन्हें विजिटिंग रूम में बिठाकर मैं बाबा के पास गयी और

बोली, बाबा, एक सिन्धी भाई ने पहलगॉंव का रास्ता पूछा तो मैंने कहा, मैं परमधाम का रास्ता बता सकती हूँ। तो वह परमधाम का एड्रेस माँग रहा है। उसी समय उसके पास जाकर बाबा ने कहा, बेटा, मैं तीन दिन से तुम्हारा इन्तज़ार कर रहा हूँ। दादा रीझूमल को आश्चर्य होने लगा कि मैं भी बुजुर्ग और यह भी बुजुर्ग फिर भी मुझे बेटा शब्द बोलने वाला यह कौन है? फिर बाबा ने कहा, बेटा, तुम्हें परमधाम का एड्रेस चाहिए? उसने कहा, हाँ, मुझे परमधाम का एड्रेस चाहिए। जैसे ही बाबा ने दृष्टि दी वैसे ही वह ध्यान में चला गया और परमधाम में बैठ गया। उसकी आँखें लाल-लाल हो गयीं और आँखों से आँसू बहने लगे। उसके बाद तो दादा रीझूमल का जीवन ही पलट गया और तन-मन-धन तथा परिवार सहित बाबा पर न्योछावर हो गया।

बैलगाड़ी में चल पड़ी बाबुल के घर

सत्संग में बहुत कन्यायें-मातायें आती थीं। बाबा धीरे-धीरे मुरली में पवित्रता की बातें सुनाने लगे कि पाँच विकार छोड़ने हैं, काम विकार नरक का द्वार है। मातायें जो आती थीं वो भी अपने घर में जाकर अपने घर वालों से कहने लगीं कि हम ब्रह्मचर्य में रहेंगी। घरों में झगड़े शुरू होने लगे। हमारे घर वालों को भी पता पड़ गया। मेरे ससुर ने मुझे कहा, माँ-बाप के पास जाने के लिए तुम्हें मना नहीं है लेकिन वहाँ कथा सुनने नहीं बैठो। मैंने कहा, क्यों नहीं बैठना? मैं तो कथा सुनूँगी। रोज़ मुझे लेने के लिए बाबा गाड़ी भेजता था। एक दिन मेरे ससुर ने ड्राइवर को वापस भेज दिया और कहा कि आज वो नहीं आयेगी। उन्होंने मुझे बताया नहीं कि आज गाड़ी आयी थी।

बाबा का ड्राइवर मुसलमान था, वह बहुत अच्छा था। उसको मैं कार में ज्ञान सुनाती थी। वह कहता था कि तुम्हारा बाप बहुत अच्छा इन्सान है, वो खुदा-दोस्त है। उस दिन मुझे तो ज्ञान सुनने की लगन लगी थी। जब मैं



बाबा के साथ दादी निर्मलशान्ता जी और अन्य ब्रह्मा-वत्स

बाबा के पास जाने के लिए बाहर आयी तो ससुर ने रोक दिया और कहने लगा कि तुमको वहाँ जाना नहीं है, ज्ञान बिल्कुल नहीं सुनना है। मैंने कहा, क्यों नहीं जाना है, क्यों नहीं ज्ञान सुनना है? उसको गुस्सा आया तो उसने गुस्से में बोला, अगर तुम वहाँ जाओगी तो तुम्हारी टाँग तोड़ दूँगा। मैंने उनसे कहा, मैं अपने माँ-बाप के पास जा रही हूँ। मेरे बाप ने तुम्हारे घर में इसीलिए दिया है क्या कि मेरी टाँग तोड़ दो। तब उसने कहा, हम बाप के घर जाने के लिए मना नहीं करते, हम तुम्हें गाड़ी में भेजेंगे लेकिन शाम को छह बजे तक वापिस आना, कथा सुनने नहीं बैठना। जब मैं बाबा के पास जाती थी तो सत्संग करके और रात का भोजन करके आती थी, वहाँ से निकलते-निकलते रात के 10 बज जाते थे। जब उसने कहा कि कथा सुनने नहीं

बैठना, जल्दी आना तब मैंने कहा, मुझे कथा सुननी ही है। ऐसे कहते हुए मैं बाहर आ गयी। मेरी सास चुपचाप बहु-ससुर की कहा-सुनी देख रही थी। मैंने कहा, किसी भी हालत में बाबा के पास मुझे जाना है, चाहे पैदल भी क्यों न जाऊँ। उसने कहा, ठीक है, पैदल जाकर दिखाओ। मैं भी देखता हूँ पैदल चलने की कितनी ताकत है तुम्हारे में? वहाँ से बाबा का घर बहुत दूर था। कम-से-कम पैदल पहुँचने में ढेढ़ घंटा लगता था।

थोड़ा समय चली तो थक गयी। सोचने लगी कि कैसे जाऊँ? दूसरों की गाड़ी में जा नहीं सकती थी क्योंकि बहुत गहनें पहने हुए थी। उतने में एक बैलगाड़ी आयी। मैंने उसको रोका तो हीरे-जवाहरात पहनी हुई औरत को देख वह डर गया। गाड़ी रुकते ही मैं जाकर बैठ गयी। वह डरके मारे गाड़ी चलाये नहीं कि अकेली अंजान औरत को देख लोग क्या सोचेंगे? मैंने कहा, डरो नहीं, तुम चलो, बाज़ार आते ही मैं उतर जाऊँगी। वह डरते-डरते गाड़ी चलाने लगा। जब बाज़ार की गली आ गयी तो मैं उतर गयी और उससे पूछा कि कितने पैसे दूँ। उसने कहा, आपसे पैसे लेकर मैं क्या करूँ? आप तो दादा जी की बेटी हो। मुझे कुछ नहीं चाहिए। मैं घर में गयी तो मैय्या हैरान हो गयी। उसने पूछा, तुम कैसे आयी? जब गाड़ी भेजी तो उसको बोला कि आज तुम नहीं आओगी, तो अब कैसे आ गयी? मैं मुस्कराने लगी। मैय्या कहने लगी, तुम ठीक बताओ, कैसे आयी? घर वालों ने गाड़ी भेजी थी क्या? मैंने कहा, नहीं। फिर कैसे आ गयी? बाबा मुस्कराने लगे और कहने लगे, क्या तुम पैदल आयी हो? पैदल आने की ताकत तो तुम्हारे में है नहीं, तो कैसे आयी? मैंने कहा, बैलगाड़ी में। बाबा हंसने लगा और बोला, क्या तुम बैलगाड़ी में आयी? मैंने कहा, बाबा, बैलगाड़ी वाला बहुत डर रहा था। मैंने ही उसको कहा कि तुम डरो नहीं, शहर आते ही मैं उतर जाऊँगी। फिर बाबा को मैंने झगड़े का सारा समाचार सुनाया। तो बाबा के मुख से ये शब्द निकले, हाँ बच्ची, कंस और कृष्ण का खेल चल रहा है। मैंने भी कहा,

हाँ बाबा, कंस और कृष्ण का नाटक चल रहा है क्योंकि मैंने तो देखा था और समझती थी कि बाबा ही श्री कृष्ण हैं। बाबा ने कहा, बच्ची, क्या एक दिन तुम रुक नहीं सकती थी? मैंने कहा, बाबा, आप ही कहते हो कि ज्ञानामृत रोज पीना और पिलाना है तो मैं कैसे एक दिन छोड़ सकती हूँ! इसलिए मैं चली आयी। फिर बाबा को मैंने कहा, बाबा, मैं वापिस बिल्कुल नहीं जाऊँगी। बाबा चुप हो गये, कुछ बोला नहीं। कुछ दिनों के बाद बाबा हैदराबाद छोड़कर कराची आ गये, मैं भी उनके साथ कराची आ गयी। मेरी लौकिक बच्ची तो वहीं रह गयी, मेरी सास ही उसको पालती रही। वह मेरे से पहले ही बाबा को जानती थी कि दादा महान् हैं। वह मुझे भी बोलती थी कि तुम्हारे बाबा भगवान हैं। उनको दुनिया में कोई नहीं पहचानते। उसके मन में बाबा के प्रति बहुत आदर और पूज्य भावना थी। जब मैं घर से निकल रही थी तब उसी ने कहा था कि तुम इस बच्ची को संभाल नहीं सकोगी, तुम इसको मेरे पास ही छोड़कर जाओ, मैं इसको संभाल लूँगी। तुम कुछ दिन रहकर आओ। उसके बाद की कहानी तो आप जानते ही हैं कि हिन्दुस्तान-पाकिस्तान का पार्टिशन (विभाजन) हुआ तो हंगामा मचा। हम बाहर निकले ही नहीं, बाबा के पास ही रह गये और बाद में सब आबू आ गये।

सब तरह की सेवा सीखी

आलमाइटी बाबा की कमाल थी जो इतने बच्चों को संभाला। सभी को ड्यूटी बाबा-मम्मा देते थे। सेवा की मेरी बारी आयी। बाबा ने लौकिक में कभी कुछ भी नहीं करने दिया था। वही बाप लौकिक से अलौकिक बना और पारलौकिक बाबा उसमें आये तो बाबा ने हमें सब कुछ सिखाया और प्रैक्टिकल कराया जैसे गाड़ी चलाना, टोपियाँ बनाना, चप्पल बनाना। गाड़ी की सफ़ाई, रिपेरिंग करना आदि। मैं बोरी की ड्रेस पहनकर गाड़ी के नीचे जाकर सफ़ाई करती थी।



भवन निर्माण का कार्य करते हुए बाबा और बहनें

एक बार की बात है। बाबा ने मुझे कहा, बच्ची, मालपुआ (मीठा) बनाना आता है? मैंने कहा, बाबा कैसे बनता है? तो बाबा ने मुझे बताया कि आटा-चीनी मिलाकर तेल में तलने से पुड़ा बनता है। फिर बाबा ने कहा, बच्ची, कोई भी सेवा के लिए मन से भी कभी 'ना' नहीं बोलना, सदैव 'हाँ जी' का पाठ पढ़ते रहना है। विश्व का महाराजा बनना है तो सब कुछ आना चाहिए।

चली है विश्व की महारानी बनने...

यज्ञ में मेरी ड्यूटी यज्ञवत्सों को फैन्सी सामान देने की थी। जैसे अभी लच्छु बहन की है। उस समय कोई मांगता नहीं था। सामान खत्म होता तो ड्यूटी वाले उनके कमरे में रख कर आते थे। माँगने से मरना भला - यह लेसन (पाठ) था। एक बार यज्ञ में किसी भाई की चप्पल टूट गयी। मैं बाबा

के साथ कुछ बात कर रही थी। उस भाई ने कहा कि चप्पल टूट गयी है। मैंने कहा, बाहर मोची को दे दो। बाबा ने मुझे पास बुलाकर कहा, बच्ची, तुम्हारे पास मोची जितनी अकल भी नहीं है, चली हो विश्व की महारानी बनने। बस, बाबा का बोलना था और दूसरे दिन मैं और दूसरी 2-4 बहनें बाज़ार जाकर चप्पल बनाने का सामान लेकर आये। सबसे पहले बाबा के लिए चप्पल बनायी। बाबा क्लास कराने गया, तो हमने बाबा की पुरानी चप्पल उठाकर नयी चप्पल जो बनायी थी वह रख दी। बाबा ने क्लास के बाद चप्पल पहनी तो उन्हें लगा कि चप्पल नयी है, अच्छी है, नरम है। पास में मम्मा थी। मम्मा को सारी बात मालूम थी। चप्पल पहनकर बाबा बहुत शुश हुआ और कहा, अच्छा बच्ची, ज़रूर जाकर तुम विश्व की महारानी बनोगी। बाबा ने शाबासी दी। फिर हमने यज्ञ के 300 से भी ज्यादा भाई-बहनों के लिए चप्पल बनाना शुरू किया। मम्मा को भी हमने चप्पल बनाकर दी।

पुलिस वाले को भी खुदा-दोस्त का परिचय दिया

हिन्दुस्तान-पाकिस्तान का जब विभाजन हुआ तो वहाँ हिन्दू-मुसलमानों के बीच लड़ाई होने लगी। बाहर लूट-मार, छुरेबाजी, तलवारबाजी आदि होती थी। बाबा हमारे से अलग दूसरी जगह रहता था। बाबा हमारे पास सवेरे के समय मुरली सुनाने आ जाते थे। क्लास कराकर जाते समय देर हो जाती थी, बाहर कर्फ्यू लगा होता था। हमारे पास जो मुस्लिम ड्राइवर थे वे सब चले गये थे। तो मैं ही गाड़ी चलाकर बाबा को क्लास के बाद उनके बंगले पर छोड़ने जाती थी। एक बार की बात है कि बाबा हमारे साथ गाड़ी में बैठे थे। पुलिस वाले ने हाथ दिखाकर गाड़ी रोकने के लिए कहा। मैंने गाड़ी नहीं रोकी। बाबा ने कहा, बच्ची, पुलिस वाले ने हाथ किया, सीटी बजायी, फिर भी तुमने गाड़ी रोकी नहीं। वो वापसी में

तुमको पकड़ेगा। बाबा को उतार कर वापस उसी रास्ते से जब मैं आ रही थी, तो मैंने ही गाड़ी को रोका और पुलिस वाले से कहा, हमारी गाड़ी में यदि खुदा दोस्त बैठा हो तो तुम गाड़ी रोकने के लिए हाथ खड़ा नहीं करना। जब गाड़ी खाली होगी तो मैं रोक लूँगी। यह सुनकर पुलिस वाला सोचने लगा कि यह लड़की हमें ही ट्रेनिंग देने आयी है! ऐसा करना, वैसा करना। इस प्रकार कहकर, मैं उसको बाबा की तरफ़ से प्रसाद देकर आती थी। यदि उसने गाड़ी का नम्बर नोट किया होता था तो टोली खिलाकर नम्बर कटवा कर आती थी। इस तरह, कई बार पुलिस वाले बाबा को गाड़ी में बैठा देख गाड़ी को रोकते नहीं थे।

एक तरफ़ यज्ञ में हम काफी भाई-बहनें थे, दूसरी तरफ़ बाहर हिन्दू-मुसलमानों के लड़ाई-झगड़े अथवा हड़ताल आदि होती थी तो बाज़ार बन्द हो जाता था। बाबा कहता था, बाज़ार बन्द है, सब्जी वाले की सब्जी खराब हो जायेगी, गाड़ी लेकर जाओ और सब्जी लेकर आओ। हम सब्जी की दुकान का पिछला दरवाज़ा खुलवाते थे और उसके पास जितनी भी सब्जी होती थी सब गाड़ी में भरकर ले आते थे। फिर उसको तराजू से वजन करके, सब्जी वाले को बुलाकर सारी सब्जी के पैसे देते थे। बाबा कहता था, बच्ची, उसने जितनी सब्जी दी है उससे ज़्यादा पैसा देना। पैसा कम नहीं होना चाहिए क्योंकि समय पर उसने तुम्हें सब्जियाँ दी हैं। बाबा दूसरों का भी इतना ख्याल रखता था।

होम मिनिस्टर भी हँस पड़ा

जब हम हैदराबाद से कराची आये तो हमें बंगला चाहिए था। तो बाबा मुझसे कहता था, बच्ची, बंगला ले आयेगी? मैं तो बच्ची जैसी लगती थी, फिर भी मैं कहती थी, हाँ बाबा, ले आऊँगी। मैं कभी बाबा से यह नहीं पूछती थी कि बंगला कैसे लिया जाता है। क्योंकि बाबा के मुख से जो भी

बात निकलती थी वह प्रैक्टिकल में हुई पड़ी रहती थी। यह भी एक कारण था कि मैं बाबा को भगवान कहती थी। बाबा कहता था, बच्ची, वह बंगला बहुत बड़ा है, वह हमारे लिए अच्छा है। होम मिनिस्टर अल्लाह बख्श के पास जाओ और उसकी चाबी लेकर ही आना। मुझे डर नहीं लगता था क्योंकि देह-अभिमान तोड़ने के लिए बाबा ने हमारी ड्रेस ही बदल दी थी और 14 साल तक हमने चोटी बाँधी ही नहीं थी, बाल खुले रहते थे। बाबा कहता था, बच्चे, तुम शक्तियाँ हो इसलिए किसी से भी हमें डर नहीं लगता था। फिर बाबा ने कहा, जाओ बच्ची, अल्लाह बख्श के पास, डरना नहीं है, उसको उसी दृष्टि से देखो, खुदा दोस्त के भाव से देखोगे तो वह तुम्हें मदद करेगा। होम मिनिस्टर के पास जाना कोई छोटी बात नहीं होती। मैं फ़ॉक पहनकर खुद गाड़ी चलाकर गयी थी तो उसके सेक्रेटरी को मुझे रोकने की हिम्मत ही नहीं हुई। वह अन्दर जाकर मिनिस्टर से बोला कि एक बेबी आयी हुई है, आपसे मिलना चाहती है। बेबी आयी है तो अल्लाह बख्श थोड़ेही कानून सिखायेगा कि इस समय नहीं आना है, ऐसे आना है, वैसे आना है। जब बेबी आयी है और मिलना चाहती है तो वह कहता था कि ठीक है, ले आओ। लेकिन बाबा हमें यह नहीं बताता था कि मिनिस्टर के सामने क्या बोलना है। बाबा कहता था कि तुम उसके सामने जाओगी तब अपने आप टचिंग होगी कि क्या बोलना है। हाँ, तुम खाली हाथ नहीं आना, चाबी लेकर ही आना।

जब होम मिनिस्टर से मिली तो उसने पूछा, बोलो बेबी, कैसे आना हुआ? मैंने कहा, हमको मकान चाहिए। बड़ा-बड़ा मकान चाहिए। हमारे पास इतनी पार्टियाँ आयी हैं, वो रहेंगी कहाँ? हम भाई-बहनें अलग-अलग रहते हैं और सुबह-सुबह उठकर इकट्ठे बैठ सभी खुदा को याद करते हैं तो हमें बड़े-बड़े मकान चाहिए। यह सुनकर वह हंसता था, कहता था, अच्छा बेबी, देखेंगे। मैंने कहा, हमें तो अभी चाबी चाहिए। उसने सेक्रेटरी को



बाबा के साथ दादी निर्मलशान्ता जी और अन्य भाई-बहनें

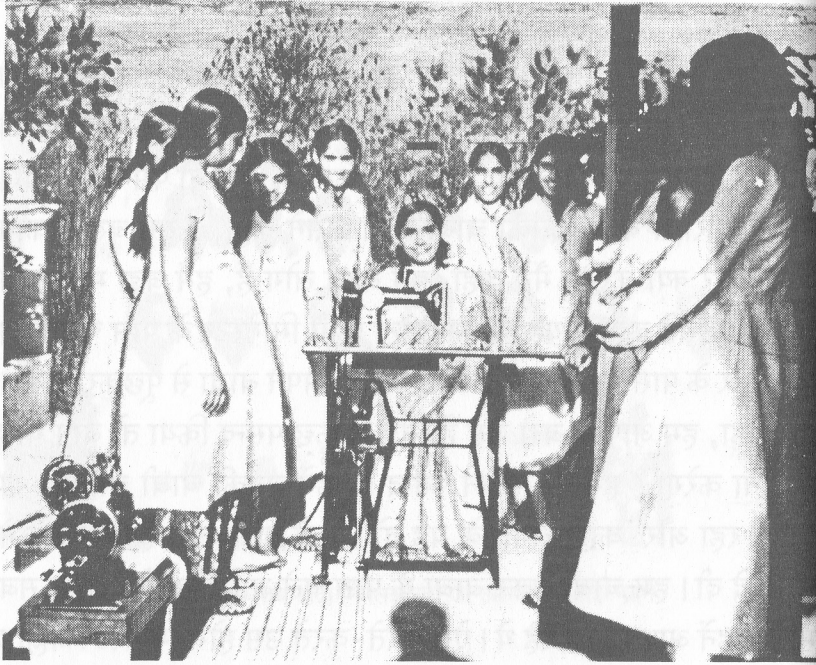
बुलाया और कहा कि देखो, यह बेबी कहती है कि चाबी चाहिए। फिर मेरे से कहता है कि बेबी, मकान कोई खिलौना है क्या? बोला है सेक्रेटरी को, वह जायेगा, देखेगा, एक-दो दिन ठहर जाओ। मिलने के बाद दे देगा। मैं कहती थी, नहीं-नहीं, हमें तो अभी चाबी ले जानी है, खाली हाथ नहीं जायेंगी। आप अल्लाह बख्श हो, खुदा ने आपको पूरी बख्शीश दे दी है, भगवान ने आपको सब कुछ दे दिया है। सब मकान आपके हाथ में हैं। आपके लिए तो खिलौने हैं ना! हमको चाबी चाहिए। मैं खाली हाथ नहीं जाऊँगी। हमारी मम्मा पूछेगी तो क्या बोलूँगी, मैं तो चाबी बगैर नहीं जाऊँगी। फिर उसने सेक्रेटरी को मुस्कराते हुए इशारा किया कि इसको फलानी ज़गह ले जाओ, फलाने मकान दिखाओ। फिर मुझे कहा कि इसके साथ जाओ, जो मकान पसन्द आये वह हमें बता देना। मैं कहती थी, आपको बताऊँगी ज़रूर लेकिन आप उसको कहिये कि जो मकान पसन्द आये उसकी चाबी

हमें दे दे।

जब सेक्रेटरी हमारे साथ चला तो उसे आश्चर्य हुआ कि यह इतनी छोटी लड़की गाड़ी भी खुद चलाती है! मैं साथ में एक बहन को ले गयी थी। सेक्रेटरी ने एक मकान दिखाया, उसमें 16 कमरे थे। हमें वो पसन्द आ गया। मैंने सेक्रेटरी से कहा, इसकी चाबी दे दो। उसने कहा, इतना बड़ा मकान आप लेकर क्या करेंगे। मैंने कहा, हम बहुत लोग हैं, हमें बड़ा मकान ही चाहिए। उसने कहा— यह मकान पसन्द है तो मिनिस्टर के पास चलते हैं। मिनिस्टर के पास गये तो उसने कहा, जाओ, अपने बाबा से पूछकर आओ। मैंने कहा, हम आप के बच्चे जैसे हैं, बच्चे ने कुछ पसन्द किया तो बाप थोड़े ही मना करेगा? हमें वो मकान पसन्द है, हमें उसकी चाबी चाहिए। वो हंसता रहा और कहने लगा कि यह तो छोड़ने वाली नहीं है। सेक्रेटरी ने चाबी दे दी। हम चाबी लेकर बाबा के पास चले आये। चाबी देखकर सब भाई-बहनें आश्चर्य खा रहे थे। ऐसे करते-करते उस होम मिनिस्टर अल्लाह बख्श से हने कई मकान ले लिये थे।

हमारी सिलाई टीचर थी – बड़ी दीदी

बाबा ने शुरू में सिलाई का स्कूल खोला। यज्ञ में इतने सारे बच्चे थे, सभी के कपड़े सिलाई करने होते थे। सबसे पहले बड़ी दीदी (मनमोहिनी जी) हमारी टीचर थी। वह हमें सिखलाती थी। मैंने दीदी के साथ सिलाई का काम बहुत समय तक किया। भाइयों के कुर्ते-पायजामे और बहनों की फ्रॉक होती थीं। फ्रॉक के बीच में 'ऊँ' होता था। बाबा सिलाई के साथ-साथ सफ़ाई भी सिखाते थे। रात में बाबा-मम्मा चक्कर लगाने आते थे। हम सभी के बिस्तर, पाँव आदि साफ़ हैं या नहीं, देखते थे। यदि किसी के पाँव साफ़ नहीं होते थे तो बाबा कहते थे, देखो, इसकी नींद भी तमोगुणी होगी। बाबा हर बात की गहराई में जाते थे।



बहनों को सिलाई सिखाती हुई दीदी मनमोहिनी जी

सेवा भी एक मनोरंजन

यज्ञ में हरेक यज्ञवत्स को हर काम करना पड़ता था। बाबा कहता था, 'ना' कहने वाला नास्तिक है। एक बार बर्तन मांजने की ड्यूटी मेरी लगी। 'ना' तो बोलना नहीं था, नहीं तो बाबा के पास रिपोर्ट चली जाती थी। मैं बर्तन मांजने लगी। उनमें एक बड़ा पतीला (टोपिया) था, उसमें राख डालकर उस टोपिये के अन्दर घुस गयी और उसको मांजने लगी। साफ़ ऐसे कर रही थी जैसे घूम-घूमकर डान्स करते हैं। उस पतीले के अन्दर मैं घूम-घूम कर साफ़ कर रही थी, उतने में सामने से बाबा-मम्मा आ गये। बाबा ने मुझे देखा और बोला, बच्ची, यह क्या कर रही हो? पतीले के अन्दर डान्स कर

रही हो क्या? मम्मा-बाबा को देखकर मैं बाहर आयी। बाबा कहने लगे, बच्ची, क्या बात है टोपिये में डान्स कर रही है? मैंने कहा, बाबा डान्स नहीं, साफ़ कर रही थी। आज बर्तन मांजने की ड्यूटी मेरी है। फिर बाबा ने मम्मा को कहा, बच्ची को बर्तन मांजने की ड्यूटी नहीं देना। बाबा ने यह इसलिए कहा क्योंकि मुझे दमे की बीमारी थी। तब से बर्तन मांजने की ड्यूटी से मेरी छुट्टी हो गयी।

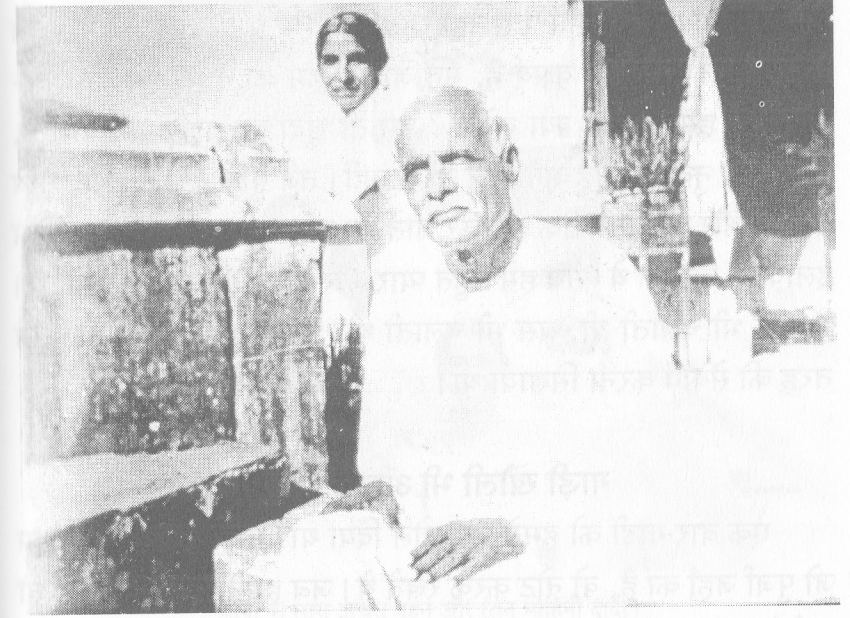
निश्चय की कड़ी परीक्षा

दमे की एक विचित्र कहानी है। जन्मपत्री में मेरी आयु केवल 25-30 वर्ष थी। शुरू-शुरू में यज्ञ में कोई भी बीमार पड़ता था तो बाहर से किसी डॉक्टर को नहीं बुलाते थे। हम घरेलु दवाई से ठीक हो जाते थे या कोई सन्देशी बहन ट्रांस द्वारा बाबा से सन्देश लाती थी अर्थात् बाबा से दवाई पूछकर आती थी। वही दवाई हम करते थे। एक बार मेरे साथ भी ऐसा ही हुआ। मुझे बहुत दमा होता था। रात भर जागती थी। बाबा-मम्मा देखते थे। एक बार बाबा ने एक सन्देशी को कहा कि आलमाइटी बाबा से पूछकर आओ, बाबा जो दवाई बतायेंगे वो देंगे। सन्देशी सन्देश लेकर आयी। सन्देश में आलमाइटी बाबा ने कहा - यह बच्ची बर्फ के पानी से स्नान करेगी तो दमा चला जायेगा। बाबा यह सन्देश सुनकर चुप रह गया क्योंकि बच्ची ने तो बर्फ को छूआ तक नहीं है और बर्फ के पानी से स्नान कैसे करेगी? बाबा ने मेरे से पूछा, बच्ची, तुम्हारे लिए आलमाइटी बाबा ने यह सन्देश दिया है, तुम बर्फ के पानी से स्नान करोगी? मैंने झट कहा, बाबा, मीरा को जहर का प्याला पीने के लिए कहा तो वह अमृत हो गया, बाबा ने यदि मुझे बर्फ से स्नान करने के लिए कहा है तो मैं ज़रूर स्नान करूंगी। बाबा की आज्ञा का पालन करने हेतु मैं तैयार होकर बाथरूम में बैठ गयी। बाबा पर तो मेरा अटूट निश्चय और विश्वास था ही। बाज़ार से बर्फ लाकर बाल्टी में डाली

गयी। बाबा ने सन्देशी को फिर आलमाइटी बाबा के पास भेजा कि वह सन्देश ठीक लायी या नहीं। आलमाइटी बाबा ने कहा, सन्देश यही है और बच्ची के दमे की दवा भी यही है। बाबा को लगा कि बच्ची अब बचेगी नहीं, मर जायेगी। बाबा भी क्या करता, आलमाइटी बाबा का सन्देश था! सन्देशी बर्फ के पानी की बाल्टी मेरे ऊपर डालने के लिए तैयार हो गयी। बाबा वहाँ से उठकर आफिस में जाकर बैठ गया। सन्देशी ने बाल्टी उठायी और डालने ही वाली थी कि वह ट्रान्स में चली गयी, आलमाइटी बाबा ने उसके हाथ थाम लिये। आलमाइटी बाबा ने सन्देशी को कहा कि बाबा को बच्ची के निश्चय की परीक्षा लेनी थी, ले ली। बच्ची पास हो गयी। उसके बाद सन्देशी मुझे बाबा के पास ले गयी। बाबा ने कहा कि आलमाइटी ने कहा है कि बच्ची को रोज़ एक सेब खाना है, उसका दमा देवता चला जायेगा। फिर सन्देशी ने इसका रहस्य बताया। बाबा ने यह परीक्षा बच्ची की ली क्योंकि इस बच्ची की जन्मपत्री में उम्र कम थी। बाबा ने बताया कि मन्दिर में एक बूढ़ी माता बहुत दुःखी होकर तड़प रही है और पुकार रही है कि भगवान मुझे बुला लो, मैं बहुत दुःखी हूँ। बाबा ने उस बूढ़ी माता की आयु बच्ची को दे दी और उसे बूढ़े शरीर से मुक्ति दिला दी। उसके सिर पर जो सफ़ेद बाल थे वह निशानी बच्ची को मिल गयी। तभी 30 साल की उस उम्र से ही मेरे बाल सफ़ेद हो गये और उस बूढ़ी माता की उम्र मुझे मिल गयी। अभी मेरी लौकिक उम्र 87 वर्ष है। बाबा ने मुझे अभी तक अपनी लौकिक और अलौकिक गद्दी पर सेवा में बिठा रखा है।

आप तो खुदा के बन्दे हो, आपसे क्या लेना ?

कराची में हर काम हम बहनें ही करती थीं। गाड़ी चलाना, खरीददारी करना, किसी गणमान्य व्यक्ति से मिलना आदि। बाबा कहते थे कि बच्ची, तुम शक्तियाँ हो, तुम्हें किसी से डरना नहीं है। तुम किसी से बात करने से



बाबा और दादी निर्मलशान्ता जी

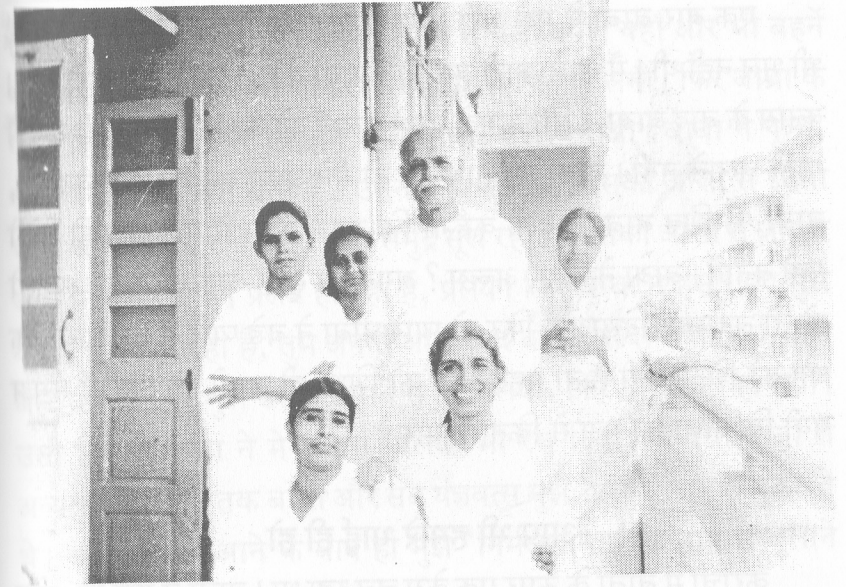
पहले अपने शक्ति स्वरूप में स्थित होकर उसको दृष्टि दो, बाद में बात करो क्योंकि दृष्टि से सृष्टि बनती है। तुम्हारी शक्ति से, वायब्रेशन्स से सारा काम ठीक हो जायेगा। किसी के पास जाते थे तो हम पहले उसको ज्ञान सुनाते थे कि हम खुदा के बन्दे हैं, खुदा दोस्त हैं, देश की सेवा कर रहे हैं। फिर उनसे दाम पूछते थे। हम उनको कहते थे कि इतने दाम पर दे दो। हम सम्बन्ध से और अधिकार से कहते थे। वे लोग कहते थे, ठीक है, आप जितना दाम चाहे दे दो। इस प्रकार, वो खुशी-खुशी से दे देते थे और जितना पैसे हम देते थे उतना पैसा खुशी-खुशी से ले लेते थे।

कई बार हमारी गाड़ी रिपेरिंग के पैसे भी मैकेनिक नहीं लेता था। वह कहता था कि आप तो खुदा के बन्दे हो, आपसे क्या लेना, दुबारा जब आयेंगे तब ले लेंगे। कई बार सिन्ध में कर्पूरू लग जाता था, बाहर आना-जाना बन्द

हो जाता था। लेकिन हमें पता नहीं रहता था, हम घूमने चले जाते थे। तब पुलिस वाले कहते थे, कर्फ्यू है, मत जाओ। हम कहते थे, हम तो खुदा-दोस्त हैं, हमारा कौन क्या करेगा? हम तो खुदा को याद करने वाले हैं, किसी को नुकसान पहुँचाने वाले तो हैं नहीं। तब पुलिस वाले हमारे साथ रहते थे और हमें बंगले तक छोड़कर जाते थे। इस प्रकार, जैसेकि हम ही उस इलाके के मालिक थे। सब हमें बहुत प्यार और इज्जत की नज़र से देखते थे। मैं कार भी चलाती थी, बस भी चलाती थी। बाबा ने हम बहनों को सब तरह की सेवायें करना सिखाया था।

गाड़ी खोली भी और जोड़ी भी

एक बार गाड़ी को हमने पूरा खोल दिया था। गाड़ी खोलते समय हम जो पर्जा जहाँ का है, वो नोट करके रखते थे। जब हमने पूरा खोल दिया तो उसी समय बाबा आये। बाबा ने पूछा, यह गाड़ी किसने खोली है? मैंने कहा, बाबा हमने खोली है। बाबा बोले— बच्ची, यह कार की क्या हालात बना दी है! सब खोलकर क्यों रखा है? मैंने कहा, बाबा यह कार कभी-कभी खराब हो जाती है ना, कोई उसको ठीक करता नहीं है। इसलिए मैंने सीखने के लिए सारी गाड़ी खोली है। हम उसको बना देंगे। बाबा ने पूछा, बच्ची, तुम इसको बना देगी? मैंने कहा, हाँ बाबा, हमने जूता बनाना सीखा है, गाड़ी चलाना सीखा है तो गाड़ी बनाना भी सीखेंगे। इतना ही नहीं, बाबा, हम मकान बनाना भी सीखेंगे। फिर मैंने कहा, बाबा, आपने तो कहा है कि सर्वगुण सम्पन्न बनना है। तो सर्वगुणों में यह भी है ना! फिर यह भी तो सीखें कि किसी की गुलामी न करें! गाड़ी खराब हो जाती है तो गुलाम के जैसे, ठीक करने वाले के आगे-पीछे घूमते क्यों रहें। क्यों न हम ही सीख लें? सच में सारा दिन हमने खाना नहीं खाया। गाड़ी को दुबारा फिट किया और बाद में चलाकर भी देखा। ठीक-ठाक चली। दो दिन के बाद बाबा को



बाबा के साथ अचल बहन और रतन मोहिनी दादी।

नीचे बैठी हैं दादी चन्द्रमणि जी और दादी निर्मलशान्ता जी

उसी गाड़ी में क्लिफ्टन पर (कराची में समुद्र के किनारे दर्शनीय स्थान) छोड़कर आयी। इस प्रकार, हम मोची भी बनी, मैकेनिक भी बनी और इंजिनियर भी बनी।

बहू को शिक्षा देनी है तो पहले बेटे को शिक्षा दी जाती है

शुरू में कभी-कभी ऐसा भी होता था कि किसी यज्ञवत्स ने ग़लती की तो बाबा मुझे बुला कर कहता था, बच्ची, तुमने ये भूल क्यों की? मैं सोच में पड़ जाती थी कि मैंने तो इस प्रकार की कोई ग़लती की ही नहीं। बाद में बाबा बुलाकर कहता कि बच्ची, तुमको कहूँगा तो तुम कहीं नहीं जाओगी लेकिन दूसरी किसी को कहूँगा तो वह चली जायेगी या फीलिंग में आ जायेगी। इस प्रकार, बाबा युक्ति से बच्चों को शिक्षा देता था।

एक बार बाबा ने मुझे भरी सभा से बाहर खड़ा कर दिया। मेरी कोई भी भूल नहीं थी। मैं आज्ञाकारी बन शिव बाबा की याद में बाहर खड़ी रही। क्लास के बाद बाबा ने आकर मुझे गाड़ी चलाने को कहा। आज्ञाकारी बन मैं गाड़ी चलाने लगी। बाबा मेरे साथ बैठे तो मैंने अपने मन की बात कह दी, बाबा, मैं शिव बाबा से दुआ करूँगी कि अगले कल्प में मुझे आपकी बच्ची नहीं बनाये। बाबा ने कहा, अच्छा ? अगर तुम सृष्टि-चक्र को बदल सकती हो तो बदलकर दिखाओ। फिर तो प्यारे बाबा ने बड़े प्यार से समझाया कि बहू को शिक्षा देनी है तो पहले बेटों को शिक्षा दी जाती है। फिर मैं समझ गयी कि बाबा का मुझ से कितना प्यार है।

आप भी हमारे भाई ही हो

कराची में बाबा के ऊपर एक केस चल रहा था। बाबा ने मुझे दो-तीन बहनों के साथ कोर्ट भेजा। हमें देखकर जज ने कहा कि केस बाबा के ऊपर है, तुम क्यों आयी हो? मैं कुछ देर चुप रही। फिर उसने मेज पर डण्डा मार कर पूछा, बहन जी, आप समझती हैं, मैं क्या पूछ रहा हूँ? मैंने झट उत्तर दिया, आप मुझे बहन जी कह रहे हो ना, तो हमारा एक भाई और बढ़ गया। हमारे कुल कितने भाई हो गये – यह मैं सोच रही थी। जज ने फिर पूछा, क्या बाबा के पास कोई भाई नहीं जो तुम बहनें ही आयी हो? मैंने कहा, जज साहब, आपने हमें बहन कहा, तो आप भी हमारे भाई हो ना! यह सुनकर वह एकदम शान्त हो गया। इस बात ने उसके मन में बहुत गहरी छाप लगा दी। फिर उसने बाबा का केस समाप्त कर दिया।

मेरा एक नाम और भी था – 'प्रलय'

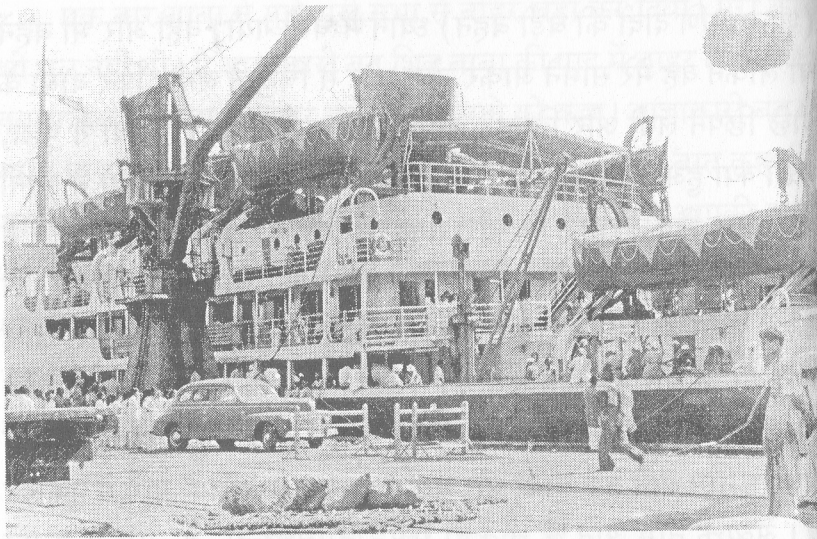
एक बार कराची में सब सागर के किनारे घूमने गये थे। समुद्र में बड़ी-बड़ी लहरें उठ रही थी। हम सब उनको देख रहे थे। उतने में एक बहन,

(शान्तामणि दादी की बड़ी बहन) ध्यान में चली गयी। वहाँ और भी बहनें थीं लेकिन वह मेरे सामने आकर ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगी। फिर बाबा के पीछे छिपने लगी और चिल्लाने लगी बाबा, मुझे बचाओ। बाबा ने पूछा, बच्ची क्या हुआ, क्या बात है? उसने कहा – बाबा, इसकी आँखों से इतनी भारी आग निकल रही है कि सारा समुद्र सूख रहा है। इसकी आँखों से ज़ोर से आग निकल रही है। प्रलय हो रहा है, प्रलय। फिर बाबा ने हंसते हुए मुझे कहा, प्रलय हो रहा है, तुम अपनी आँखें बन्द करो। बाबा ने ही मेरी आँखें बन्द कर दी और मुझे उसके सामने से हटा लिया, फिर वह शान्त हो गयी। उसी दिन से बाबा ने मेरा नाम 'प्रलय' भी रख दिया। अव्यक्त बाबा से अव्यक्त नाम आने तक बाबा और सब यज्ञवत्स मुझे 'प्रलय' नाम से पुकारते थे। अव्यक्त नाम आने के बाद ही मुझे 'निर्मलशान्ता' के नाम से बुलाने लगे।

मेरा बाबा ही सबका बाबा है

लौकिक जीवन में बाबा बड़े दिल वाला था। शिव बाबा की प्रवेशता और ज्ञान की प्रकाशा के बाद बाबा में एकाँनॉमी के संस्कार आ गये। बाबा ने हम बच्चों को भी एकाँनॉमी सिखायी। बाबा कोई भी वस्तु व्यर्थ नहीं होने देते थे। कहीं पर ज़रा भी नुकसान होता तो बाबा की नज़र बहुत जल्दी वहाँ जाती थी।

बाबा में भेदभाव नहीं था। उनके सामने कोई भी जाते थे, चाहे ज्ञानी, अज्ञानी, हिन्दू, मुसलमान, सब उनको बाबा कहते थे। फिर बाबा कहता था – बच्चे, ज्ञान सुना? मुरली सुनी? आओ टोली खाओ। बाबा सबको इतना प्यार करता था कि किसी को यह महसूस नहीं होता था कि मैं परायण हूँ। सब यही अनुभव करते थे कि यह हमारा बाबा है। हमारे पास जो ड्राइवर था वह मुसलमान था। उसको भी बाबा कहते थे, बेटा, गाड़ी ले आओ,



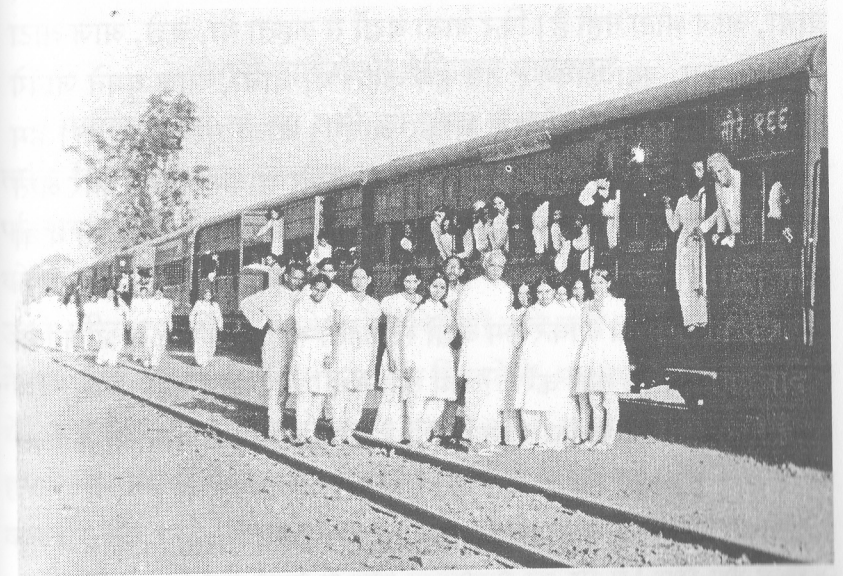
कराची से आबू की तरफ प्रस्थान

आज फलाने स्थान पर जाना है। उस समय सिन्ध में इतने भारी हंगामे हुए लेकिन हमारा कोई ने कुछ नुकसान नहीं किया। हम सदा सेफ़ (सुरक्षित) रहे। हमें मुसलमान लोग भी खुदा-बन्दे कहते थे।

हम तो चले अपने देश, सबको कहें खुदा हाफिज़

भारत-पाकिस्तान विभाजन के बाद ज़्यादातर हिन्दू मुंबई, दिल्ली आदि शहरों में चले गये। हमारे रिश्तेदार भी कहने लगे कि पाकिस्तान में ज़्यादा मुसलमान ही होंगे तो सेवा होगी ही नहीं इसलिए सेवार्थ भारत में जाना अच्छा है। तो बाबा भी सोचने लगे कि क्या करें? बाबा को प्रेरणा आयी किसी एकान्त स्थान पर जायें जहाँ सब रह सकें। किसी ने कहा, आबू अच्छा है। अतः कराची से ओखा और ओखा से आबू आये। पहले से ही सरकार के साथ हमारे सम्बन्ध तो अच्छे थे ही। फिर सरकार की मदद से हमने आबू में बृजकोठी को लिया। कराची से आये कैसे? हम सब भाई-बहनें और साथ

में हमारा इतना सामान था! हमने सरकार से कहा कि हम बाज़ार की चीज़ें तो खाते नहीं हैं। हम अपने हाथों से खाना बनाकर खाते हैं। इसलिए हमारे लिए एक अलग ही ट्रेन दे दीजिये। सरकार ने भी इसको ठीक समझा और हमारे लिए एक पूरी ट्रेन दे दी। हमें जब खाना बनाना होता था तो हरियाली और पानी वाली जगह देखकर चैन (Chain; जंजीर) खींच लेते थे। गाड़ी रुक जाती थी, गार्ड आकर पूछता था कि क्या हो गया? तब हम कहते थे कि यहाँ जगह बहुत अच्छी है, यहाँ हम खाना बनायेंगे और खायेंगे, बाद में चलेंगे। वो कहता था, यह तो जंगल है, यहाँ क्या मिलेगा? न दुकान है, न बाज़ार है। हम कहते थे, सब सामान हमारे पास है, हम सब कुछ बनायेंगे। जितने भी ट्रेन के लोग होते थे उन सबको हम खाना खिलाते थे। उनको कहते थे कि देखो, जैसा अन्न वैसा मन। इसलिए सदा सात्विक अन्न खाना चाहिए, मन भी सात्विक बनेगा। जगह-जगह गाड़ी रोककर खाना बनाते



विशेष ट्रेन में, आबू रोड आते हुए बाबा के साथ खड़े हुए यज्ञवल्क्य

थे, सब मिलकर खाते थे और हम बाबा के बच्चे नाचते थे, गाते थे। इस प्रकार, 5 मई 1950 को हम भारत आये और आबू की बृजकोठी में रहना शुरू किया।

बैगरी पार्ट

जब आबू आये तो जितना राशन और पैसा वहाँ से लाये थे उससे खाना-पीना चलता था। लेकिन आबू में कोई सेवा तो होती नहीं थी। वहाँ सिन्ध में तो बाबा की सेवा होती थी और ॐ-मंडली में आने वाली मातायें-कन्यायें कुछ-न-कुछ भंडारी में डालती थीं। लेकिन आबू में क्या करें? जो था उसी को खाने लगे। कितने दिन तक खा सकते हैं! कहते हैं ना बैठकर खाने से तो कुआँ भी सूख जाता है। धीरे-धीरे राशन खत्म होने लगा। खाने के लिए कुछ रहा ही नहीं। यज्ञ में बैगरी पार्ट शुरू हो गया। उस समय बाबा भी मुरली ऐसे चलाता था कि बच्चे, तुम फ़रिश्ते हो। फ़रिश्ते बहुत कम खाते हैं, हल्के रहते हैं। फिर एक-एक दिन भंडारी आकर बाबा से कहती थी, बाबा, आज आटा नहीं है। फिर बाबा बच्चों से कहता था, बच्चे, आज आटा खत्म हो गया, क्या खायेंगे? तब हम कहते थे, बाबा, आज घूमने जायेंगे ना, वहाँ फल आदि पेट भरके खाकर आयेंगे। बाबा मुस्कराता था। हम घूमने जाते थे तो कोई-न-कोई फूल, फल पेट भर खाकर आते थे और आते समय कुछ लेकर भी आते थे ताकि जो हमारे साथ वहाँ जा नहीं सकते थे वो खा लें।

कई बार मम्मा आकर हम बच्चों से कहती थी, आज रात के भोजन के लिए आटा नहीं है, क्या करेंगे? हम कहते थे, कोई बात नहीं मम्मा, हम दिन में जंगल में पेट भरकर खाकर आये हैं और बूढ़ी-बूढ़ी माताओं के लिए लेकर आये हैं। आप चिन्ता मत करो। हमारा पेट भरा हुआ है। हमें खाना चाहिए भी नहीं। यह बहुत वण्डरफुल बात थी कि हम सारा दिन काम करते थे फिर भी हमें भूख नहीं लगती थी। उस समय तो कोई नौकर-चाकर नहीं

थे। सारे काम हम ही करते थे। सुबह जंगल में जाकर जो फल आदि खाये होते थे, बस उतने ही। यह कमाल थी बाबा की। ऐसा लगता था कि पेट भरा हुआ है। फिर मम्मा-बाबा तो मम्मा-बाबा थे। वे बीच-बीच में आकर मुझे पूछते थे, बच्ची, इतना काम करती हो, तुमको भूख नहीं लगी? मैं कहती थी, नहीं बाबा, मुझे भूख नहीं है। पेट भरा हुआ है। मुस्कराते थे। सबको थोड़ी-थोड़ी टोली खिला देते थे। थोड़ी-सी टोली से ही हमें ऐसा लगता था कि पेट भर गया। ऐसे कुछ साल तक चला क्योंकि उस समय राशन खरीदने के लिए पैसा नहीं होता था। बाबा कहता था, बच्चे, आलमाइटी बाबा (शिव बाबा) को याद करो, वह कुछ-न-कुछ इन्तज़ाम करेगा। हम आलमाइटी बाबा को याद करते थे और जंगल व पहाड़ी पर घूमने जाते थे और फल आदि खाकर आते थे और कभी-कभी कहीं-न-कहीं से मनी-ऑर्डर आता था या कोई-न-कोई आकर भंडारी में सेवा करके जाता था। फिर कुछ सालों के बाद बाहर की सेवा शुरू हो गयी।

बैगरी पार्ट में भी बेफ़िकर बादशाह

पाकिस्तान में तो हम सभी को बाबा ने बड़े लाड़-प्यार से रखा था ताकि किसी को कुछ भी याद न आये कि हमारा कोई लौकिक घर या परिवार है। जैसे ही हम सभी आबू में आये तो बैगरी पार्ट आरंभ हुआ, किसी को घर याद आया तो किसी को रिश्ते-नाते याद आने लगे। कुछ बहनों को उनके परिवार वालों से, रिश्तेदारों से चिट्ठियाँ आने लगीं। सिन्ध में तो बाबा ने राजाई पालना दी थी। पिस्ता-बादाम खिलाते थे, मखमल के कपड़े पहनाते थे। जब बैगरी पार्ट चला तो बाबा सबको डोडा-छाछ खिलाने लगे। यह हमारे निश्चय का पेपर था। जो निश्चयबुद्धि थे वे रह गये और जो मन से कामज़ोर और कच्चे निश्चयबुद्धि थे वे चले गये। मुझे कोई संकल्प तक नहीं था कि हम पहले क्या खाते थे और अभी क्या खा रहे हैं! मुझे यह पक्का



बाबा के साथ दादी निर्मलशान्ता जी, राज बहन, दादी प्रकाशमणि जी, आलराउण्डर दादी, सन्देशी दादी, नारायण दादा और अन्य

निश्चय था कि बाबा जो भी कराये, जो भी खिलाये मुझे तो मस्ती में रहना है।

बैगरी पार्ट में भी बाबा-मम्मा बच्चों को ही पहले खिलाते थे, सब बच्चों के खाने के बाद ही खाते थे। एक बार दिन के 12 बजने वाले थे, खाने के लिए कुछ नहीं था। भोली दादी ने बाबा से कहा कि आज क्या खिलायेंगे? बाबा ने कहा, ठहरो, बाबा कुछ भेज देगा। इतने में कहीं से मनी-ऑर्डर आया। बाबा ने आटा-सब्जी आदि मंगाया और सभी बच्चों को खिलाया। यह पार्ट भी देखा। शुरू में, जितने भाई-बहनें होते थे उस हिसाब से गिनती की रोटियाँ बनती थीं। यदि खिलाने वाले के पास रोटी कम हो जाती तो बाबा के पास रिपोर्ट जाती थी कि आज रोटी कम पड़ गयीं। बाबा रात्रि-क्लास में पूछ लेता था कि आज किसने लालच में ज्यादा रोटी खायी हैं। इस

प्रकार, बाबा यह भी ध्यान खिंचवाता था कि हमें खाने-पीने-पहनने में लालच न हो।

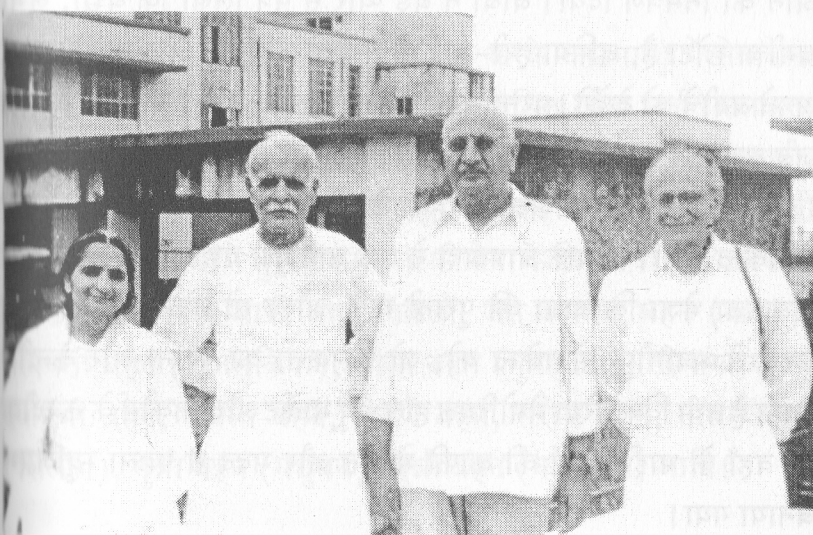
बिना सेवा किये खाना भी चोरी है

अब बाबा हम बच्चों का रूहानी सेवा पर ध्यान खिंचवाने लगे कि बच्चों को बाहर जाकर अनेक आत्माओं की सेवा करनी है। लेकिन कोई भी बाबा को छोड़कर कहीं जाना नहीं चाहते थे। फिर बाबा ऐसी मुरली चलाता था कि सेवा नहीं करेंगे तो बेहद का बादशाह कैसे बनेंगे? विश्व कल्याण कैसे होगा? खाली खा-पीकर मौज करेंगे तो क्या पद पायेंगे? ऐसी-ऐसी बात सुनाकर बाबा बच्चों में सेवा के लिए उमंग-उत्साह भर देते थे। फिर हमें पहले-पहले पंजाब की सेवा पर भेजा। इसी प्रकार, बाहर की सेवार्यें शुरू हुईं।

उस समय यह नियम था कि भोजन से पहले कोई-न-कोई सेवा ज़रूर करनी है। इस प्रकार, बाबा ने हमें सेवा करना भी सिखाया। बाबा कहता था कि सेवा करने से पहले भोजन किया या नाश्ता किया तो यह भी चोरी हुई। बाहर की सेवा के लिए बाबा ने हमें सबसे पहले अमृतसर भेजा। हमारे साथ दादी जानकी भी थी। वहाँ पर एक सरदार भाई पवित्रता के लिए बहुत हंगामा करता था। अपनी कन्या और पत्नी को बन्धन डालता था। मैं अमृतसर में 3-4 साल रहीं। उस समय ही अचल, प्रेम, राज, शुक्ला आदि 20-25 बहनें निकलीं। मम्मा भी उस समय एक बार अमृतसर आयी थी। अमृतसर से मैं कुछ भाई-बहनों की एक पार्टी लेकर बाबा के पास आबू आयी। बाबा हम बच्चों को कहता था, देखो, मेरे कमाऊ बच्चे (कमाऊ पूत) आ गये। उस समय आबू आने वाले बच्चे बहुत थोड़े होते थे। बाबा से असीम प्यार पाने के लिए बहुत चान्स (अवसर) मिलते थे। बाबा का वो प्यार भुलाने पर भी नहीं भूलता था। जब वापस सेवास्थान पर जाने का समय आता तो हमारी विज

पूर्व दिशा में ज्ञान सूर्य के उदय का सन्देश

सन् 1963 में सबसे पहले मुम्बई में प्रदर्शनी लगायी गयी थी। उसके बाद सन् 1964 में कलकत्ता में प्रदर्शनी लगायी गयी। सन् 1964 में जब मैं बाबा से मिलने मधुवन आयी तो बाबा ने मुझे प्रदर्शनी की सेवा अर्थ कलकत्ता भेज दिया। बाबा ने प्रदर्शनी में लगभग 100 से भी अधिक भाई-बहनों को सेवा के लिए भेजा था। उसी समय मम्मा को भी बाबा ने कलकत्ता भेजा, जो जालान बाबू के छोटे से मकान में 15-20 दिन रही थी। उस से पहले सन् 1959 में रत्नमोहिनी दादी, उर्मिल बहन (गांधीधाम), भारती बहन (राजकोट) भी कलकत्ता में सेवार्थ गयी थीं। प्रदर्शनी कलकत्ता के बड़े मेन बाज़ार में एक धर्मशाला में रखी गयी थी इसलिए सेवा बहुत अच्छी हुई। मम्मा से मिलने भी काफी लोग आते रहते थे। परन्तु किसी कारण वश जालान बाबू वाला मकान जहाँ मम्मा व बहनें रहती थीं, खाली करना पड़ा था। फिर बाबा ने ध्यान में रानी माता (उर्मिल बहन की माता जी) को



दादी सन्तरी जी, बाबा और भाऊ विश्व किशोर जी (एकदम किनारे में)

छोटी हो जाती थी। बाबा-मम्मा को छोड़कर बाहर सेवा पर कोई नहीं जाना चाहता था। बाबा कहता था, बच्चे, अभी तुम बड़े हो गये हो, बाप बूढ़ा है, तो तुम बच्चों को बाप की मदद करनी चाहिए ना ! इस प्रकार, बाबा युक्ति से हमें फिर सेवा पर भेज देता था।

तन गंगा के तट पर हो, मन मुरलीधर के पास हो

पंजाब के बाद हमें बाबा ने पटना भेजा। जब अमृतसर से मैं पार्टी लेकर मधुवन आयी थी, उस समय पटना का एक सेठ जालान बाबू आया हुआ था। बाबा से मिलते समय उसने कहा, बाबा, वहाँ सेवाकेन्द्र खोलना है। बाबा ने मुझे पटना भेजा। हमारे साथ दादी कुमारका भी थी। कुछ समय के बाद मम्मा भी आयी थी। उस सेठ का मकान बहुत बड़ा था। सेवा भी बहुत अच्छी हो रही थी। पटना में तीन साल रही, फिर बाबा ने मुझे मुंबई में सेवा के लिए भेजा। वहाँ भी मैं तीन साल रही। उस समय मुंबई में वाटरलू मेन्सन में एक ही सेन्टर था। उस समय रमेश-उषा नये-नये ज्ञान में आये थे। डॉ. निर्मला, योगिनी का परिवार, नलिनी और उसका परिवार आदि भी आते थे। वहाँ पर भी बाबा ने तीन साल सेवा करायी।

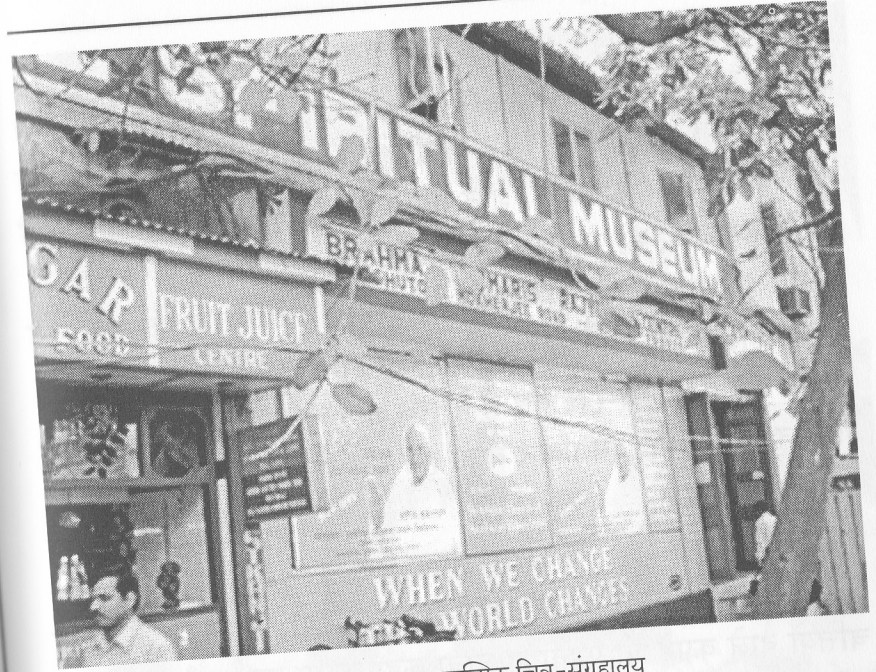
जब मैं मुंबई में थी तब यशोदा मैय्या की तबीयत खराब हो गयी। बाबा ने मुझे हास्पिटल में उनकी सेवा अर्थ रखा था। आना-जाना करते देखभाल करती थी। सन् 1961 में मैय्या ने शरीर छोड़ा। वह एक विचित्र खेल था। यशोदा मैय्या ने मुझे कहा, तुम मुरली सुनाओ। मैं सुना रही थी, उसने मेरी गोद में सिर रखा और शरीर छोड़ दिया। मैंने तुरन्त बाबा को मधुवन में खबर दी। बाबा ने भी तुरन्त फोन द्वारा कहा, बच्ची, कोई बात नहीं। तुम्हारी अम्मा और मेरी बीबी। “अम्मा मरे तो भी हलुवा खाना और बीबी मरे तो भी हलुवा खाना” – यह मंत्र उस समय का है। इस प्रकार मुंबई में तीन साल पूरा किया।

सेन्टर के लिए मकान दिखाया। उसके बाद कई मकान देखे परन्तु कोई मिला नहीं। मधुबन में साकार बाबा को पत्र लिखा। बाबा ने जवाब दिया कि बच्ची, हिम्मत नहीं हारनी है। हिम्मत रखेंगे तो बाबा मकान ढूँढ़ कर देंगे। पुराना मकान छोड़ने का समय आ पहुँचा परन्तु फिर भी सेन्टर के लिए मकान नहीं मिला। एक दिन बाबा ने फिर सन्देशी को वतन में बुलाकर मकान दिखाया। सन्देश में ही मकान दिखाया था, उसका मालिक रात को 11 बजे स्वयं चाबी देने आया। परन्तु फिर बात किराये पर आकर रुकी क्योंकि उस समय इतने जिज्ञासु नहीं थे जो इतना किराया दे सकें। इसलिए मधुबन में बाबा को फिर समाचार दिया। बाबा ने कहा, बच्ची, तुम तो लक्ष्मी हो, अपने आप ही किराया भरा जायेगा। सो समय प्रमाण शर्मा जी (जयपुर वाले), रमेश भाई (कलकत्ता वाले) ज्ञान में आये और सेवा शुरू हुई।

सन् 1967 में हमने साकार बाबा को अपनी लौकिक गद्दी, कलकत्ते में आने का निमंत्रण दिया। बाबा ने बड़े प्यार से पत्र लिखा कि बच्ची, अभी बगीचा छोटा है, बगिया हरी-भरी हो तब तो बागवान और माली आकर अपने बगीचे को देखेंगे। परन्तु साकार बाबा कलकत्ता नहीं आ पाया। बाबा जब अव्यक्त हुए तब मैं कलकत्ता में थी। समाचार सुनकर मैं मधुबन आयी।

सन् 1964 में कलकत्ता में पहला सेवाकेन्द्र खुला। सन् 1970 में दूसरा सेवाकेन्द्र खुला। अव्यक्त बापदादा ने एक बार मुझे यह कहकर मधुबन से कलकत्ता भेजा कि बाबा की पुरानी गद्दी, ओल्ड सो गोल्ड बनेगी। उसी लक्ष्य से भवानीपुर सेवाकेन्द्र को, जो कलकत्ता का पुराना और केन्द्रीय स्थान है तथा विक्टोरिया मेमोरियल हॉल, न्यू मार्केट और रेसकोर्स के नज़दीक है, वहाँ के भाई-बहनों की काफी मेहनत और मदद से पहला म्युजियम बनाया गया।

बिहार में तो पहले से मम्मा-बाबा द्वारा सेवा शुरू हो चुकी थी। राज



कोलकाता का आध्यात्मिक चित्र-संग्रहालय

बहन ने बिहार से ही नेपाल की सेवा शुरू करके काठमाण्डू में सेवाकेन्द्र खोला। सन् 1972-73 में उड़ीसा सेवा के निमित्त रमेश भाई (कलकत्ता वाले) बने। सन् 1974 में तेजपुर (आसाम) और 1975 में गुवाहाटी, तिनसुकिया के सेवाकेन्द्र खुले। कुँज बहन, सन्देशी बहन, राज बहन, रानी बहन आदि को बाबा ने शुरू में कलकत्ता की सेवा के लिए भेजा था। कलकत्ता की सेवा के शुरू में काफी बहनें निकलीं, जैसे कमलेश बहन (कटक), सत्यवती बहन (तिनसुकिया), शीला बहन (गुवाहाटी), सौभाग्य बहन, रुकमणी बहन, कमला बहन, किरण बहन, सरोज बहन, नीलम बहन (शिलांग), मुन्नी बहन (मधुबन), मुन्नी बहन (कलकत्ता) आदि।

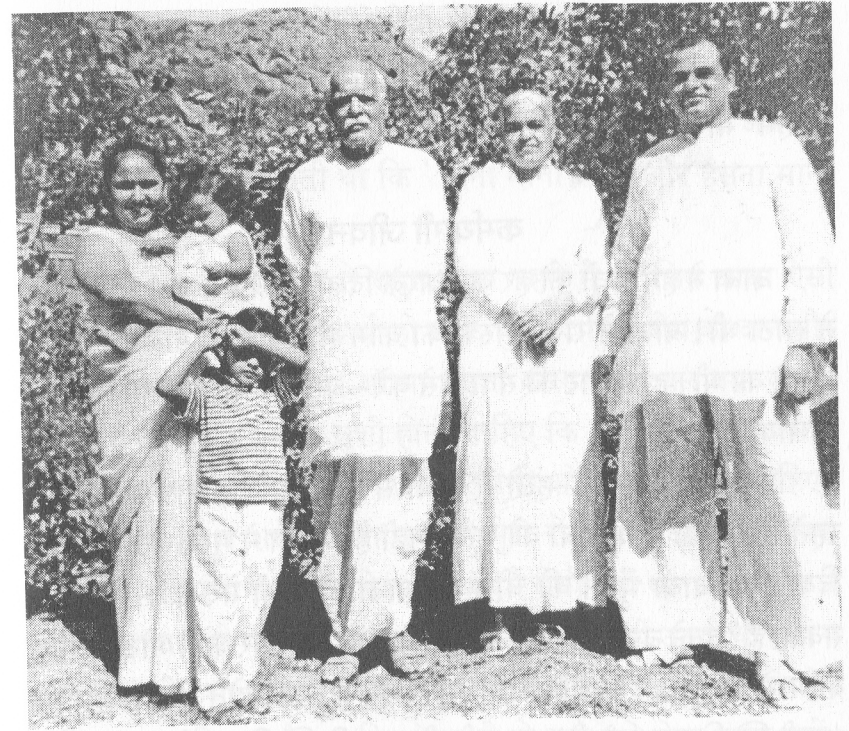
निर्भय बनाया

शुरू-शुरू में जब बाबा ने बाहर की सेवा पर हम बहनों को भेजा था तो हम लोगों को इतना ज्ञान सुनाना तो आता नहीं था और कभी-कभी भय भी लगता था कि किसी को ज्ञान सुनाते समय कहीं कोई ग़लती तो नहीं होगी! हम बाबा को पत्र लिखते थे तो रिटर्न में बाबा प्यार से पत्र लिखते थे, बच्चो, तुम शक्तियाँ हो, तुम शेरनी हो, तुम्हारे जैसी अथाँटी किसी के पास है ही नहीं, तुम जब समझाते हो तो समझो कि ये सब आत्मायें बेसमझ हैं, अज्ञान वश हैं। तो तुम्हारे मुख से नेचुरल ज्ञान निकलना शुरू हो जायेगा, हिम्मत आ जायेगी। इस प्रकार बाबा हम बच्चों में बल भरते थे।

कम खर्च बाला नशीन

लौकिक में बाबा ने जितना ही राजाई से रखा, उतना अलौकिक में चत्तियों वाले कपड़े भी पहनाये। बाबा कहा करता था, यहाँ तुम जितने चत्तियों वाले पकड़े पहनेंगे उतना ही सतयुग में जाकर प्रिन्स बनेंगे। तो सचमुच जब हम सेवा पर निकले उस समय बैगरी पार्ट था। बिस्तर, रजाई आदि भी गिनती की होती थीं। एक बार एक भाई ने बहुत से कटपीस के कपड़े भेजे। हमने खुद बैठकर टुकड़े जोड़-जोड़कर गद्दी, रजाई, तकिया आदि बनाये थे। कुछ मधुबन में यूज किये जाते थे और कुछ बाहर सेवाकेन्द्रों पर भेजे जाते थे।

एक बार बाबा के लिए सुन्दर डिज़ाइन की रजाई बनाकर भेजी, बाबा ने भी बड़े प्यार से रजाई ओढ़ी। बाबा ने मुझे पत्र लिखा कि बच्ची, कम खर्च बाला नशीन। बाबा कहा करते थे कि बाबा ग़रीब निवाज है, ग़रीब बच्चों की एक-एक पाई से ही स्वर्ग की स्थापना होनी है।



बाबा के साथ ज्योति बहन (नारायण दादा की युगल), पुट्टु बहन तथा नारायण दादा

माँगने से मरना भला

बहुत समय पहले की बात है। कलकत्ते में अनन्य भाई 2-4 ही थे। वे नियमित रूप से रोज़ सेन्टर पर आकर चाय-नाश्ता करते थे। एक दिन एक भाई ने आकर कहा, दीदी जी, मैं कुछ महीनों से आपका धन से सहयोग तो कर नहीं रहा हूँ, फिर भी आपका बोलना, मिलना, खातरी करना वैसे ही है जैसे पहले करते आये हैं। मैंने झट उनको कहा कि आप हमें देते हो या बाबा को देते हो? उस भाई ने कहा, बाबा को देते हैं, फिर भी निमित्त आप हैं। मैंने कहा, हमको कोई नहीं देता है, न हम किसी से लेते हैं। हमको खिलाने वाला, पहनाने वाला बाबा है। हमने बाबा को जीवन दी है। वह जो खिलाये,

जैसे रखे हम वैसे रहेंगे। हमारा सब कुछ उसके हाथ में है। इस प्रकार, बाबा के बच्चे भी कैसी-कैसी बातें बोलकर, हमारी परीक्षा लेते थे। पर बाबा ने तो हमें 'माँगने से मरना भला' का पाठ पक्का कराया है।

कर्मयोगी जीवन

बाबा ने हम बच्चों को हर कर्म करके दिखाया, बड़े से बड़ा भी तो छोटे से छोटा भी। बाबा ने राज-मिस्त्री का काम भी किया तो गोबर का गोला बनाने का भी। हर प्रकार की सेवा कैसे करें - यह सब बाबा ने हम बच्चों को सिखाया।

एक बार मैंने हंसी-हंसी में बाबा से पूछा, बाबा, आप इतने बिजी रहते हैं तो क्या शिव बाबा को भूलते नहीं हैं? बाबा ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया, क्या बाबा भूलने की चीज़ है? बाबा तो है ही मेरे साथ, भूल कैसे सकता हूँ? इतने बच्चों को संभालते हुए भी उनके चेहरे पर कभी भी झुंझलाहट या माथे पर शिकन नहीं देखी। सचमुच, इतना व्यस्त होते हुए भी बाबा ने अपनी स्थिति बहुत ऊँची बना रखी थी। उनकी स्थिति इतनी ऊँची थी कि जब मैं पार्टी को वापस ले जाते समय बाबा से मिलने जाती थी तो कभी-कभी बाबा मेरा नाम तक भूल जाता था। कहता था, बच्ची, कहाँ से आयी हो? क्या नाम है तुम्हारा? किसके सामने खड़ी हो? मुझे लगता था कि बाबा यहाँ होते हुए भी इस दुनिया से पार कहीं दूसरी जगह पर है। बाबा का देह में रहते विदेह अवस्था में रहने का दृश्य हमने देखा है।

नष्टोमोहा स्मृति स्वरूपा

बचपन में मुझे छोटी-छोटी बातों में रोना आ जाता था। पीने को दूध नहीं मिलता अथवा मिलने में देरी हो जाती तो मैं रोने लग जाती थी। यज्ञ में आने के बाद एक बार की बात है कि मैं किसी कारण से रो रही थी। बाबा

ने पास बुलाकर कहा, बच्ची, रोती हैं विधवा। तुम्हें तो पतियों का पति मिला है, फिर तुम क्यों रोती हो? उसके बाद तो जैसे मेरी आँखों का नल ही सूख गया। बाबा ने सदा सुहागिन बना दिया। उसके बाद कभी भी आँखों में आँसू नहीं आये। मैं समझती थी कि "रोना माना खोना और हँसना माना पाना।"

बाबा के अव्यक्त होने से बहुत समय पहले से ही शिव बाबा ऐसी मुरली चलाते थे कि बच्चे, कुछ भी हो जाये, तुम बच्चों को योग का दान और शान्ति का दान देना चाहिए। आत्मा पुराना कपड़ा छोड़ कर नया कपड़ा पहनती है तो तुम बच्चों को खुशी होनी चाहिए कि वह आत्मा नया कपड़ा पहनेगी। इसलिए कोई भी शरीर छोड़े, तुमको शोक नहीं करना चाहिए। जब लौकिक माँ ने शरीर छोड़ा तब भी मुझे रोना नहीं आया और जब अलौकिक माँ मम्मा ने शरीर छोड़ा तब भी मैं रोयी नहीं थी। जब बाबा ने शरीर छोड़ा तब भी मैं नहीं रोयी। हाँ, कुछ-कुछ भावनायें उठती थीं लेकिन मुझे दुःख नहीं हुआ और आँसू नहीं आये क्योंकि मुझे याद आता था कि रोने के लिए बाबा की मना है। इसलिए कुछ भी हो जाये मुझे रोना आता नहीं। मैं ही रोने वालों को समझाती थी कि बाबा ने कहा है कि कुछ भी हो जाये कभी रोना नहीं है। मुझे बिल्कुल अन्दर से भी दुःख या रोने का अनुभव नहीं हुआ। मुझे यही लगता था कि बस अभी नयी दुनिया की स्थापना का समय नज़दीक आ गया क्योंकि बुद्धि में यही था कि ब्रह्मा सो श्री कृष्ण। कई बार हमें दिखायी भी पड़ता था कि बाबा ही श्री कृष्ण और श्री कृष्ण ही बाबा है।

रोने के विषय पर मुझे एक घटना याद आती है। कलकत्ता से मैं पार्टी लेकर मधुवन आ रही थी और मधुवन के लिए पेड़े लायी थी। सुबह की क्लास में बाबा ने कहा कि यह टोली वह बच्चा बाँटे जो कभी रोया नहीं। यह शर्त सुनकर किसी की हिम्मत नहीं हुई। तब मैं उठी और सभी को टोली बाँटी। इस प्रकार, उस दिन से लेकर आज तक मुझे दुःख के आँसू आये ही

नहीं। किसी के शरीर छोड़ने पर मुझे दुःख नहीं होता, अफसोस नहीं होता। बाबा कहता था – रोना माना फेल होना। मुझे तो फेल होना ही नहीं है।

यह यज्ञ ईश्वर का है, ईश्वर अमर है

जब बाबा ने शरीर छोड़ा, तब कुछ लोग बोलते थे कि मम्मा भी गयी, बाबा भी गया, आगे हमारा क्या होगा? मैं तो एक बात कहती थी कि मम्मा-बाबा भी निमित्त हैं और हम भी निमित्त हैं। यह विश्व विद्यालय ईश्वर का है। ईश्वर अमर है, उससे स्थापित हुआ यह यज्ञ अन्त तक ठीक चलेगा। बाबा के महावाक्य मुझे सदा याद रहते हैं कि बच्चे, जैसे-जैसे समय बीतता जायेगा, वैसे-वैसे तुम्हारी चढ़ती कला, उड़ती कला होती रहेगी।

कहीं भी रहो लेकिन सम्बन्ध बनाये रखो, सेवा में व्यस्त रहो, अपने पुरुषार्थ में मगन रहो

यह प्रश्न और लोग भी पूछते हैं कि आपको बाबा ने मधुवन में क्यों नहीं रखा? बाहर क्यों भेजा? मैं यही कहती हूँ कि पूछने वाले तो तब भी पूछेंगे अगर मैं मधुवन में होती कि बाबा ने आपको बाहर क्यों नहीं भेजा, देखो, लौकिक बेटी होने के कारण आपको अपने पास ही रखा है, ऐसा है ना! कुछ भी करो, बोलने वाले तो बोलते ही रहेंगे। मेरे विचार में अन्दर रहें या बाहर रहें, यह कोई खास बात नहीं है। जहाँ भी रहें, हमें सेवा करनी है, अनेक आत्माओं का कल्याण करना है क्योंकि ईश्वरीय सेवा ही हमारा धर्म है। मुझे कभी यह संकल्प नहीं आया कि बाबा ने मुझे बाहर भेजा है। कहीं भी रहो लेकिन सम्बन्ध बनाये रखो, सेवा में व्यस्त रहो, अपने पुरुषार्थ में मगन रहो – यह मुख्य बात है।

मेरा लक्ष्य यही रहता है

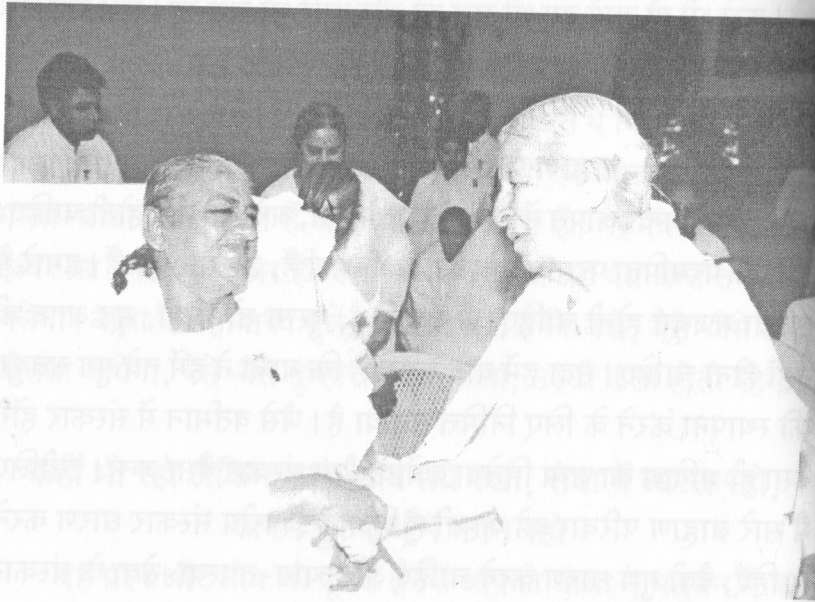
सदा मेरी बुद्धि में यह बात पक्की रहती है कि हमारे से कोई नाराज न हो। कुछ भी हो जाये हम भी खुश रहें और दूसरे भी खुश रहें। खुश रहो और खुश रखो – यह मेरा लक्ष्य है।

ब्राह्मण परिवार के लिए मेरा सन्देश

हमारे अन्दर आपस में तेरे-मेरे की भिन्नता, अनेकता नहीं होनी चाहिए। हम एक परमपिता परमात्मा के बच्चे भाई-भाई हैं, हम सब एक हैं। हमारे में एकता मज़बूत होनी चाहिए। मैं कहती हूँ, गुस्सा तो छोड़ो, मूड़ आफ़ भी नहीं होना चाहिए। सदा हमें याद रखना है कि बाबा ने हमें नये युग सतयुग की स्थापना करने के लिए निमित्त बनाया है। जैसे वर्तमान में संस्कार होंगे वैसा ही भविष्य का जन्म मिलेगा क्योंकि जैसा संस्कार वैसा जन्म। इसीलिए मैं सारे ब्राह्मण परिवार को कहती हूँ कि हमें ईश्वरीय संस्कार धारण करने चाहिए, दैवी गुण धारण करने चाहिए और त्याग-तपस्या-सेवा के संस्कार अपनाने चाहिए।



दादी निर्मलशान्ता जी के प्रति अव्यक्त बापदादा के महावाक्य



आप अथक बाबा के अथक और अविनाशी बच्चे हो

तन के रोग पर विजय प्राप्त कर रही हो। संगम पर ताज, तिलक, तख्त और सुहाग-भाग सभी मिलते हैं। एक ही समय पर सर्व प्राप्तियाँ बापदादा कराते हैं, जो एक जन्म की देन अनेक जन्म चलती है। वैसे, बच्चों को फिर अनेक जन्मों के हिसाब-किताब एक जन्म में चुक्नु करने हैं। यह एक जन्म का अनेक जन्म चलता है। वह अनेक जन्मों का एक जन्म में खत्म होता है तो अनेक जन्मों का हिसाब-किताब एक जन्म में खत्म करने के कारण कभी-कभी वह फोर्स से रूप ले आता है। बापदादा यह युद्ध देखते रहते हैं, आप भी देखती हो अपनी वा दूसरों की। जब साक्षी हो देखने लग पड़ते तो यह व्याधि बदलकर खेल रूप में हो जाती है। बापदादा साक्षी हो देखते भी हैं और उनका साहस देखकर हर्षित भी होते हैं और

दादी निर्मलशान्ता जी के प्रति अव्यक्त बापदादा के महावाक्य

साथ-साथ सहयोगी भी बनते हैं। थकती तो नहीं हो ना! (नहीं) अथक बाप के बच्चे अथक और अविनाशी हो। मालूम है अब क्या करना है? अब अन्त में साक्षात्कार मूर्त बनना है। जितना साक्षी अवस्था ज़्यादा रहेगी उतना समझो कि साक्षात्कार मूर्त बनने वाले हैं। अब अन्तिम पुरुषार्थ यह रह गया है। साक्षात्कार मूर्त बन बापदादा का साक्षात्कार और अपना साक्षात्कार कराना है।

जैसे सर्विस के साधनों की स्थापना की है

वैसे पालना का रूप अभी विस्तार को पाना चाहिए

कलकत्ता में सर्विस का साधन तो स्थापन कर लिया है लेकिन जैसे सर्विस के साधन की स्थापना की है वैसे पालना का रूप अभी विस्तार को पाना चाहिए। कलकत्ते के म्युज़ियम द्वारा सभी आत्माओं को कैसे शान्ति का वरदान प्राप्त हो सके। क्योंकि कलकत्ता में अशान्ति ज़्यादा है ना! तो इतना आवाज़ फैलना चाहिए जो गवर्नमेन्ट तक यह आवाज़ जाये कि इस स्थान द्वारा शान्ति सहज प्राप्त हो सकती है। गवर्नमेन्ट द्वारा शान्ति-दल के रूप में ऑफर हो सकती है। जैसे जेल आदि में भाषण के लिए ऑफर करते हैं। क्योंकि पापात्माओं को पुण्यात्मा बनाने का साधन है, तब निमन्त्रण देते हैं। ऐसे ही कहाँ अशान्ति होगी तो यह शक्ति-दल, शान्ति-दल समझा जायेगा। ऐसी भी गवर्नमेन्ट द्वारा ऑफर होगी, तब तो आफरीन गायी जायेगी। ऐसा कुछ प्लान बनाओ जो आवाज़ फैले चारों ओर। अशान्ति के बीच यह शान्ति-दल सेफटी का साधन है – ऐसे तुम प्रसिद्ध हो जायेंगे। जैसे भट्टी के प्रोग्राम का गायन है। आग जलते हुए भी वह स्थान सेफटी का साधन रहा। चारों ओर आग होगी लेकिन यह एक ही स्थान शान्ति का है – ऐसा अनुभव करेंगे। इसी स्थान से ही हमको सेफटी वा शान्ति मिल सकती है – यह पालना का कर्तव्य बढ़ाओ। वह तब होगा जब कोई एक स्थान बनाओ जो विशेष (योग) अभ्यास का हो, जिसमें जाने से ही ऐसा अनुभव करें कि ना मालूम हम कहाँ आ गये हैं! स्थान भी अवस्था को बढ़ाता है। मधुबन का स्थान ही स्थिति को बढ़ाता है ना! तो ऐसा कोई स्थान बनाओ जो कोई कभी भी परेशान, दुःखी आत्मा हो, चिन्ता में डूबी हुई हो तो वह आने से ही महसूस करे कि



हम कहाँ आये हैं! ऐसा प्लान बनाओ।

लौकिक, अलौकिक बाप के कुल का नाम बाला करने वाली निमित्त आत्मा हो

ड्रामा आपको भी समीप पार्ट बजाने के निमित्त बनाता है। जैसे कल्प पहले बनाया था, वैसे अभी भी बनाते हैं। प्लान सोचने से नहीं होता है लेकिन न चाहते भी ड्रामा का पार्ट निमित्त बना देते हैं। इसमें भी बड़ा रहस्य है। वरदान है आपको। लौकिक, अलौकिक बाप के कुल का नाम बाला करने वाली निमित्त आत्मा हो। यह भी विशेष वरदान है। इसलिए आपको देखकर के दोनों याद आ जाते हैं। लौकिक भी फीचर्स (Features; शक्ल) याद आयेंगे और फीचर्स द्वारा जो फ्यूचर (Future; भविष्य) बनता है, वह भी याद आयेगा। आपके हर कदम में जो वरदान है – दोनों कुल का नाम बाला करना – वह समाया हुआ है। इसलिए ड्रामा स्वयं ही सीट की तरफ खींचता जा रहा है। समय प्रति समय जो भी महावाक्य आत्माओं के प्रति बापदादा के उच्चारण किये हुए हैं, वह प्रैक्टिकल में आ रहे हैं। विशेष

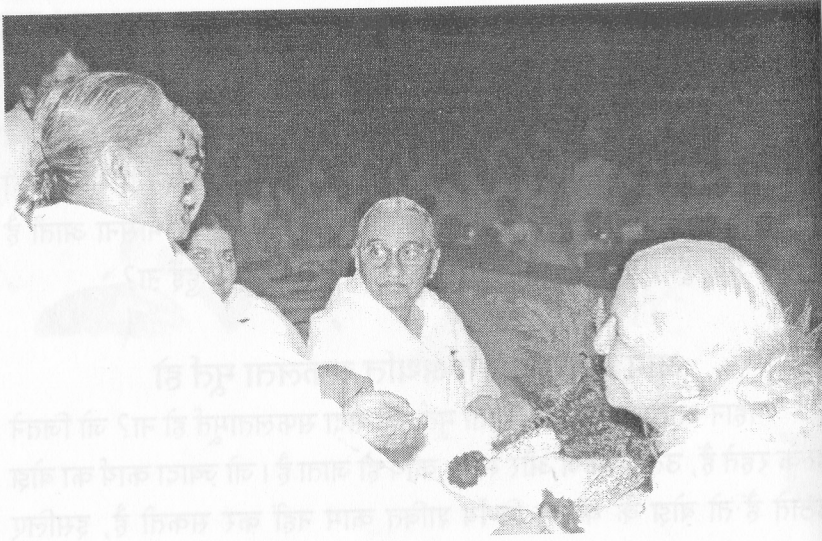
वरदान है और सर्विस का चान्स भी आपको विशेष है। डबल सर्विस करने का चान्स है आपको। सूरत द्वारा भी और सीरत द्वारा भी। इन लोगों की सूरत से अव्यक्त स्थिति होने से अनुभव करेंगे लेकिन आपकी सूरत चलते-फिरते ब्रह्मा बाप की सूरत और सीरत को प्रत्यक्ष करेगी। यह एकस्ट्रा सर्विस की फील्ड हुई ना! जहाँ भी जायेंगे तो क्या कहेंगे? सबको बाप की भासना आती है ना? तो यह सूरत भी सर्विस के निमित्त बनी है। डबल सर्विस हुई ना?

आप महान् आत्मा अर्थात् सफलता मूर्त हो

महान आत्मा अर्थात् सफलता मूर्त। तो सदा सफलतामूर्त हो ना? जो जितने हल्के रहते हैं, उतना सहज और स्वतः कार्य हो जाता है। जो ज़्यादा कार्य का बोझ उठाते हैं तो बोझ के कारण निर्णय शक्ति काम नहीं कर सकती है, इसलिए सफलता में फ़रक पड़ जाता है। कार्य करने के पहले सदा स्वयं डबल लाइट, वायुमण्डल भी लाइट, साथी भी सब लाइट। तो लाइट हाउस का कार्य हो ही जाता है।

आप बुलावें बाप न आवें – यह हो नहीं सकता

इस बारी मेले में शान्ति कुण्ड बनाना जिससे सब समझें कि यहाँ आवाज़ होते भी शान्ति है। वृत्ति और अनुभूति ही बदल जाये। (बापदादा कलकत्ते में आवें) जरूर, हाँ वह समय दिखायेगा क्योंकि बच्चे बुलावें बाप न आवें – यह हो नहीं सकता। लेकिन किस रीति से आयेंगे – यह देखना। कुछ नया होना चाहिए ना! अच्छा, जो बनायेंगे उसमें सफल हो जायेंगे, क्योंकि सच्ची दिल पर साहब राज़ी। यह मेला भी बाप के दर्शन करने का स्थान है। भक्त दर्शन करेंगे और बच्चे मिलन मनायेंगे। अच्छा है, यह भी एक साधन है स्व के लिए और अन्य आत्माओं के लिए। ब्राह्मण भी उमंग-उत्साह में आ जाते हैं और अन्य की भी सेवा हो जाती है। स्व की भी सेवा और औरों की भी सेवा। अच्छा।



जैसे बाप द्वारा बच्चों का साक्षात्कार होता है, वैसे बच्चों द्वारा बाप का होता है

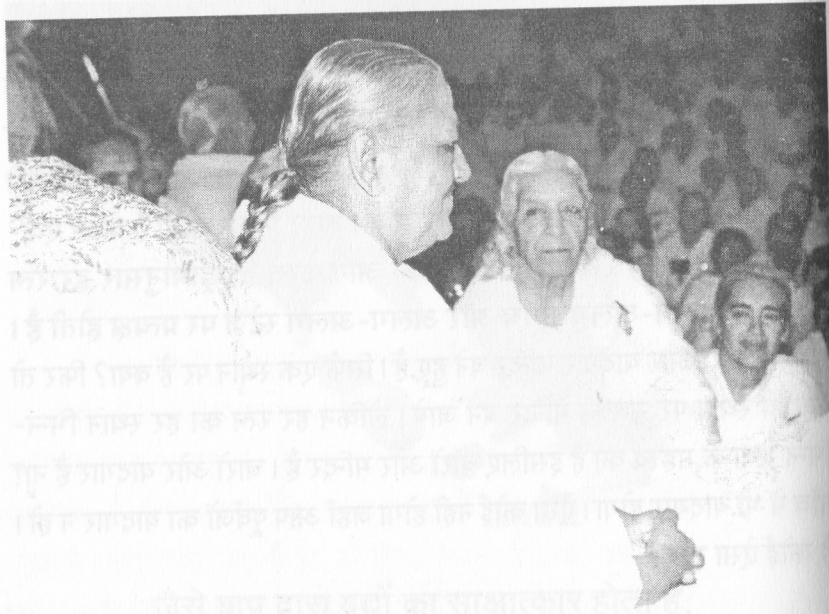
स्वयं को पूर्वज समझती हो? अभी विदेश में भी जो निमित्त दादी गयी है लेकिन किस लिए गयी है? सर्व धर्म की आत्मायें अपने पूर्वज की नज़र से देखेंगी। भासना आयेगी, वायब्रेशन आयेगी कि यह आत्मायें हमारे सम्बन्धी हैं। हमारे हैं, लेकिन कैसे हैं – वह जब सम्पर्क में आयेगे तो समझ सकेंगे। लेकिन वायब्रेशन ज़रूर आयेगा। हर स्थान पर ऊँची नज़र से ऊँच आत्माओं की भावना से वायब्रेशन द्वारा, दृष्टि द्वारा कुछ प्राप्त हो जाए, इस भावना से देखेंगे और देख भी रहे हैं। जैसे बादलों के बीच छिपा हुआ चाँद आकर्षित कर रहा है, ऐसे बहुत श्रेष्ठ वस्तु वा श्रेष्ठ व्यक्ति हैं – ऐसे अनुभव करेंगे। लेकिन नॉलेज न होने के कारण बादलों के बीच में अभी अनुभव करेंगे। बादलों के बीच थोड़ी किरणें थोड़ी शीतलता नज़र आयेगी और आकर्षण होंगे स्पष्ट पाने लिए। तो पूर्वजों की प्रत्यक्षता की सेवा-अर्थ निमित्त बन रहे हैं कोई साकार में, कोई आकार में। लेकिन सदा एक-दो के सहयोगी हैं – ऐसा है ना! आप सभी भी स्वयं को सहयोगी समझते हो ना? निमित्त तो एक ही बनता है लेकिन साक्षात्कार तो शक्ति-सेना का होगा कि एक का

होगा? जैसे बाप द्वारा बच्चों का साक्षात्कार होता है, बच्चों द्वारा बाप का होता है, वैसे ही निमित्त एक आत्मा द्वारा सर्व सहयोगी आत्माओं का भी साक्षात्कार होता है। अगर सब वहाँ चले जायें तो बाकी यहाँ देखने किसको आयेंगे? (जब) सुनेंगे (कि) और भी ऐसे हैं तो आकर्षण होगी। सब चीज़ एक बारी थोड़ी दिखायी जाती है। सौदागर भी होता है तो सब चीज़ एक ही बार बाहर निकाल देता है क्या? एक-एक बात का महत्त्व रखते हुए फिर उसको आगे करते हैं। **ड्रामानुसार हर रत्न की वैल्यू अलग-अलग समय और अलग-अलग स्टेज पर प्रत्यक्ष होती है।** इसलिए चारों ओर यादगार मन्दिर बने हुए हैं। सिर्फ एक स्थान पर हैं क्या? फिर तो एक ही स्थान पर सबका मन्दिर बन जाये। लेकिन हर रत्न का हर स्थान भिन्न-भिन्न सेवा के महत्त्व का है इसलिए चारों ओर मन्दिर हैं। चारों ओर यादगार हैं ना! गाँव में भी यादगार होगा। ऐसा कोई नहीं होगा जहाँ आप पूर्वजों का यादगार न हो। है कोई ऐसा गाँव?

सदा साथ रहने वाली,

साथ का वायदा निभाने वाली परदादी हो

सदा बाप के साथ रहने वाले तो हैं ही। जो आदि से बाप के संग-संग चल रहे हैं, उन्हीं का सदा साथ का कभी भी अनुभव कम हो नहीं सकता। बचपन का वायदा है, तो सदा साथ हैं और सदा साथ चलेंगे। तो सदा साथ का वायदा कहो या वरदान कहो, मिला हुआ है। फिर भी जैसे बाप प्रीत की रीत निभाने अव्यक्त से व्यक्त रूप में आते हैं वैसे बच्चे भी प्रीत की रीत निभाने के लिए पहुँच जाते हैं। ऐसे है ना! संकल्प में तो क्या लेकिन स्वप्न में भी, जिसको सबकॉन्शियस कहते हैं... उस स्थिति में भी बाप का साथ कभी छूट नहीं सकता। इतना पक्का सम्बन्ध जुटा हुआ है। कितने जन्मों का सम्बन्ध है? (पूरे कल्प का है)। **सम्बन्ध इस जन्म के हिसाब से पूरा कल्प ही रहेगा। यह तो अन्तिम जन्म में कोई-कोई बच्चे सेवा के लिए कहाँ-कहाँ बिखर गये हैं।** जैसे यह लोग विदेश में पहुँच गये, आप लोग सिन्ध में पहुँच गये। कोई कहाँ पहुँचे, कोई कहाँ पहुँचे। अगर यह विदेश में नहीं पहुँचते तो इतने सेन्टर कैसे खुलते! अच्छा, सदा साथ रहने वाली,



साथ का वायदा निभाने वाली परदादी हो! बापदादा बच्चों के सेवा का उमंग-उत्साह देख खुश होते हैं। वरदानी आत्मायें बनी हो। अभी से देखो भीड़ लगाने शुरू हो गयी है। जब और वृद्धि होगी तो कितनी भीड़ होगी! यह वरदानी रूप की विशेषता की नींव पड़ रही है। जब भीड़ हो जायेगी फिर क्या करेंगे? वरदान देंगे, दृष्टि देंगे। यहाँ से ही चैतन्य मूर्तियाँ प्रसिद्ध होंगी। जैसे शुरू में आप लोगों को सब देवियाँ-देवियाँ कहते थे, अन्त में भी पहचान कर देवियाँ-देवियाँ कहेंगे। 'जय देवी, जय देवी' यहाँ से ही शुरू हो जायेगा। अच्छा।

आप स्थापना के कार्य के आधारमूर्त हो

अपना यादगार सदा ही मधुबन में देखती रहती हो? यादगार होते हैं याद करने के लिए। लेकिन आपकी याद, यादगार बना देती है। चलते-फिरते सारे परिवार को निमित्त बने हुए आधारमूर्त याद आते रहते हैं। तो आधारमूर्त हो। स्थापना के कार्य के आधारमूर्त मज़बूत होने के कारण यह वृद्धि की,

उन्नति की, बिल्डिंग कितनी मज़बूत हो रही है! कारण? आधार मज़बूत है। अच्छा।

आप सम्पत्ति की देवी बन, सम्पत्ति देती ही रहती हो

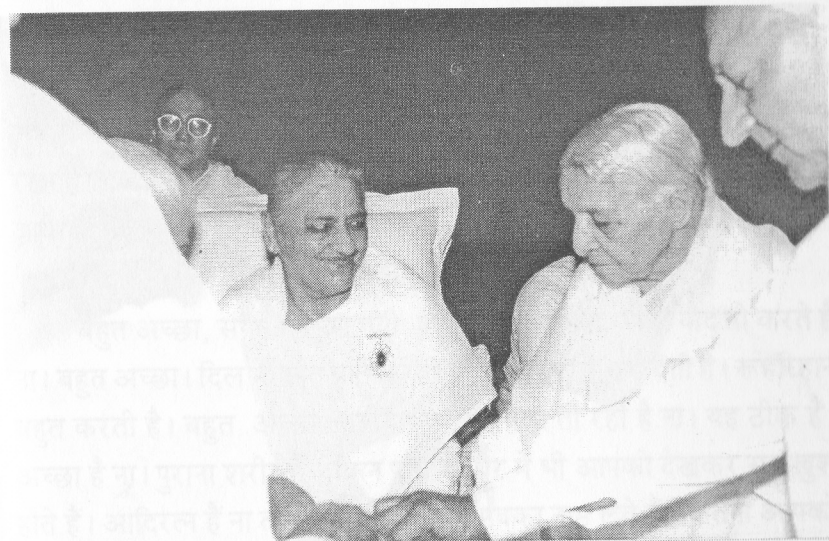
महारथियों के हर क़दम में सेवा है। चाहे बोलें, चाहे नहीं बोलें लेकिन हर कर्म, हर चलन में सेवा है। सेवा बिना एक सेकण्ड भी रह नहीं सकते। चाहे मनसा सेवा में हों, चाहे वाचा सेवा में, चाहे सम्बन्ध-सम्पर्क से लेकिन निरन्तर योगी भी हैं तो निरन्तर सेवाधारी भी हैं। अच्छा है, जो मधुबन में खज़ाना जमा किया वह सभी को बाँटके खिलाने लिए जा रही हो। महारथियों का स्थान पर रहना भी अनेक आत्माओं का स्थूल सहारा हो जाता है। जैसे बाप छत्रछाया है, ऐसे बाप समान बच्चे भी छत्रछाया बन जाते हैं। सभी देख करके कितने खुश होते हैं! तो यह वरदान है सभी महारथियों को। आँखों का वरदान, मस्तक का वरदान, कितने वरदान हैं! हर कर्म करने वाली निमित्त कर्मेन्द्रियों को वरदान है। नयनों से देखते हो तो क्या समझते हैं? सभी समझते हैं ना कि बाप की नज़र का इन आत्माओं की नज़र से अनुभव होता है। तो नयनों को वरदान हो गया ना! मुख को वरदान है, इस



चेहरे को वरदान है, क़दम-क़दम को वरदान है। कितने वरदान हैं, क्या गिनती करेंगे! औरों को तो वरदान देते हैं लेकिन आपको पहले से ही वरदान मिले हुए हैं। जो भी क़दम उठाओ, वरदानों से झोली भरी हुई है। जैसे लक्ष्मी को दिखाते हैं ना उसके हाथ से धन सभी को मिलता ही रहता है। थोड़े समय के लिए नहीं, सदा सम्पत्ति की देवी बन सम्पत्ति देती ही रहती है। तो यह किसका चित्र है?

यह बीमारी भी आप लोगों की सेवा करती है

आप लोगों के साथ सभी की दुआयें और दवाई है ही। इसलिए बड़ी बीमारी भी छोटी हो जाती है। सिर्फ रूपरेखा दिखाती है, लेकिन अपना दाँव नहीं लगा सकती है। यह सूली से कांटे का रूप दिखाती है। बाकी तो बाप का हाथ और साथ सदा है ही। हर क़दम में, हर बोल में बाप की दुआ-दवा मिलती रहती है। इसलिये बेफ़िकर रहो। (इससे फ़्री कब होंगे?) ऐसे फ़्री हो जाओ तो फिर

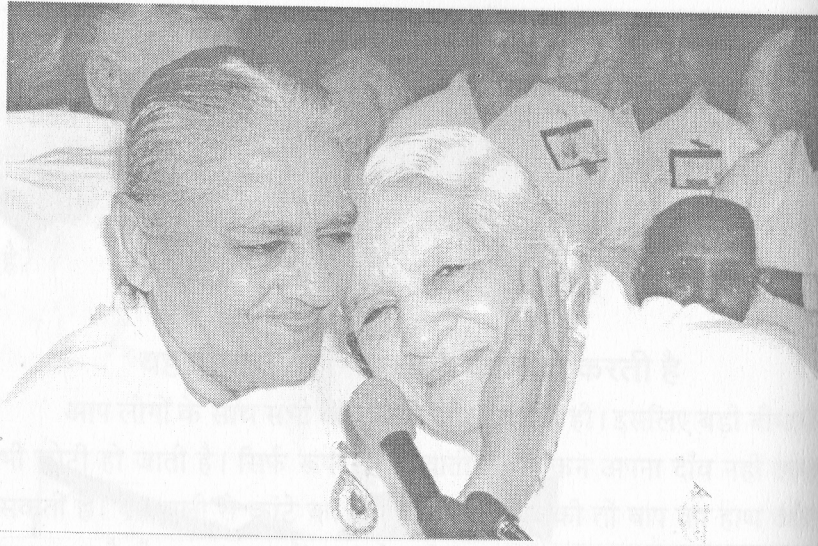


सूक्ष्मवतन में पहुँच जाओ। इससे औरों को भी बल मिलता है। यह बीमारी भी आप लोगों की सेवा करती है। तो बीमारी, बीमारी नहीं है, सेवा का साधन है। नहीं तो और सब समझेंगे कि इन्हें को तो मदद है, इन्हें को अनुभव थोड़े ही है? लेकिन अनुभवी बनाये औरों को हिम्मत दिलाने की सेवा के लिए थोड़ा-सा रूपरेखा दिखाती है। नहीं तो सभी दिलशिकस्त हो जायें। आप सभी में एज़ज़ाम्ल रूप से थोड़ी रूपरेखा देखते, बाकी चुक्त्तू हो गया है, सिर्फ रूपरेखा मात्र रहा हुआ है। अच्छा!

आपको क्या वरदान दें ?

वरदानों से ही सजे हुए चल रहे हो

कितने वरदान हैं! बाप तो कहते हैं – कोई वरदान रहा ही नहीं। तो फिर क्या दें? वरदानों से ही सजे हुए चल रहे हो। जैसे कहते हैं ना हाथ घुमाया तो वरदान मिल गया। तो बाप ने तो 'समान भव' का वरदान दिया, इससे सब वरदान मिल गये। जब बाप अव्यक्त हुए तो सभी को 'समान भव' का वरदान दिया ना! सिर्फ सामने वालों को नहीं, सभी को दिया। सूक्ष्म रूप में सब महावीर



बाप के सामने रहे और वरदान मिला।

**अभी जितना नज़दीक से आप मिलते हो,
उतना कौन मिलता है!**

अभी भी जितना नज़दीक से आप मिलते हो, उतना कौन मिलता है! अच्छा पार्ट बजा रही हो। प्रकृति को चलाने का ढंग अच्छा है। (बाबा चलाता है) और आप चल रही हो। चलाने वाला चला रहा है। सभी अच्छे चल रहे हैं। शरीर को अच्छा चलाने का ढंग आ गया है। अच्छा है, जो हो रहा है, अच्छा है।

आप सिर्फ़ बैठ जाना कुर्सी पर, सब आपे ही तैयारी कर लेंगे

(गुजरात ने किया, बाम्बे ने एक-एक लाख का प्रोग्राम किया, अभी पंजाब और मद्रास कर रहा है।) यह कलकत्ता भी करेगा। आप सिर्फ़ बैठ जाना कुर्सी पर, बस और कुछ नहीं करना, आपके सहयोगी सब बनेंगे। सब आपे ही तैयारी कर लेंगे। (बाबा को बिठा देंगे)। बाबा के साथ आप भी बैठना। दोनों बैठना।

ब्रह्मा बाप का सैम्पल है

(परदादी की याद दी) अच्छा, कलकत्ता तक तैयार हो जायेगी। अच्छा है एक सैम्पल तो है ना। ब्रह्मा बाबा का सैम्पल है। तो नाम भी देखो आप सबने परदादी रखा है। दादी भी नहीं परदादी। विशेष है ना। अच्छा। तबीयत ठीक हो रही है, हो जायेगी।

आपको देखकर सब खुश होते हैं

बहुत अच्छा, संगठन में आ गयी, बहुत अच्छा किया। सभी याद तो करते हैं ना। बहुत अच्छा। दिल में बहुत बातें करती हैं। सब दिल से कह देती है। रूहरिहान बहुत करती है। बहुत अच्छा। तबीयत को भी चला तो रही है ना। यह ठीक है। अच्छा है ना। पुराना शरीर है लेकिन पुराने शरीर में भी आपको देखकर सब खुश होते हैं। आदिरत्न हैं ना तो सब खुश होते हैं। सबका नाम लेते हैं, कितना आपको याद करते हैं। अच्छा है।



दीदी जी (दादी निर्मलशान्ता) में मैंने क्या देखा?

दीदी वेस्ट को भी बेस्ट करने वाली हैं

दीदी अगर शिक्षा भी देती थी तो भी युक्तियुक्त और सहज भाव से देती थी। जैसे कोई अमृतवेले उठने में सुस्ती करते तो उस व्यक्ति को अमृतवेले टेप बजाने की ड्यूटी दे देती जिससे उसका सहज ही पुरुषार्थ हो जाता। यदि कोई किसी की शिकायत उनके पास करने आता तो कहती कि टूटा बर्तन भी काम में आता है। यदि कोई भाई वा बहन दीदी के सामने झूठ बोलते थे तो भी दीदी उन्हें बहुत प्यार से समझाती और व्यवहार करती थी। मैंने एक दिन पूछा, आपको तो मालूम है फिर भी आपने उसे क्यों नहीं कहा? तो दीदी ने कहा, अपनी बात सिद्ध करने के लिए वह और ही ज़्यादा झूठ बोलेगा जिससे और ही उसके विकर्म बन जाते।

दीदी की शिक्षायें आज भी हमें प्रेरणा देती रहती हैं। सदा हाँ जी करना, ना करना माना नास्तिक बनना, निन्दा हमारी जो करे मित्र हमारा सो आदि।

— ब्रह्माकुमारी कानन बहन, कोलकाता।

दीदी के चेहरे पर कितना तेज है!

दीदी के वरदानों बोल ने मुझे बन्धनमुक्त कर दिया। प्यारी दीदी ने बोला, अब तुम्हारा पार्ट खुलेगा, बन्धन कटेंगे। एक दिन दीदी ने कहा, अपने भाई को मेरे सामने लाओ। मेरा भाई कभी आश्रम पर नहीं आता था। मैंने दीदी के बारे में, उनकी महानता के बारे में सुनाया तो उसके दिल में दीदी के प्रति श्रद्धा भावना आ गयी। वह दीदी के पास चलने के लिए तैयार हो गया। दीदी को देखते ही वह चकित हो गया और मुझे चुपके से कहने

दीदी जी (दादी निर्मलशान्ता) में मैंने क्या देखा?

लगा, देखो तुम्हारी दीदी के चेहरे पर कितना तेज है! मुझे तो यह देवी नज़र आ रही है। उसको दीदी से अनोखी लाइट और शक्ति का अनुभव हो रहा था। उसी अनुभव में दीदी के सामने बैठा। प्यारी दीदी के मधुर बोल ने भी उसे बहुत प्रभावित किया। दीदी ने कहा कि अब इसे कब तक घर में बिठाओगे? बाबा की सेवा में जाने दो। आप जब इसे बाबा की सेवा में भेजोगे तब आपका भी बहुत बड़ा भाग्य बनेगा। उस समय मुजफ्फरपुर में प्रदर्शनी होने वाली थी। उसमें जाने के लिए छुट्टी देने को दीदी ने भाई से कहा कि आप बहुत अच्छे हो, आप भी तो शिव बाबा के बच्चे हो। यह शब्द सुनते ही मेरा भाई पानी-पानी हो गया और छुट्टी दे दी। यह था मीठी दीदी के बोल का चमत्कार। जो भाई एक दिन के लिए भी मुझे नहीं छोड़ता था, वही 15 दिन की छुट्टी देने के लिए झट तैयार हो गया। यह था मेरे को बन्धनमुक्त कराने में दीदी का साथ व सहयोग।

— ब्रह्माकुमारी कमलेश बहन, कटक (उड़ीसा)

दीदी जी का जीवन त्याग, तपस्या और सेवा का प्रतिरूप है

दीदी जी को हमने सदा त्याग और तपस्या से सम्पन्न कर्मयोगी जीवन में देखा। यज्ञ सेवा में कर्मठ सेवा करते, अथक परिश्रम करते भी निरन्तर बाबा की याद में मस्त रहती। यज्ञ की कोई भी सेवा चाहे छोटी हो या बड़ी लेकिन उनके चेहरे पर कभी थकावट नहीं देखी, सदा प्रसन्नचित्त देखा। इतनी बड़ी आयु में भी खुशी-खुशी से बाबा के कार्य करते देखकर हमें भी प्रेरणा मिलती रही। दीदी जी में हमने सदा कर्म और योग का सन्तुलन देखा। हम सबको कहकर नहीं लेकिन हर कर्म करके सिखाया। जब भी मैं दीदी से मिलती हूँ तब सदा अनुभव करती हूँ कि सचमुच दीदी महान है। उनकी तपस्या और अचल-अडोल स्थिति ने मेरे अन्दर में भी यज्ञ सेवा प्रति श्रद्धा और याद का बल भर दिया। सच में, दीदी जी का जीवन त्याग, तपस्या और

सेवा का प्रतिरूप है। बाबा का साक्षात् स्वरूप है। ऐसी महान तपस्वी आत्मा के अंग-संग रहकर एक आदर्श जीवन बनाने का और आगे बढ़ते हुए ईश्वरीय सेवा करने का जो सुअवसर मुझे मिला है, उसको मैं कभी भूल नहीं सकती।
—ब्रह्माकुमारी शीला बहन, गुवाहाटी (आसाम)

दीदी जी जितनी गंभीर उतनी ही रमणीक भी हैं

मुझे ऐसी महान विभूति की सेवा करने की बचपन से बहुत इच्छा थी। ऐसी सेवा करने का अवसर मुझे कोलकाता में कुछ महीनों के लिए प्राप्त हुआ। ऐसे तो मीठी दीदी जी को पर्सनल (व्यक्तिगत) सेवा लेने के संस्कार नहीं थे परन्तु मैं अपनी रुचि से दीदी जी की सेवा करती रहती थी। एक दिन मैं दीदी जी के कमरे में कुछ सेवा कर रही थी और दीदी जी बिस्तर पर लेटी हुई थी, अचानक मैंने देखा कि बिस्तर पर दीदी है ही नहीं। लेकिन बाबा का स्वरूप और उसी में कृष्ण के स्वरूप का अनुभव मुझे हो रहा था। यह अनुभव कई दिनों तक होने के बाद मैंने दीदी से पूछा कि आपके स्वरूप में मुझे ऐसा अनुभव क्यों हो रहा है? तब दीदी ने उत्तर दिया कि हो सकता है तुम सतयुग में दैवी घराने में मेरे नज़दीक वाली आत्मा होंगी। दीदी जी जितनी गंभीर उतनी ही रमणीक भी हैं। प्यारी दीदी जी को गीत सुनने का बहुत शौक है, तो सोते समय वे मुझे कहा करती थीं कि हे शिव की पार्वती, तुम एक गीत सुनाओ। तो मैं सुनाती थी। यह गीत दीदी को बहुत अच्छा लगता था :

“बाबा माँ की गोदी में आ छिपके हम सो जायें।
माया की भूल नगरिया, सुख सपनों में सो जायें ॥”

दीदी के किन-किन गुणों का वर्णन करूँ! उनके वरदानों बोल, बाप समान शक्तिशाली और लवलीन स्थिति को कभी भुलाया नहीं जाता। जी चाहता है कि ऐसी परमात्म-मणि का सान्निध्य हमेशा ही प्राप्त होता रहे।

दीदी की निर्मल, कोमल वाणी और शान्त, शीतल, आकर्षणमय चेहरा उनके नाम को सार्थक करता है। उनके साथ बिताये थोड़े-से अनमोल लम्हें मेरे जीवन को नयी दिशा दे प्रेरणा के स्रोत बन गये हैं।

—ब्रह्माकुमारी पार्वती बहन, सम्बलपुर (उड़ीसा)

दीदी नाउम्मीद आत्मा में भी बल भर देती है

दीदी नाउम्मीद आत्मा में भी बल भर देती है। मेरा यह व्यक्तिगत अनुभव है। मुरली सुनाने की बात तो दूर मुझे शुरू से ही किसी से बात करने में भी बड़ा संकोच होता था। एक दिन दीदी ने मुझे बुलाकर कहा कि तुमको तीन दिन क्लास में मुरली सुनानी है। मैं दीदी को ना नहीं कह सकी और हाँ जी कह दिया। दीदी की आज्ञा मानी। क्लास में अच्छी तरह मुरली न पढ़ सकने पर भी मैंने तीन दिन मुरली सुनायी। दीदी के वरदानों बोल ने इस आत्मा में शक्ति भर दी। उसी वरदान के साथ मैंने हिम्मत का एक क़दम बढ़ाया तो बाबा ने हमें हजार क़दम आगे बढ़ा दिया। दीदी ने सब कुछ करके सिखाया। स्थूल और सूक्ष्म सेवा सब कुछ सिखाकर आलराउण्ड पार्ट बजाना सिखाया।

—ब्रह्माकुमारी सत्यवती बहन, तिनसुकिया (आसाम)

दीदी ने एक-एक दाने को सफल करना सिखाया

दीदी के अंग-संग रहते मुझे 40 साल होने को आये हैं। दीदी जी के साथ रहने का वरदान भी प्यारे साकार बाबा और अव्यक्त बाबा ने मुझे दिया। बाबा ने कहा था कि यह बच्ची बाबा का बना-बनाया फूल है। इसको दीदी और दादी के साथ छोड़ दो। उन्हीं वरदानों से चल रही हूँ।

सबसे बड़ी जो बात अभी तक दीदी में चलती आ रही है वह है—एकानामी की, जो कभी भी नहीं भूलती। चावल का एक दाना भी टोपिये में

पड़ा दिखायी देता था तो उसे भी वेस्ट नहीं होने देती थी। एक-एक दाने को सफल करना सिखाया। लाइट, पंखे भी ज़रा भी खाली चलते हैं तो झट बन्द करा देती। सचमुच में लगता है कि बाबा ने इनके अन्दर कूट-कूट कर एकाँनामी का संस्कार भर दिया है।

एक बार की बात याद आती है कि मैं लौकिक घर से रबड़ (चोटी में लगाने के लिए) लायी थी। कुछ चोटी में लगाने के लिए अलग रखकर बाकी टोली के डिब्बे में रखती थी। यदि कोई रबड़ ज़मीन पर पड़ा दिखायी देता था तो दीदी जी हमें कहतीं, यह रबड़ उठाओ। कई बार मैं उठा लेती थी, कई बार नहीं भी उठाती थी। एक बार दीदी ने कहा कि यह तुम नहीं उठाओगी तो तुम्हारा एक लाख का भाग्य कम हो जायेगा। यह सुनकर मुझे चिन्ता हो गयी कि आश्रम में जितने रबड़ गिरे हुए दिखायी देंगे उनसे एक तो मेरा नाम लगेगा, दूसरा मेरा भाग्य कम हो जायेगा। ऐसा सोचकर मैंने रबड़ लगाना ही बन्द कर दिया।

—ब्रह्माकुमारी रुकमणी बहन, कोलकाता।

दीदी तो साक्षात् देवी है

स्वर्ग के स्वर्णिम परिवार में नहीं, अपनी दीदी जैसी संसार में नहीं।

ओ बाबा सच आप हो वण्डर, रचना रची जो इतनी सुन्दर।

तुम हो प्यार-दुलार का समुन्दर, रचता दिखे रचना, अपनी दीदी के अन्दर।

एक बार एक प्रसिद्ध डॉक्टर सेवाकेन्द्र पर आये थे। उन्हें म्युजियम दिखाकर, दीदी से मिलाना था। जब उनको चित्र समझाना शुरू किया, तो वे वाद-विवाद करते रहे। बड़ी मुश्किल से उन्हें म्युजियम दिखाकर दीदी के पास ले गयी। कमरे में दीदी जी (दादी निर्मलशान्ता जी) उनको देख प्यार से मुस्करा रही थी। डॉक्टर ने जब दीदी को देखा तो उनके मुँह से शब्द निकले, “बहन, आपने नीचे जो भी ज्ञान मुझे समझाया वह शत-प्रतिशत सही

है।” दीदी के तरफ़ ईशारा करते हुए उन्होंने कहा, “जिस ज्ञान से ऐसी मूर्ति तैयार हुई है वो ज्ञान कभी ग़लत नहीं हो सकता। आपकी दीदी तो साक्षात् देवी है।”

—ब्रह्माकुमारी अस्मिता बहन, कोलकाता।

दीदी बाबा का साक्षात् स्वरूप है

हीरे-सी चमकती आँखों वाली, मुस्कराती सूरत वाली दीदी निर्मलशान्ता जी निश्चित ही ऊँचे से ऊँचे जौहरी का चुना हुआ हीरा है। अपने सम्पूर्ण व्यक्तित्व से बाबा का स्पष्ट दर्शन कराने वाली इस अनमोल हस्ती के साथ बिताया हर दिन हमारे लिए प्रायोगिक शिक्षा (Practical education) है। सार्थकता, सत्यता और मधुरता से भरा हुआ उनका हर बोल उनकी श्रेष्ठ पालना का सबूत है। वो तो प्रेम की मूरत है। ऊँच-नीच का भेद, ग़रीब-अमीर का भाव तो उनसे कोसों मील दूर है।

किसी भी विषय पर चाहे किसी की पारिवारिक समस्या हो, बिजनेस में विघ्न हो, आपसी सम्बन्धों में तनाव हो या व्यक्तिगत सुधार का सवाल हो, पूछते ही दीदी उसकी स्पष्ट तथा न्यायसंगत राय देती हैं अथवा ऐसा ज्ञानयुक्त, युक्तियुक्त मार्गदर्शन देती हैं जिसे सुनकर पता चलता है कि दीदी की बुद्धि की लाइन बाबा से कितनी स्पष्ट जुटी हुई है।

बीमारी में भी वे सदा हँसमुख रहती हैं। अपनी श्वास की तकलीफ़ को चिड़िया का गाना कहना— यह कोई साधारण बात नहीं। हर नेगेटिव को पोज़ीटिव में बदलने की सुन्दर कला में दीदी निपुण हैं। कभी भी उन्होंने कोई सेवा के लिए ‘ना’ नहीं कहा। हम कहते, दीदी फलानी सेवा के लिए आपको चलना है तो वे तुरन्त तैयार होकर खड़ी हो जाती हैं। सेवा के प्रति उनका प्यार नस-नस में समाया हुआ है। दीदी तो ज्ञान-योग-दिव्य गुणों की साक्षात् देवी हैं। उनके बारे में और क्या कहें, बस यही कह सकते हैं कि दीदी बाबा

का साक्षात् स्वरूप है।

— ब्रह्माकुमारी मधु बहन, कोलकाता।

दीदी सभी दैवी गुणों की प्रतिमूर्ति हैं

दीदी निर्मलशान्ता जी सभी दैवी गुणों की प्रतिमूर्ति हैं। विशेष रूप से शान्ति, निर्माणता, सहनशीलता, अन्तर्मुखता, निर्भयता की खान हैं। यथा नाम तथा गुण और कर्तव्य हैं। बाबा जैसे रखे उसी में हमेशा हर्षित रहती हैं। कभी कोई गिला-शिकवा नहीं। एक बाप में ही तीनों का अनुभव किया। सभी आत्माओं को चुम्बक की तरह आकर्षित कर एक बाप का बनाने की कला है दीदी जी में। दीदी स्नेहमयी माँ का रूप है।

दीदी के सान्निध्य में रहने से सम्पूर्ण निश्चय-बुद्धि बनने का रास्ता बहुत ही सहज मिल जाता है। उनके मुखकमल से साकार बाबा की जीवनी सुनकर, यज्ञ का इतिहास सुनकर हमें भी हिम्मत, उमंग, उल्लास, त्याग, वैराग्य और साधना के प्रति लगन को बनाये रखने में मदद मिली। उनकी प्रैक्टिकल जीवन तो हम सबको प्रभावित करती रही है, साथ-साथ उन जैसा आदर्श जीवन बनाने की प्रेरणा भी मिलती रही है।

मुझ आत्मा को चालीस साल उनके साथ रहने का, उनकी पालना पाने का, उनके साथ ईश्वरीय सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। उनके साथ रहकर मैंने निःस्वार्थ स्नेह पाया, शुभ-भावना से दूसरों को आगे बढ़ाने की प्रेरणा पायी, ईश्वरीय जीवन में जीने का उमंग-उत्साह पाया। ऐसे व्यक्तित्व के साथ रहकर मैं भी अपने आपको गौरवान्वित व धन्य अनुभव करता हूँ। समझता हूँ कि ईस्टर्न ज़ोन भी अपने आप में भाग्यशाली है जिसको दीदी जैसी महारथी आत्मा निमित्त रूप में मिली हैं।

— ब्र.कु. मदन लाल शर्मा, कोलकाता।

